पंद्रह रुपए

वर्ष : 2 अंक : 23
बृहस्पतिवार, 28 जुलाई, 2022

RNI-UPHIN/2021/79954

खुले दिमाग़ के खुले विचार

ओपन डोर

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार–पत्र

आजादी का 75 अमृत महोत्सव

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू बनीं महामहिम

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन

ओपन डोर

नजीबाबाद

ई-पुस्तक का ज़माना है
तो आप क्यों पीछे रहें
हमसे संपर्क करें और
अपनी पुस्तक स्वयं प्रकाशित करें

सहयोग के लिए संपर्क करें

9897742814

पंद्रह रुपए
RNI-UPHIN/2021/79954
खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र
वर्ष : २ अंक : २३ बृहस्पतिवार, २८ जुलाई,२०२२

संपादक
अमन कुमार 'त्यागी'
9897742814
amankumarnbd@gmail.com

प्रबंध संपादक
सौरभ भारद्वाज

प्रतिनिधि
डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' (हरिद्वार)
उपेन्द्र सिंह (दिल्ली)
अर्चना राज चौबे (नागपुर)
निधि मिथिल (सतारा)
अतुल शर्मा (मेरठ)

कार्यालय प्रमुख
तन्मय त्यागी

सदस्यता प्राप्त करें

एक साल १००० रुपए, दो साल १६०० रुपए
पांच साल ४८०० रुपए
अंक प्रकाशित न होने की दशा में पीडीएफ मिलेगी

भुगतान करें
Ac- Name - OPEN DOOR, Bank- INDIAN OVERSEAS BANK,Branch-NAJIBABAD,AC- 368602000000245, IFSC-IOBA0003686 PAN-AABAO7251R

संपादकीय कार्यालय- साई एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद- २४६७६३ बिजनौर (उप्र)

वैधानिक- समाचार-पत्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी लेख/समाचार/कविता/कहानी/विज्ञापन आदि के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र नजीबाबाद होगा।

सभी पद अवैतनिक हैं

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमन कुमार द्वारा आशीष प्रिंटर्स, मोहल्ला मकबरा, नजीबाबाद, बिजनौर से मुद्रित तथा ए-7, आदर्श नगर (तातारपुर लालू), नजीबाबाद-246763 जिला बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक-अमन कुमार
मोबाईल नं. 9897742814
Email-opendoornbd@gmail.com
RNI-UPHIN/2021/79954

MSME-UDYAM-UP-17-0002703

संपादकीय

द्रौपदी मुर्मू बनीं भारत की १५वीं राष्ट्रपति

तमाम राजनीतिक उठापटक के बावजूद द्रौपदी मुर्मू भारत की १५वीं राष्ट्रपति घोषित कर दी गई हैं। उन्होंने पद की शपथ भी ले ली है। इस प्रकार अब वह भारत गणराज्य की प्रथम नागरिक बन गई हैं। कौन हैं द्रोपदी मुर्मू चलिए जानने का प्रयास करते हैं। इंटरनेट, अखबारों और सोशल मीडिया पर जितने भी प्रचार अथवा दुष्प्रचार हों द्रोपदी मुर्मू अब हम सभी भारतीयों के लिए महामहिम हैं, उनका सम्मान करना हमारा नैतिक और संविधानिक कर्तव्य है। विकिपीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार- द्रौपदी मुर्मू भारत की १५वीं और वर्तमान राष्ट्रपति के रूप में सेवारत एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं। वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सदस्य हैं। वह भारत के राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने वाले जनजातीय समुदाय से संबंधित पहली व्यक्ति हैं। मुर्मू, प्रतिभा पाटिल के बाद भारत की राष्ट्रपति के रूप में सेवा करने वाली दूसरी महिला हैं। वह इस पद को संभालने वाली ओडिशा की पहली व्यक्ति हैं और देश की सबसे कम उम्र की राष्ट्रपति हैं। मुर्मू भारत की आजादी के बाद पैदा होने वाली पहली राष्ट्रपति हैं। राष्ट्रपति बनने से पहले उन्होंने २००० से २००४ के बीच ओडिशा सरकार के मंत्रिमंडल में विभिन्न विभागों में सेवा दी तथा २०१५ से २०२१ तक झारखंड के नौवें राज्यपाल के रूप में कार्यभार संभाला। द्रौपदी मुर्मू का जन्म २० जून १९५८ को ओड़िशा के मयूरभंज जिले के बैदापोसी गांव में एक संथाल परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम बिरंचि नारायण टुडु था। उनके दादा और उनके पिता दोनों ही उनके गाँव के प्रधान रहे। उन्होंने श्याम चरण मुर्मू से विवाह किया। उनके दो बेटे और एक बेटी हुए। दुर्भाग्यवश दोनों बेटों और उनके पति तीनों की अलग-अलग समय पर अकाल मृत्यु हो गयी। उनकी पुत्री विवाहिता हैं और भुवनेश्वर में रहतीं हैं। द्रौपदी मुर्मू ने एक अध्यापिका के रूप में अपना व्यावसायिक जीवन आरम्भ किया। उसके बाद धीरे-धीरे राजनीति में आ गयीं। द्रौपदी मुर्मू ने साल १९९७ में राइरंगपुर नगर पंचायत के पार्षद चुनाव में जीत दर्ज कर अपने राजनीतिक जीवन का आरंभ किया था। उन्होंने भाजपा के अनुसूचित जनजाति मोर्चा के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया है। साथ ही वह भाजपा की आदिवासी मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य भी रहीं है। द्रौपदी मुर्मू ओडिशा के मयूरभंज जिले की रायरंगपुर सीट से २००० और २००९ में भाजपा के टिकट पर दो बार जीती और विधायक बनीं। ओडिशा में नवीन पटनायक के बीजू जनता दल और भाजपा गठबंधन की सरकार में द्रौपदी मुर्मू को २००० और २००४ के बीच वाणिज्य, परिवहन और बाद में मत्स्य और पशु संसाधन विभाग में मंत्री बनाया गया था। द्रौपदी मुर्मू मई २०१५ में झारखंड की ९वीं राज्यपाल बनाई गई थीं। उन्होंने सैयद अहमद की जगह ली थी। झारखंड उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश वीरेंद्र सिंह ने द्रौपदी मुर्मू को राज्यपाल पद की शपथ दिलाई थी। झारखंड की पहली महिला राज्यपाल बनने का खिताब भी द्रौपदी मुर्मू के नाम रहा। साथ ही वह किसी भी भारतीय राज्य की राज्यपाल बनने वाली पहली आदिवासी भी हैं। द्रौपदी मुर्मू ने २४ जून २०२२ में अपना नामांकन किया, उनके नामांकन में पीएम मोदी प्रस्तावक और राजनाथ सिंह अनुमोदक बने।

द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति बनाकर भारत ने दुनिया को दिखा दिया है कि हम न तो लिंगभेद रखते हैं और न ही जातिभेद। भारत का प्रत्येक नागरिक सम्मान का पात्र है। वह किसी भी पद पर आसीन हो सकता है।

अंदर के पन्नों पर

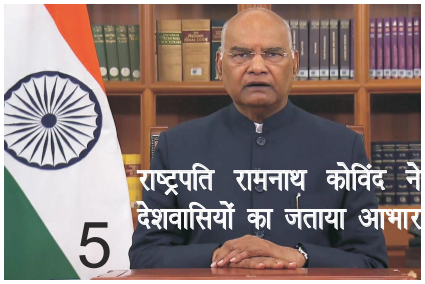

बिजनौर में है नाग प्रजाति का विनाश रोकने वाले आस्तिक ऋषि का मठ

भारतीय लोकतंत्र के सामर्थ्य की विजय

प्रो. ऋषभ देव शर्मा

माननीय द्रौपदी मुर्मू अब भारत के राष्ट्रपति पद को सुशोभित करेंगी। राष्ट्रपति के रूप में उनका चुना जाना भारतीय लोकतंत्र के सामर्थ्य का प्रतीक है। वे आगामी २५ जुलाई को राष्ट्रपति के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ लेंगी। इस सर्वोच्च संवैधानिक पद पर उनका आसीन होना यह संदेश देता है कि भारत सचमुच अपार लोकतांत्रिक संभावनाओं वाला देश है, जहाँ अपनी योग्यता, प्रतिभा और जन सेवा के बल पर एक 'आदिवासी' 'महिला' को राष्ट्र के प्रथम नागरिक का गौरव प्राप्त हो सकता है। इस सामर्थ्य के लिए भारत के लोकतंत्र और उस लोकतंत्र की रूपरेखा बनाने वाले हमारे संविधान को बार बार नमन किया जाना चाहिए।

इसमें संदेह नहीं कि देश की आजादी के अमृत महोत्सव के इस वर्ष में 'पूर्वी भारत के एक सुदूर इलाके में पैदा हुईं आदिवासी समुदाय की बेटी' का राष्ट्रपति चुना जाना लोकतंत्र के लिहाज से अभूतपूर्व उपलब्धि है। यह बात बाद की है कि इससे पूर्वी इलाके या आदिवासी समुदायों के विकास को कितना बल मिलेगा, लेकिन यह तय है कि इससे इन दोनों का ही आत्मबल और भारतीय संविधान की लोकोन्मुखता में विश्वास और अधिक पुख्ता होगा। इसमें दोराय संभव नहीं कि अपनी स्वाभाविक विनम्रता के बावजूद व्यापक लोकहित के मुद्दों पर द्रौपदी मुर्मू दृढ़ रहना बखूबी जानती हैं। उदाहरण के लिए, जिस आदिवासी समाज के उत्थान के लिए उनका जीवन समर्पित रहा है, उसके पक्ष में वे झारखंड के राज्यपाल के रूप में अपनी दृढ़ता प्रदर्शित कर चुकी हैं। उस समय उन्होंने झारखंड की रघुबरदास नीत भाजपा सरकार का विधानसभा में पारित वह विधेयक लौटा दिया था जिसमें राज्य के वनवासियों की जमीन के अधिकारों को उनसे छिन जाने का खतरा पैदा हो सकता था! इसलिए अगर आदिवासी समुदाय उनकी विजय से विशेष उल्लसित हैं, तो यह उचित ही है।

एक सामाजिक कार्यकर्ता और अध्यापक से लेकर विधायक, मंत्री और राज्यपाल तक के रूप में उनकी देशसेवा का इतिहास निस्संदेह यह विश्वास दिलाता है कि वे एक बेहतरीन राष्ट्रपति सिद्ध होंगी, आगे बढ़कर नेतृत्व करेंगी और समूचे भारत की विकास यात्रा को मजबूत बनाएँगी। कहना ही होगा कि द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति बनना कहीं न कहीं कुलीनतावाद, वंशवाद और व्यक्तिपूजा के स्थान पर साधारण से साधारण नागरिक की प्रतिष्ठा का प्रतीक है। यह अतिसाधारणता और लघुता का सम्मान है, जिसका स्रोत भारत का विराट जन-गण-मन है। जन-गण-मन की इस विराटता को संविधान से मिले इस खुलेपन ने संभव बनाया है कि सांसद और विधायक राष्ट्रपति चुनाव में पार्टी लाइन से मुक्त होकर अपनी आत्मा की आवाज पर भी मतदान के लिए स्वतंत्र हैं। कहना न होगा कि द्रौपदी मुर्मू की अति साधारण पृष्ठभूमि और विनम्र छवि ने सत्ता पक्ष के बाहर स्थित पार्टियों और सांसदों को आत्मा की आवाज पर उनके साथ आने को सहज रूप से आमंत्रित किया। यही वजह है कि उनके भारत की राष्ट्राध्यक्ष चुने जाने को सयाने इस महादेश के लोकतंत्र की अंतर्निहित ताकत का ही प्रदर्शन मान रहे हैं। वे ठीक ही कह रहे हैं कि भारत आजादी के बाद अपनी प्रजातांत्रिक व्यवस्था में अब उस महत्वपूर्ण मुकाम पर पहुँच चुका है जिसमें जर्रे को आफताब बनाने की अद्भुत क्षमता है! अतः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस जीत पर यह सही ही कहा है कि 'द्रौपदी मुर्मू जी का जीवन, उनके जीवन के शुरूआती संघर्ष, उनकी शानदार सेवा और उनकी अनुकरणीय सफलता हर भारतीय को प्रेरित करती है। वे हमारे नागरिकों, खास रूप से गरीबों, हाशिए के लोगों और दलितों के लिए आशा की किरण के रूप में उभरी हैं।'

महत्वपूर्ण है शोधादर्श का यह विशेषांक

पीड़ा सहते-सहते जो पीड़ा का गायक बन गया। ग़रीबी में दिन गुज़ारे मगर कभी हाथ न फैलाया। जिसने फिल्म जगत को एक अमर गीत देने के बाद फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया। जिसने राजीव गांधी और संजय गांधी को हिंदी बोलना सिखाया। जिसने अपराध जगत की पत्रकारिता की और कितने ही मामले उजागर किए मगर न कभी बिका और न कभी हटा। हार मानना तो इस महान व्यक्ति ने सीखा ही नहीं था। वह यारों का यार था और कष्टों के बावजूद मस्त था। वो किसी के लिए कुछ भी रहा हो मगर एक बेमिसाल था।

अगर आप भी इस महान व्यक्ति के बारे में जानना चाहते हैं तो पढ़ें शोधादर्श का यह विशेषांक

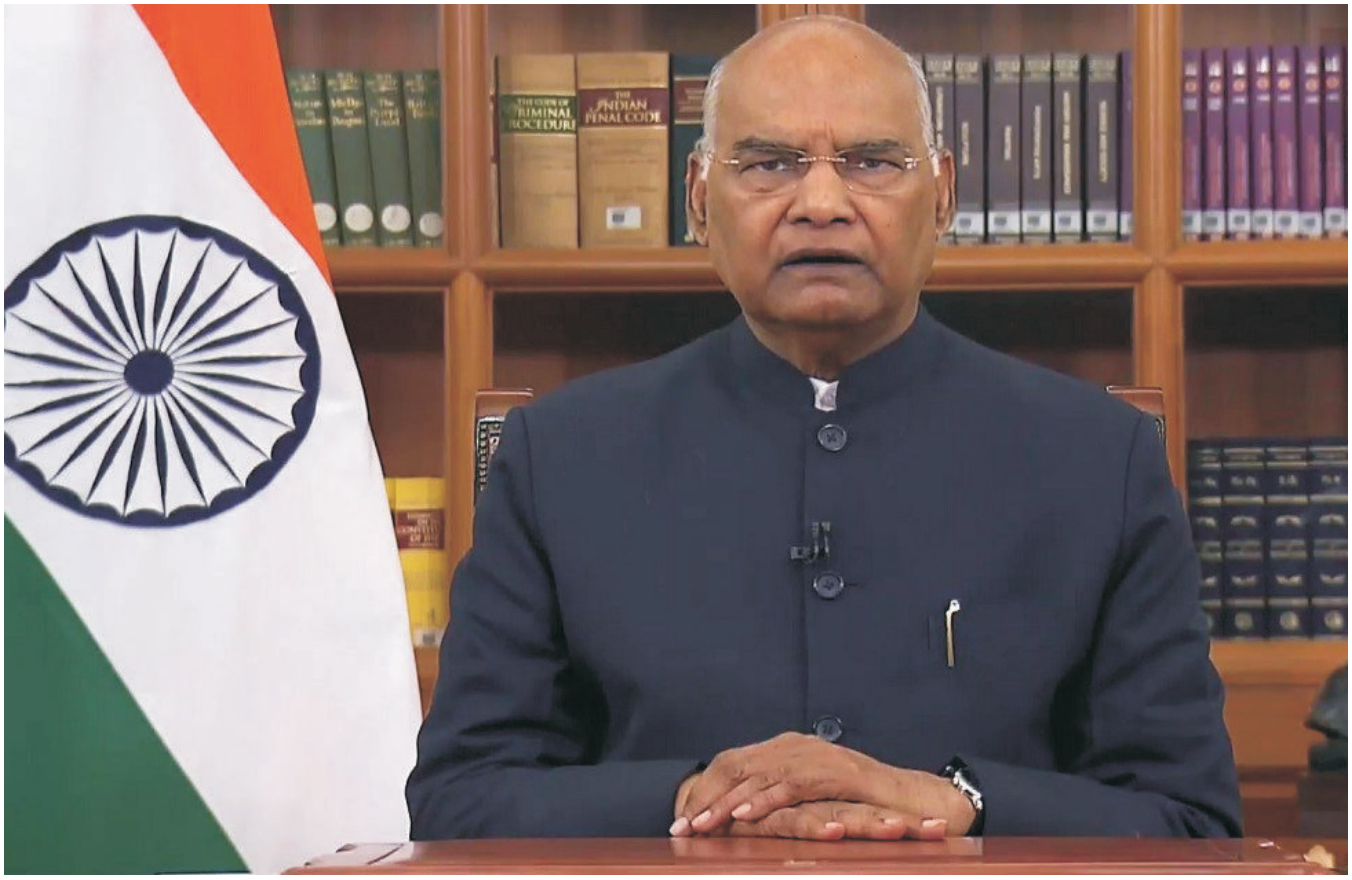

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने देशवासियों का जताया आभार

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भारतीय संस्कृति की विशेषता बताते हुए कहा कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। मैं युवा पीढ़ी से यह अनुरोध करूंगा कि अपने गाँव या नगर तथा अपने विद्यालयों तथा शिक्षकों से जुड़े रहने की इस परंपरा को आगे बढ़ाते रहें।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद छोड़ने की पूर्व संध्या पर देशवासियों को संबोधित किया। करना ही था। उन्होंने खुलकर अपनी बातें रखीं। उन्होंने देशवासियों का आभार जताया। राष्ट्र के नाम संबोधन में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि निष्ठावान नागरिक ही वास्तविक निर्माता है। उन्होंने यह भी कहा कि अपने कार्यकाल के दौरान प्रतिभावान लोगों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं भी देश के लिए कुछ करना चाहता था। उन्होंने कहा कि भारत का लोकतंत्र सभी को मौका देता है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि मेरे कार्यकाल के दौरान मुझे सभी का सहयोग मिला। उन्होंने संबोधन में कहा कि ५ साल पहले, मैं आपके चुने हुए जनप्रतिनिधियों के माध्यम से राष्ट्रपति के रूप में चुना गया था। राष्ट्रपति के रूप में मेरा कार्यकाल आज समाप्त हो रहा है। मैं आप सभी और आपके जन प्रतिनिधियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूं। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि २१वीं सदी को भारत की सदी बनाने के लिए हमारा देश सक्षम हो रहा है, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि कानपुर देहात जिले के परौंख गांव के अति साधारण परिवार में पला-बढ़ा राम नाथ कोविन्द आज आप सभी देशवासियों को संबोधित कर रहा है, इसके लिए मैं अपने देश की जीवंत लोकतांत्रिक व्यवस्था की शक्ति को शत-शत नमन करता हूं। उन्होंने अपने यादगार पलों के बारे में बताया राष्ट्रपति कार्यकाल के दौरान अपने पैतृक गांव का दौरा करना और अपने कानपुर के विद्यालय में वयोवृद्ध शिक्षकों के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लेना मेरे जीवन के सबसे यादगार पलों में हमेशा शामिल रहेंगे। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने भारतीय संस्कृति की विशेषता बताते हुए कहा कि अपनी जड़ों से जुड़े रहना भारतीय संस्कृति की विशेषता है। मैं युवा पीढ़ी से यह अनुरोध करूंगा कि अपने गाँव या नगर तथा अपने विद्यालयों तथा शिक्षकों से जुड़े रहने की इस परंपरा को आगे बढ़ाते रहें। उन्होंने स्वतंत्रता के वीर नायकों के बारे में कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान पूरे देश में पराधीनता के विरुद्ध अनेक विद्रोह हुए। देशवासियों में नयी आशा का संचार करने वाले ऐसे विद्रोहों के अधिकांश नायकों के नाम भुला दिए गए थे। अब उनकी वीर-गाथाओं को आदर सहित याद किया जा रहा है। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने कहा कि तिलक और गोखले से लेकर भगत सिंह और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस तकय जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल और श्यामा प्रसाद मुकर्जी से लेकर सरोजिनी नायडू और कमलादेवी चट्टोपाध्याय तक- ऐसी अनेक विभूतियों का केवल एक ही लक्ष्य के लिए तत्पर होना, मानवता के इतिहास में अन्यत्र नहीं देखा गया है। उन्होंने कहा कि संविधान सभा में पूरे देश का प्रतिनिधित्व करने वाले अनेक महानुभावों में हंसाबेन मेहता, दुर्गाबाई देशमुख, राजकुमारी अमृत कौर तथा सुचेता कृपलानी सहित १५ महिलाएं भी शामिल थीं। संविधान सभा के सदस्यों के अमूल्य योगदान से निर्मित भारत का संविधान, हमारा प्रकाश-स्तम्भ रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों और हमारे आधुनिक राष्ट्र-निर्माताओं ने अपने कठिन परिश्रम और सेवा भावना के द्वारा न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्शों को चरितार्थ किया था। हमें केवल उनके पदचिह्नों पर चलना है और आगे बढ़ते रहना है।

राष्ट्रपति ने कहा कि अपने कार्यकाल के पांच वर्षों के दौरान, मैंने अपनी पूरी योग्यता से अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। मैं डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, डॉक्टर एस. राधाकृष्णन और डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम जैसी महान विभूतियों का उत्तराधिकारी होने के नाते बहुत सचेत रहा हूं। जलवायु परिवर्तन पर भी उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन का संकट हमारी धरती के भविष्य के लिए गंभीर खतरा बना हुआ है। हमें अपने बच्चों की खातिर अपने पर्यावरण, अपनी जमीन, हवा और पानी का संरक्षण करना है। अंत में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि मैं सभी देशवासियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूं। भारत माता को सादर नमन करते हुए मैं आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

अब पूर्व राष्ट्रपति हुए रामनाथ कोविंद, जानें रिटायरमेंट के बाद क्या-क्या मिलेंगी सुविधाएं

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने आज अपना पदभार ग्रहण कर लिया है। वह देश के १५वीं राष्ट्रपति बनी हैं। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद का स्थान लिया है। रामनाथ कोविंद का कार्यकाल २४ जुलाई को समाप्त हो रहा था। देश के नए राष्ट्रपति के लिए चुनाव कराया गया था। इस चुनाव में द्रौपदी मुर्मू ने विपक्ष के साझा उम्मीदवार यशवंत सिन्हा को हराया था। पद छोड़ने के साथ ही रामनाथ कोविंद के आवास और मिलने वाली सुविधाओं में भी बदलाव हो गया। अब सवाल यह है कि पूर्व राष्ट्रपति के नाते रामनाथ कोविंद को क्या-क्या सुविधाएं मिलेंगी? दरअसल, संविधान में प्रेसिडेंट एलुमिनेट्स एक्ट १९५१ में पूर्व राष्ट्रपतियों को मिलने वाली सुविधाओं का जिक्र किया गया है। इसी के तहत पूर्व राष्ट्रपति को किसी भी प्रकार की सुविधा दी जाती है।

अब तक मिल रही जानकारी के मुताबिक रामनाथ कोविंद दिल्ली के सबसे बड़े बंगलों में से एक १२ जनपद में रहेंगे। यहां वर्षों तक रामविलास पासवान रहते थे। अगर रामनाथ कोविंद १२ जनपद में रहते हैं तो वह कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के पड़ोसी होंगे। आपको बता दें कि १२ जनपद में टाइप । बंगला है जिसमें ८ कमरे हैं। हाउसकीपर्स के लिए अलग से क्वार्टर है।

पूर्व राष्ट्रपति के नाते उन्हें क्या-क्या सुविधाएं मिलेंगी

-रामनाथ कोविंद को डेढ़ लाख रुपए मासिक पेंशन दी जाएगी।

- इसके साथ ही उनकी पत्नी को ३०००० रुपये की मासिक सचिवीय सहायता मिलेगी।

- रामनाथ कोविंद को दो लैंडलाइन, एक मोबाइल फोन, इंटरनेट कनेक्शन, मुफ्त पानी और बिजली की भी सुविधा मिलेगी

- इसके साथ ही उनके साथ दो सचिव रहेंगे और उन्हें दिल्ली पुलिस की सुरक्षा प्राप्त होगी।

- पूर्व राष्ट्रपति को आजीवन मुफ्त में मेडिकल ट्रीटमेंट की सुविधा मिलेगी।

- पूर्व राष्ट्रपति होने के नाते रामनाथ कोविंद फ्री फर्स्ट क्लास रेलवे टिकट और फ्लाइट टिकट के भी हकदार होंगे।

- पूर्व राष्ट्रपति को गाड़ी और ड्राइवर भी दिए जाते हैं। इसका खर्च सरकार वहन करती है।

- ५ लोगों का निजी स्टाफ भी पूर्व राष्ट्रपति को मिलता है

- पूर्व राष्ट्रपति को अपने कार्यालय के लिए हर साल ६० हजार मिलते हैं

राजभर ने कहा- अपने चाचा और भाभी को नहीं संभाल पाए, मुझे क्या संभालेंगे

समाजवादी पार्टी से अलग होने के बाद सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के प्रमुख ओम प्रकाश राजभर ने एक बार फिर से अखिलेश यादव पर तीखा प्रहार किया है। राजभर ने अखिलेश से परिवार को नहीं संभालकर रख पाने का आरोप लगाते हुए कहा कि २०२४ में किसी भी दल के साथ मिलकर गठबंधन करने में कोई परहेज़ नहीं होने की बात कही है। इसके साथ ही उन्होंने संकेत दिया की आने वाले वक्त में वो बसपा के साथ मिलकर राजनीति कर सकते हैं। ओपी राजभर ने साफ किया की सपा और सुभासपा दोनों पार्टियों की तरफ से अब रास्ते अलग-अलग हो गए हैं।

जनक कुमार विद्यालय में पूर्वांचल युवा मंच की ओर से आयोजित युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करने आये राजभर ने मीडिया के साथ बातचीत में अखिलेश को निशाने पर लेते हुए कहा कि ठीक है, वह कहता है कि मैं गलत हूं। लेकिन शिवपाल उसके चाचा हैं। मैं तो मानने वाला चाचा हूं। शिवपाल तो उनके सगे चाचा हैं। अपने चाचा को नहीं संभाल पा रहे हैं। अपर्णा यादव का नाम लेते हुए राजभर ने कहा कि अखिलेश अपनी भाभी को नहीं संभाल पा रहे हैं। अपने परिवार को नहीं संभाल पा रहे हैं तो वो हमको क्या संभालेंगे। बता दें कि अपर्णा यादव मुलायम सिंह यादव की दूसरी पत्नी साधना गुप्ता के पुत्र प्रतीक यादव की पत्नी हैं, जिन्होंने हाल ही में बीजेपी का दामन थाम लिया है। पत्रकार ने जब उनसे पूछा कि ये सबकु जानकर भी आप सपा के साथ गए थे। तो मजाकिया लहजे में प्रतिक्रिया देते हुए राजभर ने कहा कि जानकर भी लोग कभी-कभी जहर खा लेते हैं। इससे पहले भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर ने समाजवादी पार्टी (सपा) पर मुस्लिम समाज को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का डर दिखाकर उनका वोट लेने और उसे उसका हक नहीं देने का आरोप लगाया था।

दुनिया के लिए सबसे बड़ा खतरा है चीन - ऋषि सुनक

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में भारतीय मूल के ऋषि सुनक सबसे आगे हैं। कंजर्वेटिव पार्टी के नेता के तौर पर होने वाली वोटिंग का लास्ट राउंड शेष बचा है। जिसके जरिये प्रधानमंत्री का चयन होगा। ऋषि सुनक भारतीय टेक कंपनी इंफोसिस के को फाउंडर नारायणमूर्ति के दामाद हैं। ऋषि सुनक ने कहा कि अगर वह ब्रिटेन के अगले प्रधानमंत्री बनते हैं तो वह चीन से सख्ती से निपटेंगे। उन्होंने चीन को घरेलू और वैश्विक सुरक्षा के लिए 'नंबर एक खतरा' बताया। एएफपी के अनुसार ऋषि सुनक की तरफ से ये बयान उनके प्रतिद्वंद्वी लिज ट्रस द्वारा चीन और रूस पर कमजोर होने का आरोप लगाने के बाद सामने आया।

सुनक ने संस्कृति और भाषा कार्यक्रमों के माध्यम से चीनी प्रभाव के प्रसार को रोकने के लिए ब्रिटेन में सभी ३० कन्फ्यूशियस संस्थानों को बंद करने का प्रस्ताव रखा। उन्होंने यह भी कहा कि वह 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीसीपी) को हमारे विश्वविद्यालयों से बाहर कर देंगे।' उच्च शिक्षा प्रतिष्ठानों को ५०,००० पाउंड से अधिक के विदेशी वित्त पोषण का खुलासा करने और शोध साझेदारी की समीक्षा करने के लिए मजबूर कर देंगे। उन्होंने कहा कि ब्रिटेन की खुफिया एजेंसी एमआई५ का इस्तेमाल चीनी जासूसी का मुकाबला करने के लिए किया जाएगा और साइबर स्पेस में चीनी खतरों से निपटने के लिए 'नाटो-स्टाइल' अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बनाने पर विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि वह रणनीतिक रूप से संवेदनशील तकनीकी फर्मों सहित प्रमुख ब्रिटिश संपत्तियों के चीनी अधिग्रहण पर प्रतिबंध लगाने पर विचार करेंगे।

ब्रिटेन की तकनीक चुरा रहा चीन?

सुनक ने चीन के खिलाफ कई शिकायतें सूचीबद्ध करते हुए कहा कि एशियाई महाशक्ति ब्रिटेन की तकनीक की चोरी कर रही है और उसके विश्वविद्यालयों में घुसपैठ कर रही है। रूसी तेल खरीदकर व्लादिमीर पुतिन का समर्थन कर रही है और ताइवान सहित अपने पड़ोसियों को धमकाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा, 'वे अपने मानवाधिकारों के उल्लंघन में शिनजियांग और हांगकांग सहित अपने ही लोगों को यातना देते हैं, हिरासत में लेते हैं।' उन्होंने अपनी मुद्रा को दबाकर वैश्विक अर्थव्यवस्था को लगातार अपने पक्ष में किया है।

अफजाल की १५ करोड़ की संपत्ति कुर्क, अब्बास की तलाश में लखनऊ में छापेमारी

पांच बार का विधायक और हिस्ट्रीशीटर मुख्तार अंसारी उत्तर प्रदेश की बांदा जेल में बंद जेल में बंद है। लेकिन अब बाहुबली के परिवार पर भी योगी सरकार का शिकंजा कसता जा रहा है। पहले तो उसके सांसद भाई अफजाल अंसारी की करोड़ों की संपत्ति को कुर्क किया गया और अब बाहुबली मुख्तार के विधायक बेटे अब्बास अंसारी को यूपी पुलिस तलाश रही है। उसकी तलाश में कई जगह छापेमारी भी की गई है। अब्बास फरार बताया जा रहा है। अब्बास अंसारी के खिलाफ अवैध तरीके से शस्त्र लाइसेंस रख दिल्ली ट्रांसफर करने का मामला दर्ज है। जिसके बाद मऊ से सपा विधायक अंसारी की तलाश में पुलिस ने दबिश डालना शुरू कर दिया है। इससे पहले बीते दिनों गाजीपुर पुलिस ने गैंगस्टर से नेता बने मुख्तार अंसारी के बड़े भाई अफजल अंसारी की १५ करोड़ रुपये की चार संपत्ति कुर्क की है। मुख्तार अंसारी के भाईगाजीपुर से बसपा सांसद हैं। उनकी संपत्तियों को आज भारी पुलिस बल और राजस्व अधिकारियों की मौजूदगी में कुर्क किया गया। माचा गांव में गाजीपुर के एसपी रोहन पी बोत्रे और सब डिविजनल मजिस्ट्रेट (एसडीएम) हर्षिता तिवारी के नेतृत्व में कार्रवाई की गई। गाजीपुर पुलिस ने मुख्तार अंसारी के बड़े भाई और गाजीपुर से बसपा सांसद अफजल अंसारी की संपत्ति कुर्क की।

कुर्की भारी पुलिस बल और राजस्व अधिकारियों की मौजूदगी में की गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा रिपोर्ट सौंपे जाने के बाद गाजीपुर डीएम ने यह कार्रवाई की। एसपी रोहन पी बोत्रे ने कहा कि उत्तर प्रदेश गैंगस्टर्स और असामाजिक अधिनियम के प्रावधानों के तहत एक कुर्की आदेश जारी किया गया था और बाद में कार्रवाई की गई थी। उन्होंने कहा, श्हमने चार जमीन कुर्क की हैंरू मौजा नरसिंहपुर की तराई परगना और खरडीहा परगना। प्रशासन ने स्पष्ट रूप से सांसद के लिए उनकी संपत्तियों को कुर्क करने की बात कही है।

अब हिन्दी में भी पढ़कर डॉक्टर बन सकेंगे

मध्यप्रदेश से ऐसी खबर आ रही है कि देश में अब सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली हिन्दी एमबीबीएस पाठ्यक्रम की पढ़ाई का वैकल्पिक माध्यम बनने जा रही है। ऐसा माना जा रहा है कि सितंबर के आखिर में शुरू होने वाले नए अकादमिक सत्र में कार्रवाई प्रारंभ हो जाएगी। राज्य के चिकित्सा शिक्षा विभाग के एक अधिकारी के अनुसार नए अकादमिक सत्र में देश के प्रमुख हिन्दीभाषी प्रांत में निजी और सरकारी चिकित्सा महाविद्यालयों के एमबीबीएस प्रथम वर्ष के कुल ४,००० विद्यार्थियों को अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी की किताबों से भी पढ़ाई का विकल्प मिल सकता है। एक फिजियोलॉजी के पूर्व सह प्राध्यापक डॉ. मनोहर भंडारी ने भी बताया कि राज्य के चिकित्सा महाविद्यालयों के एमबीबीएस पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने वाले ६० से ७० प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी माध्यम के होते हैं और अंग्रेजी की किताबों के कारण उन्हें सबसे ज्यादा समस्या प्रथम वर्ष में ही होती है। चिकित्सा शिक्षा विभाग के अधिकारी ने कहा कि राज्य सरकार एमबीबीएस प्रथम वर्ष के लिए अंग्रेजी के तीन स्थापित लेखकों की पहले से चल रही किताबों को हिन्दी में ढालने का काम पूरा करने की ओर बढ़ रही है। ये पुस्तकें नए सत्र में विद्यार्थियों के हाथों में पहुंचकर चिकित्सा शिक्षा की सूरत बदल सकती हैं। इस अधिकारी ने बताया कि निजी प्रकाशकों की ये किताबें शरीर रचना विज्ञान (एनाटॉमी), शरीर क्रिया विज्ञान (फिजियोलॉजी) और जैव रसायन विज्ञान (बायोकेमिस्ट्री) विषयों से संबंधित हैं जिन्हें बड़े पैमाने पर छापकर विद्यार्थियों तक पहुंचाने से पहले ५५ विशेषज्ञ शिक्षकों की मदद से अलग-अलग स्तरों पर जांचा जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य में मेडिकल की पढ़ाई अंग्रेजी माध्यम में भी पहले की तरह जारी रहेगी, हालांकि शिक्षकों से अपील की गई है कि वे खासकर एमबीबीएस पाठ्यक्रम की कक्षाओं में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दें।

टधिकारी ने यह भी बताया कि मध्य प्रदेश आयुर्विज्ञान विश्वविद्यालय परीक्षार्थियों को हिंग्लिश (हिन्दी और अंग्रेजी का मिला-जुला स्वरूप) में लिखित परीक्षा, प्रायोगिक परीक्षा और मौखिक परीक्षा (वाइवा) देने का विकल्प काफी पहले ही प्रदान कर चुका है जिसके उत्साहजनक नतीजे प्राप्त हुए हैं।

पार्थ चटर्जी की सहयोगी के एक और फ्लैट से मिली नकदी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में शिक्षक भर्ती घोटाले से जुड़े मामले की जांच कर रहे प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को अर्पिता मुखर्जी के एक और फ्लैट से बुधवार को भारी मात्रा में नकदी मिली। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। मुखर्जी को राज्य के उद्योग मंत्री पार्थ चटर्जी का करीबी माना जाता है, जिन्हें एजेंसी ने इसी मामले में गिरफ्तार किया है। ईडी ने मुखर्जी को उनके दक्षिण कोलकाता स्थित फ्लैट से २१ करोड़ रुपये की नकदी मिलने के एक दिन बाद २३ जुलाई को गिरफ्तार किया था। अधिकारी ने बताया कि इस बार उत्तर कोलकाता के बेलघरिया स्थित फ्लैट से नकदी मिली है जिसकी मालकिन मुखर्जी हैं।

अधिकारी ने कहा कि बेलघरिया के रथाला इलाके में अर्पिता के दो फ्लैट को ताला तोड़कर खोला गया क्योंकि उनकी चाबी नहीं मिली। अधिकारी से जब 'पीटीआई-भाषा' ने संपर्क किया तो उन्होंने बताया, 'हमें हाउसिंग कॉम्प्लेक्स में दो में से एक फ्लैट में बड़ी मात्रा में नकदी मिली है। हमने रुपयों की गिनती के लिए तीन मशीनें मंगवाई हैं, ताकि पता चले कि वास्तव में कितनी राशि है।' उन्होंने बताया कि फ्लैटों की तलाशी के दौरान कई 'अहम' दस्तावेज बरामद हुए हैं। मुखर्जी ने पूछताछ के दौरान ईडी को कोलकाता के आसपास की अपनी संपत्ति की जानकारी दी थी।

अधिकारी ने बताया कि बुधवार सुबह से ही इन संपत्तियों पर छापेमारी की कार्रवाई की जा रही है। मंत्री और मुखर्जी से पूछताछ के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि मुखर्जी जांच में सहयोग कर रही हैं, लेकिन मंत्री का 'रवैया असहयोगात्मक' है। गौरतलब है कि कलकत्ता उच्च न्यायालय के निर्देश पर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) पश्चिम बंगाल स्कूल सेवा आयोग की अनुशंसा पर सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में समूह 'ग' और 'घ' वर्ग के कर्मचारियों और शिक्षकों की भर्ती में हुई कथित अनियमितता की जांच कर रही है। वहीं, ईडी घोटाले में धनशोधन के कोण से जांच कर रहा है। उल्लेखनीय है कि जब यह कथित घोटाला हुआ था, उस समय पार्थ चटर्जी राज्य के शिक्षामंत्री थे।

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
₹ 200
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका
दिसंबर 2022-फरवरी 2023
प्रो. ऋषभ देव शर्मा विशेषांक

लेख भेजें-
shodhadarsh2018@gmail.com

भारत ने लगाई जीत की हैट्रिक, ११६ रनों से जीता आखिरी मैच

टीम इंडिया ने वेस्टइंडीज को ३६ साल बात क्लीन स्वीप किया है। भारत की बी टीम शिखर धवन की कप्तानी में खेल रही थी। तीनों मैचों में खिलाडियों का शानदार प्रदर्शन रहा। खेल आखिरी बॉल तक पहुंचा, आखिर में रोमांचक मुकाबले के बाद टीम इंडिया की झोली में जीत आई। आखिरी मुकाबला भारत ने ११६ रनों से जीत के साथ ही भारत ने ३-० से वनडे सीरीज जीत ली। यह पहली बार है जब टीम इंडिया ने वनडे सीरीज में वेस्टइंडीज को उसके घर में क्लीन स्वीप किया है।

बात करें खिलाड़ियों के प्रदर्शन की तो शुभमन गिल बारिश के कारण सिर्फ दो रन से करियर के पहले अंतरराष्ट्रीय शतक से वंचित रह गए लेकिन उनके नाबाद ६८ रन और फिर गेंदबाजों के बेहतरीन प्रदर्शन से भारत ने वेस्टइंडीज को वर्षा से प्रभावित तीसरे और अंतिम एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में यहां डकवर्थ-लुईस पद्धति के तहत ११६ रन से हराकर शृंखला में ३-० से क्लीन स्वीप किया। भारत की पारी के २४ ओवर पूरे होने के बाद बारिश के कारण मैच रुका और मुकाबले को ४० ओवर का कर दिया गया। जबकि दूसरी बार भारतीय पारी के ३६ ओवर पूरे होने के बाद बारिश आई और मेहमान टीम की पारी को यहीं तीन विकेट पर २२५ रन के स्कोर पर समाप्त किया गया। वेस्टइंडीज को इसके बाद डकवर्थ-लुईस पद्धति के तहत ३५ ओवर में २५७ रन का लक्ष्य मिला। गिल ने ६८ गेंद में दो छक्कों और सात चौकों की मदद से नाबाद ६८ रन की पारी खेली। उन्होंने कप्तान शिखर धवन (५८) के साथ पहले विकेट के लिए ११३ जबकि श्रेयस अय्यर (४४) के साथ दूसरे विकेट के लिए ८६ रन की साझेदारी की। इसके जवाब में वेस्टइंडीज की टीम युजवेंद्र चहल (१७ रन पर चार विकेट), मोहम्मद सिराज (१४ रन पर दो विकेट) औरशार्दुल ठाकुर (१७ रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने २६ ओवर में १३७ रन पर सिमट गई। वेस्टइंडीज ने अपने अंतिम पांच विकेट सिर्फ १८ रन पर गंवाए। टीम की ओर से ब्रेंडन किंग (४२) और कप्तान निकोलस पूरन (४२) ही टिककर बल्लेबाजी कर पाए जबकि उसके चार बल्लेबाज खाता खोलने में भी नाकाम रहे। किंग ने पांचवें ओवर में अक्षर पटेल पर छक्के के साथ पारी की पहली बाउंड्री लगाई जबकि सलामी बल्लेबाज शाई होप ने भी सिराज की गेंद को दर्शकों के बीच पहुंचाया। होप हालांकि ३३ गेंद में २२ रन बनाने के बाद चहल की गेंद को आगे बढ़कर खेलने की कोशिश में चूक गए और विकेटकीपर संजू सैमसन ने उन्हें स्टंप कर दिया। पूरन एक रन के स्कोर पर भाग्यशाली रहे जब सिराज ने उनका कैच टपका दिया। किंग ने कृष्णा पर लगातार तीन चौकों के साथ दबाव कम करने का प्रयास किया लेकिन अक्षर की सीधी गेंद को चूककर बोल्ड हो गए। उन्होंने ३७ गेंद की अपनी पारी में पांच चौके और एक छक्का मारा। पूरन ने इसके बाद मोर्चा संभालते हुए दीपक हुड्डा की लगातार गेंदों पर चौका और छक्का मारा। वेस्टइंडीज के रनों का शतक १८वें ओवर में पूरा हुआ। कीसी कार्टी ने बेहद धीमी बल्लेबाजी की और १७ गेंद में पांच रन बनाने के बाद ठाकुर की गेंद को विकेटों पर खेल गए। पूरन भी इसके बाद कृष्णा की गेंद पर मिड आन पर धवन को कैच दे बैठे जिससे वेस्टइंडीज की जीत की उम्मीदों को बड़ा झटका लगा। उन्होंने ३२ गेंद का सामना करते हुए पांच चौके और एक छक्का मारा। ठाकुर ने अगले ओवर में अकील हुसैन (०१) को मिड आन पर धवन के हाथों कैच कराके वेस्टइंडीज को सातवां झटका दिया। चहल ने कीमो पॉल को खाता खोले बिना पवेलियन भेजा और फिर हेडन वाल्श जूनियर (१०) को भी स्लिप में धवन के हाथों कैच कराया। उन्होंने जेडन सील्स (००) को गिल के हाथों कैच कराके भारत को जीत दिलाई। इससे पहले धवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया और गिल के साथ मिलकर टीम को शानदार शुरुआत दिलाई। धवन ने जेसन होल्डर पर चौके के साथ खाता खोला जबकि गिल ने जेडन सील्स पर चौके के साथ अपनी पारी की शुरुआत की। दोनों सलामी बल्लेबाजों ने शुरुआत में सतर्कता दिखाई और १२वें ओवर में टीम के रनों का अर्धशतक पूरा किया।

गिल ने हेडन वाल्श (५७ रन पर दो विकेट) पर पारी का पहला छक्का जड़ा जबकि धवन ने भी इस स्पिनर पर चौका मारा। उन्होंने कीमो पॉल की गेंद पर दो रन के साथ ६२ गेंद में अर्धशतक पूरा किया। भारत के रनों का शतक २०वें ओवर में पूरा हुआ। गिल और धवन की शृंखला में यह दूसरी शतकीय साझेदारी थी। गिल ने भी सील्स की गेंद पर एक रन के साथ ६० गेंद में अर्धशतक पूरा किया। धवन हालांकि हेडन वाल्श की गुगली पर बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में गेंद को हवा में लहरा बैठे और मिड विकेट पर वेस्टइंडीज के कप्तान निकोलस पूरन ने कैच लपकने में कोई गलती नहीं की। उन्होंने ७४ गेंद की अपनी पारी में सात चौके जड़े। धवन इस पारी के दौरान वेस्टइंडीज के खिलाफ १००० रन पूरे करने वाले दुनिया के २२वें बल्लेबाज भी बने। मैच दोबारा शुरू होने पर गिल और अय्यर ने वाल्श के पहले ओवर में ही छक्के जड़ दिए। गिल ने सील्स पर लगातार दो चौके मारे जबकि अय्यर ने होल्डर और अकील हुसैन (४३ रन पर एक विकेट) की गेंद को बाउंड्री के दर्शन कराए। अय्यर हालांकि हुसैन की गेंद पर लांग आन पर पॉल को कैच देकर पवेलियन लौटे। उन्होंने ३४ गेंद का सामना करते हुए चार चौके और एक छक्का मारा। सूर्यकुमार यादव छह गेंद में आठ रन बनाने के बाद वाल्श का दूसरा शिकार बने।

हाईकोर्ट ने व्हॉट्सएप की निजता नीति को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई टाली

दिल्ली उच्च न्यायालय ने व्हॉट्सएप की २०२१ की निजता नीति को चुनौती देने वाली कई याचिकाओं पर सुनवाई सितंबर तक टाल दी है। मुख्य न्यायाधीश सतीश चंद्र शर्मा तथा न्यायमूर्ति सुब्रमण्यम प्रसाद को संबंधित पक्षों द्वारा सूचित किया गया कि इसी तरह के मुद्दे उच्चतम न्यायालय के समक्ष लंबित हैं। उच्च न्यायालय ने इसी आधार पर फेसबुक और व्हॉट्सएप की सोशल मीडिया मध्यवर्तियों के लिए नए सूचना प्रौद्योगिकी नियमों को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई सितंबर तक टाल दी है। इन नियमों के तहत संदेश भेजने वाली ऐप को 'चैट' का पता लगाना होगा और संबंधित सूचना सबसे पहले किस की ओर से भेजी जा रही है इसकी पहचान के लिए प्रावधान करने होंगे।

व्हॉट्सएप की निजता निजी को सबसे पहले चुनौती देने वाले चैतन्य रोहिल्ला ने उच्च न्यायालय में कहा कि अद्यतन निजता नीति संविधान के तहत प्रयोगकर्ताओं के निजता के अधिकार का उल्लंघन करती है। उनकी दलील थी कि उन्हें इस नीति को या तो स्वीकार करना होगा या ऐप से हटना होगा। वे अपने डेटा को फेसबुक के स्वामित्व वाली या तीसरे पक्ष के ऐप को साझा करने से रोक नहीं सकते। याचिका में दावा किया गया है कि नई निजता नीति के तहत प्रयोगकर्ताओं की ऑनलाइन गतिविधियों तक व्हॉट्सएप की पूर्ण पहुंच होगी और इसमें सरकार की ओर से निगरानी भी नहीं होगी।

जम्मू कश्मीर में मीडिया संगठनों के दो लोगों को लिया हिरासत में

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने जानकारी दी कि इस साल जम्मू-कश्मीर में जन सुरक्षा कानून के तहत मीडिया संगठनों से जुड़े दो लोगों को हिरासत में लिया गया। राय, राज्यसभा में पूछे गये एक प्रश्न का उत्तर दे रहे थे कि क्या जम्मूकश्मीर में पत्रकारों और स्थानीय मीडिया संगठनों की नजरबंदी में वृद्धि हुई है और अगस्त २०१६ में अनुच्छेद ३७० और ३५-ए के निरसन के बाद से अधिकारियों द्वारा इंटरनेट बंद करने की संख्या बढ़ी है।

उन्होंने एक लिखित उत्तर में कहा, ''जैसा कि जम्मू-कश्मीर सरकार ने बताया है, चालू वर्ष के दौरान, मीडिया संगठनों से जुड़े दो व्यक्तियों को सार्वजनिक सुरक्षा कानून के तहत हिरासत में लिया गया है।''

मंत्री ने कहा कि पांच अगस्त, २०१६ को संवैधानिक परिवर्तनों के बाद, जम्मू-कश्मीर में कानून और व्यवस्था बनाए रखने और जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इंटरनेट सेवाओं को अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया था। हालांकि, उन्होंने कहा, इंटरनेट सेवाओं को क्रमबद्ध तरीके से बहाल किया गया था।

मौजूदा समय में, जम्मू-कश्मीर में इंटरनेट सेवाओं पर कोई प्रतिबंध नहीं है। एक कानून लागू करने वाली एजेंसी के रूप में, पुलिस किसी भी व्यक्ति (पेशे के किसी भी भेदभाव के बिना या अन्यथा) के खिलाफ कानून के तहत कार्रवाई करने के लिए बाध्य है, जो देश की सुरक्षा और संप्रभुता के प्रतिकूल ऐसी गतिविधियों में शामिल पाया जाता है।

राय ने कहा कि दूरसंचार सेवाओं के अस्थायी निलंबन नियम, २०१७ के तहत सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी इंटरनेट सेवाओं के अस्थायी निलंबन के आदेश, आपात स्थितियों के दौरान, जम्मू एवं कश्मीर सरकार की आधिकारिक वेबसाइट पर अपलोड किए जाते हैं।

5 G

२०२२-२३ में ५जी मोबाइल सेवा प्रारंभ करने की संभावना

सरकार ने बुधवार को लोकसभा को बताया कि दूरसंचार सेवा प्रदाताओं द्वारा वर्ष २०२२-२३ के दौरान ५जी मोबाइल सेवा प्रारंभ करने की संभावना है। लोकसभा में दीपसिंह शंकरसिंह राठौड़ और रमेश बिधूड़ी के प्रश्न के लिखित उत्तर में संचार राज्य मंत्री देबुसिंह चौहान ने यह जानकारी दी। सदस्यों ने पूछा था कि क्या सरकार की भारत में ५जी प्रौद्योगिकी शुरू करने की कोई योजना है। संचार राज्य मंत्री ने कहा कि ५जी सेवाओं को धीरे-धीरे शुरू करने और सेवाओं का वातावरण तैयार होने एवं मांग बढ़ने पर इसकी पूरी क्षमता प्राप्त करने की संभावना है। चौहान ने कहा कि दूरसंचार विभाग ने १५ जून, २०२२ की अधिसूचना के तहत ६०० मेगाहर्ट्ज, ७०० मेगाहर्ट्ज, ८०० मेगाहर्ट्ज, ६०० मेगाहर्ट्ज, १८०० मेगाहर्ट्ज, २१०० मेगाहर्ट्ज, २३०० मेगाहर्ट्ज, २५०० मेगाहर्ट्ज, ३३०० मेगाहर्ट्ज, २६ गीगा हर्ट्ज बैंडों के स्पेक्ट्रम की नीलामी की प्रक्रिया पहले शुरू कर दी है जिसमें ५जी सेवाओं को शुरू करने हेतु आवश्यक स्पेक्ट्रम शामिल है।

कागज के इस्तेमाल को बंद करने पर विचार कर सकते हैं बैंक

बैंक और अन्य वित्तीय संस्थान अपनी शाखाओं में कागज के उपयोग को पूरी तरह खत्म करने के साथ ही एटीएम पर ई-रसीद देने पर विचार कर सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने को यह सुझाव दिया।

रिजर्व बैंक ने 'जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त' पर एक परिचर्चा पत्र में कहा कि वह जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं के आधार पर एक रणनीति तैयार करना चाहता है। इसके लिए केंद्रीय बैंक वैश्विक निकायों और अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों के अनुभवों का लाभ ले रहा है। इस क्रम में सभी रिजर्व बैंक विनियमित संस्थाओं (आरई) के लिए व्यापक दिशानिर्देश तैयार किए जाएंगे। परिचर्चा पत्र में कहा गया कि जलवायु परिवर्तन के जोखिमों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए रणनीति तैयार की जाएगी। इसमें कहा गया, ''बैंकिंग प्रक्रियाओं को पर्यावरण के और अधिक अनुकूल बनाकर आरई अपने संचालन में कागज के उपयोग को खत्म करके अपनी शाखाओं को हरित शाखाओं में बदलने पर विचार कर सकते हैं।''

आरबीआई ने ३० सितंबर तक परिचर्चा पत्र पर टिप्पणियां आमंत्रित की हैं। इसके अनुसार, आरई ई-रसीदों को प्रोत्साहित करने के तरीकों और साधनों पर विचार कर सकते हैं। यह सुझाव भी दिया गया कि भारतीय बैंक संघ (आईबीए) जलवायु जोखिम और टिकाऊ वित्त के क्षेत्र में क्षमता निर्माण पर एक कार्यसमूह स्थापित कर सकता है।

पाकिस्तानी प्रधानमंत्री का आरोप, न्यायपालिका उनके प्रति दोहरा रवैया अपना रही

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने न्यायपालिका पर निशाना साधते हुए कुछ न्यायाधीशों पर उनकी गठबंधन सरकार के प्रति ''दोहरा मापदंड'' अपनाने का आरोप लगाया। उच्चतम न्यायालय ने एक दिन पहले शहबाज शरीफ के बेटे हमजा शरीफ को राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और सबसे अधिक आबादी वाले पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री पद से हटा दिया था, जिसके बाद उन्होंने यह टिप्पणी की। उच्चतम न्यायालय ने फैसला सुनाया कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-कायद (पीएमएल-क्यू) के नेता परवेज इलाही पंजाब के नए मुख्यमंत्री होंगे। इलाही (७६) को अपदस्थ प्रधानमंत्री इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) पार्टी का समर्थन हासिल है। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। इसे प्रधानमंत्री शरीफ के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। शहबाज शरीफ ने नेशनल असेंबली के सत्र को संबोधित करते हुए कहा, मैं न्यायपालिका का सम्मान करता हूं लेकिन नेशनल असेंबली में सच बोलना पड़ता है। लोग उम्मीद करते हैं कि न्यायपालिका न्याय को ध्यान में रखते हुए निर्णय करेगी और न्याय का मानक सभी के लिए समान होना चाहिए। जब अदालतें बुलाती हैं तो मुझे लगता है कि हमें बहुत सम्मान के साथ जाना चाहिए लेकिन अगर आपको फैसला करना है तो यह सच्चाई और न्याय के आधार पर होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि आप मेरे साथ एक तरह का व्यवहार करें और किसी और के साथ अलग व्यवहार करें।

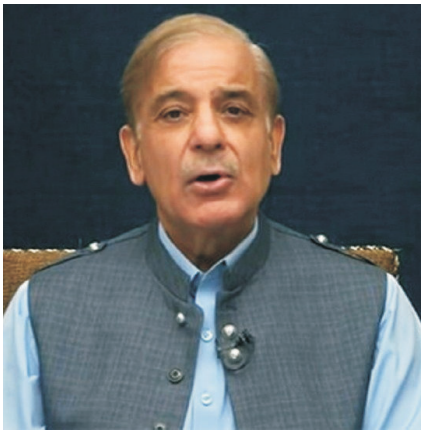

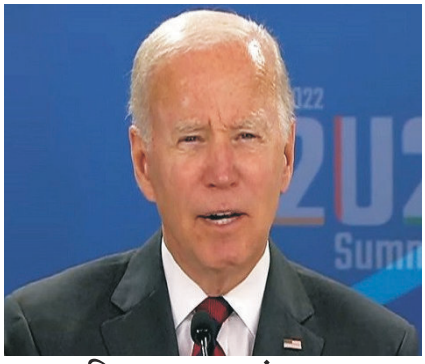

राष्ट्रपति बाइडन संक्रमण मुक्त 'कड़ा पृथकवास' समाप्त

अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन की की गई जांच में कोरोना वायरस के संक्रमण से मुक्त पाये गए हैं। इससे पहले मंगलवार रात की गई जांच में भी संक्रमण की पुष्टि नहीं हुई थी। बाइडन के डॉक्टर के हवाले से जारी पत्र में व्हाइट हाउस ने यह जानकारी दी। संक्रमण मुक्त होने के बाद बाइडन ने ''कड़ा पृथकवास'' समाप्त कर दिया है।

७६ वर्षीय बाइडन पिछले सप्ताह कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए थे। बाइडन ने अमेरिकियों से कहा, ''कोविड गया नहीं है।'' साथ ही लोगों से कहा कि कोविड-रोधी टीके की खुराक, बूस्टर खुराक और उपचार के जरिये गंभीर रूप से बीमार होने से बचा जा सकता है। संक्रमणमुक्त होने के बाद बाइडन ने व्हाइट हाउस के 'रोज गार्डन' में अपने संबोधन के दौरान जनता का आभार जताया और कहा, ''अब मुझे ओवल कार्यालय वापस जाना है।''

इससे पहले, डॉ. केविन ओकोन्नोर ने कहा कि राष्ट्रपति ने उपचार की अवधि पूरी कर ली है और उनको बुखार नहीं है। उन्होंने कहा कि अब बाइडन में कोविड-१६ बीमारी के कोई लक्षण नहीं हैं। व्हाइट हाउस के बयान जारी करने के कुछ देर बाद बाइडन ने ट्वीट किया, ''ओवल (कार्यालय) में वापसी।'' अमेरिकी राष्ट्रपति ने ट्वीट के साथ कोविड-१६ रैपिड जांच वाली फोटो साझा करते हुए परिणाम 'नेगेटिव' आने की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि बाइडन २१ जुलाई को कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए थे। हालांकि, वह पृथकवास के दौरान ऑनलाइन माध्यम से अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रहे थे।

बीएसएनएल को पटरी पर लाने के लिए पैकेज मंजूर

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सार्वजनिक क्षेत्र की दूरसंचार कंपनी बीएसएनएल के पुनरुद्धार के लिए १.६४ लाख करोड़ रुपये के पैकेज को मंजूरी दी। पैकेज के तीन हिस्से हैं - सेवाओं में सुधार, बहीखातों को मजबूत करना और फाइबर नेटवर्क का विस्तार। दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा लिए गए फैसले के बारे में पत्रकारों को बताया कि सरकार बीएसएनएल को ४जी सेवाओं की पेशकश करने के लिए स्पेक्ट्रम आवंटित करेगी। उन्होंने कहा, ''हम बीएसएनएल को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।'' दूरसंचार एक रणनीतिक क्षेत्र है, जहां सरकार बीएसएनएल की मदद के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा, ''बीएसएनएल को २०१६ में दिए गए पहले पुनरुद्धार पैकेज से कंपनी में स्थिरता आई और इसके बाद उसने परिचालन लाभ दर्ज किया। आज के १,६४,१५६ करोड़ रुपये के पुनरुद्धार पैकेज के साथ बीएसएनएल एक व्यवहार्य इकाई बनेगी।''

बीएसएनएल निजी कंपनियों के हाथों तेजी से बाजार हिस्सेदारी खो रही है और अगर प्रौद्योगिकी तथा सेवाओं के उन्नयन के लिए सरकारी मदद नहीं मिलती, तो वह गहरे संकट में फंस जाती।

वैष्णव ने कहा कि बीएसएनएल के ३३,००० करोड़ रुपये के वैधानिक बकाये को इक्विटी में बदला जाएगा। साथ ही कंपनी इतनी ही राशि (३३,००० करोड़ रुपये) के बैंक कर्ज के भुगतान के लिये बॉन्ड जारी करेगी। उन्होंने बताया कि पैकेज में ४३,६६४ करोड़ रुपये का नकद हिस्सा शामिल है। पैकेज के तहत १.२ लाख करोड़ रुपये गैर-नकद रूप में चार साल के दौरान दिए जाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल ने बीएसएनएल और भारत ब्रॉडबैंड नेटवर्क लिमिटेड (बीबीएनएल) के विलय को भी मंजूरी दी। मंत्री ने कहा कि ४जी सेवाओं की पेशकश के लिए बीएसएनएल को स्पेक्ट्रम का प्रशासनिक आवंटन किया जाएगा। इसके तहत ६००/१८०० मेगाहर्ट्ज बैंड में स्पेक्ट्रम का आवंटन इक्विटी निवेश के जरिये किया जाएगा, जिसकी लागत ४४,६६३ करोड़ रुपये होगी। उन्होंने कहा कि सरकार ४जी प्रौद्योगिकी का ढांचा विकसित करने के लिए अगले चार साल के दौरान २२,४७१ करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय करेगी। वैष्णव ने कहा, ''पुनरुद्धार पैकेज से बीएसएनएल को सेवाओं में सुधार करने और ३-४ वर्षों में शुद्ध लाभ दर्ज करने में मदद मिलेगी। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी अगले एक-डेढ़ साल में ५जी सेवाएं शुरू करेगी।'' इसके अलावा सरकार बीएसएनएल को २०१४-१५ से २०१६-२० के दौरान व्यावसायिक रूप से अव्यवहार्य ग्रामीण वायरलाइन संचालन के लिए १३,७८६ करोड़ रुपये देगी। उन्होंने कहा कि भारतनेट के तहत स्थापित बुनियादी ढांचे के व्यापक उपयोग के लिए बीबीएनएल का बीएसएनएल में विलय किया जाएगा।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने देश के दूरदराज के गांवों में ४जी मोबाइल सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए २६,३१६ करोड़ रुपये की कुल लागत वाली एक परियोजना को भी मंजूरी दी है।

जनपद बिजनौर के ग्राम पैजनिया निवासी

रजनीश कुमार त्यागी

के इंस्पेक्टर बनने पर

हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु समस्त त्यागी परिवार

बिजनौर में है नाग प्रजाति का विनाश रोकने वाले आस्तिक ऋषि का मठ

अशोक मधुप

बहुत कम लोग जानते हैं कि महाभारत काल में राजा जन्मेजय का नाग यज्ञ रूकवाने वाले आस्तिक ऋषि का मठ बिजनौर जनपद में है। यह मठ बिजनौर से लगभग चार पांच किलोमीटर दूर नीलावाला गांव के जंगल में स्थित है। पुराने लोग इस मठ के बारे में जानते हैं। नई पीढ़ी को इस बार में कोई रूचि नहीं है।

बिजनौर से पांच किलोमीटर दूर गांव आलमपुर उर्फ नीलावाला है। इसके जंगल में आस्तिक मठ है। इतिहास के जानकारों का कहना है कि वर्तमान स्थल पुराना तो नहीं है। हो सकता है कि गंगा के बहाव क्षेत्र में होने के कारण अवशेष खत्म हो गए हों। २५ साल से आस्तिक मठ के पुजारी मुन्ना भगत यहां आने वालों को बताते थे कि जन्मेजय के यज्ञ को रुकवाने वाले आस्तिक ऋषि की यहां समाधि है।

मुन्ना भगत की मृत्य के बाद तीन चार साल से अब इस मठ की देखरेख गंभीर भगत कर रहे हैं। वे कहते हैं कि यहां आसपास काफी सांप होते हैं। मठ पर मौजूद गांव के बलजीत सिंह बताते हैं कि मठ के पास के पीपल के नीचे काफी बड़े तीन सांप दिखाई देते रहते हैं। गंभीर भगत कहते हैं कि मठ की बहुत मान्यता है। रविवार और सोमवार को काफी श्रद्धालु यहां आते आकर पूजा करते हैं।

नीलावाला के निवासी शिक्षक हंरवत सिंह का कहना है कि आस्तिक मठ की बहुत मान्यता है। किंतु सरकारी स्तर पर इसके लिए कोई कार्य नहीं हुआ। जनपद महाभारत सर्किट में आता है किंतु महाभारत कालीन इस स्थल की हालत पहले जैसी ही है।

महाभारत की कथाओं में आता है कि राजा परीक्षित एक बार शिकार के लिए निकले थे और जल की खोज में वे शमीक ऋषि के आश्रम में पहुंच गए। उन्होंने तपस्या में लीन ऋषि से पानी मांगा। तपस्यारत ऋषि के ध्यान न देने पर उन्होंने पास में पड़ा मृत सांप बाण की नोक से उठाकर ऋषि के गले में डाल दिया। तपस्या में लीन ऋषि को तो इस घटना का पता नहीं चला, किंतु उनके पुत्र श्रृंगि ऋषि ने घटना का पता लगते ही परीक्षित को श्राप दिया कि सातवें दिन उन्हें तक्षक सर्प डसेगा। तक्षक के डसने से राजा परीक्षित की मृत्यु हो गई। इससे गुस्साए उनके बेटे राजा जन्मेजय ने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिए सर्प प्रजाति के विनाश का निर्णय लिया।उन्होंने सर्प यज्ञ कराया। मंत्रों के प्रभाव से सर्प यज्ञ कुंड में आकर भस्म होने लगे।

जाति का विनाश होते देख सारे नाग भाग कर अपने नाग ऋषि आस्तिक के पास आए। उन्होंने उनसे नाग प्रजाति का विनाश रोकने का प्रयास करने का आह्वान किया। उनके अनुरोध पर आस्तिक ऋषि यज्ञ स्थल पर गए। अपनी बातों से इन्होंने राजा जन्मेजय का प्रभावित कर लिया। जन्मेजय को समझाया कि एक व्यक्ति की गलती का दंड पूरी प्रजाति को देना ठीक नहीं। नाग प्रजाति का नाश होने से प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाएगा ।उनके समझाने पर यह यज्ञ नाग यज्ञ रोक दिया गया। यज्ञ रुकने के दिन पंचमी थी। तभी से ये पंचमी नागपंचमी के रूप में मनाई जाती है।

सर्प दंश से बचाता है आस्तिक मुनि का नाम

सावन के महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाया जानेवाला त्यौहार नागपंचमी दरअसल नाग को देवता मानकर उसकी पूजा करने का पर्व है। नाग पूजा के पीछे धार्मिक मान्यताएं हैं। देश के उत्तरी और मध्य राज्यों में प्रायः घरों में एक वाक्य दीवारों आदि पर लिखा रहता है- 'आस्तिक मुनि की आन है...।' सर्प भय से बचने के लिए यह वाक्य लिखा जाता है। जिन घरों में ज्यादा सांप निकलते हैं वहां ऐसा लिख दिया जाता है।

माना जाता है कि आस्तिक मुनि ने राजा जनमेजय के यज्ञ में जलने से नागों की रक्षा की थी। जनमेजय के नाग यज्ञ में जलने से बच जाने पर नागों ने आस्तिक मुनि और राजा जनमेजय से कहा कि जो लोग नागों की पूजा करेंगे, उनके घर में नाग या सर्प दंश का भय नहीं रहेगा। जो लोग आस्तिक मुनि का नाम भी बोलेंगे वे भी सर्पभय से बचे रहेंगे। जो अपने घर के बाहर आस्तिक मुनि का नाम लिखेंगे, उनके घर में सर्पों या नागों आदि का प्रवेश नहीं होगा।

आस्तिक एक ऋषि थे। वे जरत्कारु और मनसा के पुत्र थे। उनके मामा गणेशजी , कार्तिकेय जी और भगवान अय्यपा थे। उनकी मौसी देवी अशोकसुन्दरी और देवी ज्योति हैं और इनके मौसाजी राजा नहुष हैं द्य भगवान शिव और माता पार्वती इनके नाना -नानी लगते हैं।

गर्भावस्था में ही माँ कैलाश चली गई थीं और इनके नाना शंकर ने उन्हें ज्ञानोपदेश किया। गर्भ में ही धर्म और ज्ञान का उपदेश पाने के कारण इनका नाम आस्तीक पड़ा। महर्षि भार्गव से सामवेद का अध्ययन समाप्त कर इन्होंने अपने नाना भगवान शंकर से मृत्युञ्जय मन्त्र का अनुग्रह लिया और माता के साथ आश्रम लौट आए। पिता की मृत्यु सर्पदंश से होने के कारण राजा जनमेजय ने सर्पसत्र करके सब सर्पों को मार डालने के लिए यज्ञ किया। अन्त में तक्षक नाग की बारी आई। जब माता जरतकारु को यज्ञ की बात मालूम हुई तो उन्होंने आस्तीक को तक्षक की रक्षा की आज्ञा दी। आस्तीक ने यज्ञ मण्डप में पहुँचकर जनमेजय को अपनी मधुर वाणी से मोह लिया। उधर तक्षक घबराकर इंद्र की शरण गया। ब्राह्मणों के आह्वान पर भी जब तक्षक नहीं आया तब ब्राह्मणों ने राजा से कहा कि इन्द्र से अभय पाने के कारण ही वह नहीं आ रहा है। राजा ने आदेश दिया कि इन्द्र सहित उसका आह्वान किया जाए। जैसे ही ब्राह्मणों ने 'इंद्राय तक्षकाय स्वाहा' कहना आरम्भ किया, वैसे ही इंद्र ने उसे छोड़ दिया और वह अकेले यज्ञकुण्ड के ऊपर आकर खड़ा हो गया। उसी समय राजा ने आस्तीक से कहा तुम्हें जो चाहिए मांगो। आस्तीक ने तक्षक को कुंड में गिरने से रोककर राजा से अनुरोध किया कि सर्पसत्र रोक दीजिए। वचनबद्ध होने के कारण जनमेजय ने खिन्न मन से आस्तीक की बात मानकर तक्षक को मंत्रप्रभाव से मुक्ति दी और नागयज्ञ बन्द करा दिया। सर्पों ने प्रसन्न होकर आस्तीक को वचन दिया कि जो तुम्हारा आख्यान श्रद्धासहित पढ़ेंगे उन्हें हम कष्ट नहीं देंगे। जिस दिन सर्पयज्ञ बन्द हुआ था उस दिन पंचमी थी। अतः आज भी भारतीय उक्त तिथि को नागपंचमी के रूप में मनाते हैं। स्रोत-विकिपीडिया

बिजनौर : भगवा साफा पहन कर मजार फूंकी, अब जेल

कांवड़ यात्रा के दौरान बिजनौर के शेरकोट में सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश का मामला सामने आया है। पुलिस ने समय रहते दो युवकों को गिरफ्तार कर मामले को संभाल लिया। गिरफ्तार किए गए दोनों युवक मुस्लिम हैं, जो भगवा साफा पहन मजार में तोड़फोड़ करने पहुंचे थे। पुलिस के अनुसार, दोनों युवक आपस में भाई हैं। इस मामले में एडीजी एलओ प्रशांत कुमार ने बताया कि दो सगे भाइयों मोहम्मद कमाल अहमद औ मोहम्मद आदिल को पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही कर गिरफ्तार कर लिया गया है। सभी फील्ड अधिकारियों को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं।

एडीजी एलओ ने बताया कि बिजनौर के अंतर्गत थाना शेरकोट में पुलिस को रविवार की शाम ५ बजे सूचना मिली कि २ लोगों ने जलाल शाह की मजार पर तोड़फोड़ की है और कुछ चादर जलाईं हैं। पुलिस वहां पहुंची तभी सूचना मिली कि उसी थाना क्षेत्र में भूरे शाह की मजार पर भी आगजनी और तोड़फोड़ हुई है। वहां पुलिस पहुंची और २ लोगों कमाल और आदिल को गिरफ्तार किया, ये दोनों सगे भाई हैं। सूचना ये भी थी कि धार्मिक ग्रंथों को क्षति पहुंई गई है। धर्मगुरुओं के सामने जांच की गई तो पाया गया कि धार्मिक ग्रंथों को कोई क्षति नहीं पहुंचाई गई है।

जनपद बिजनौर थाना शेरकोट अंतर्गत मजारों में तोड़फोड़ कर साम्प्रदायिक सौहार्द बिगाडने का कुत्सित प्रयास करने वाले दो सगे भाइयों १. मो. कमाल अहमद २. मो. आदिल को जनपदीय पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही कर गिरफ्तार करने के सम्बंध में एडीजी एलओ श्री प्रशांत कुमार की बाईट। मां ने कहा- बेटों ने गलत किया, सजा मिलनी चाहिए

अभियुक्तों ने बताया कि शेरकोट कस्बे में ११:३० बजे कुतुब शाह की मजार पर भी तोड़फोड़ की थी, जो संज्ञान में नहीं आई। एडीजी ने कहा कि घटना दर्शाती है कि कांवड़ यात्रा के दौरान माहौल खराब करने की कोशिश की जा रही है। सभी फील्ड अधिकारियों को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं। इस पूरे घटनाक्रम के बाद आरोपियों की मां ने कहा बेटों ने गलत हरकत की, उन्हें इसकी सजा मिलनी चाहिए।

अरब देशों से जुड़े आरोपियों के तार

बिजनौर मजार कांड की जांच एनआईए करेगी। पुलिस सूत्रों के मुताबिक मजार कांड के तार अरब देशों से जुड़ रहे हैं। सूत्रों ने बताया कि आरोपी कमाल का कनेक्शन कुवैत से है। अरब देशों से आरोपियों के तार जुड़ने के बाद खुफिया एजेंसियां अलर्ट पर हैं। इस मामले में एनआईए की टीम आज आरोपियों के घर जा सकती है। बता दें कि बिजनौर में मुस्लिम समुदाय के दो युवकों ने भगवा पगड़ी पहनकर मजार में तोड़फोड़ की थी। इसके बाद आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था।

बता दें कि बिजनौर जिले के शेरकोट इलाके में मजारों पर तोड़फोड़ और आगजनी करने के आरोप में दो सगे भाइयों को गिरफ्तार किया था। पुलिस अधीक्षक दिनेश सिंह ने बताया कि शाम लगभग साढ़े चार बजे शेरकोट थाना क्षेत्र के हरेवली मार्ग पर स्थित जलाल शाह की मजार पर कमाल और उसके भाई आदिब ने तोड़फोड़ कर चादरें और पर्दे जला दिए। उन्होंने बताया कि कुछ वक्त के बाद पता लगा कि इन दोनों ने घोसियावाला इलाके में स्थित एक और मजार पर भी ऐसी ही वारदात अंजाम दी है।

मामले की जानकारी देते हुए एडीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार ने बताया था कि ये दोनों युवक कांवड़ यात्रा के बीच माहौल खराब करने की कोशिश कर रहे थे। बताया जा रहा है कि आरोपियों की मंशा ये थी वारदात को अंजाम देने का आरोप कांवड़ियों पर मढ़ दिया जाएगा। लेकिन समय रहते पुलिस ने बड़ी साजिश को नाकाम कर दिया। एडीजी ने पुलिस अधिकारियों को और सतर्क रहने का निर्देश दिया है।

साहित्य की रजिया गुंडों में फस गई है

चरम सुख को तो पुरस्कार का चरमसुख मिला मगर चरमसुख समर्थकों को क्या मिला? बाबाजी का ठुल्लू। बाकी को क्या मिला यह तो वही जाने। बहरहाल सारी लेखिकाओं को देह ज्ञान, देह दान, देह भोग पर लिखने पर मजबूर किया जा रहा है। देह ज्ञान-बखान वालियों को शीर्ष पर रखकर ये असफल या सफल प्रयास किया जा रहा है। अभी कुछ दिन पहले हंस ने देह पर नया-नया उत्पन्न घटिया ज्ञान कहानी के नाम पर लिखा हुआ छापा था। जिसमें स्त्री बीस हजार देकर पुरुष के साथ सिर्फ सोती है सिर्फ का मतलब सिर्फ ही है। कहानी का अंत फिर से उसे बुलाने पर किया है। ये कौन से ग्रह की औरतें लिख रहे हैं। गढ़ रहे हैं यही जानें। साहित्य के ठेकेदारों द्वारा लेखक औरतों को किस तरफ धकेला जा रहा है।

डॉ. पुष्पलता

राजा नुहुष के छह पुत्र याति, ययाति, सयाति, अयाति, वियाति, कृति थे। नुहुष ने ययाति को राजा बनाया। दैत्यराज वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा और दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी निवस्त्र जल में स्नान कर रही थी। भोले-पार्वती के आने पर लज्जावश वस्त्र पहनकर भागी तो शर्मिष्ठा ने जल्दी में देवयानी के वस्त्र पहन लिए। देवयानी ब्राह्मण राजपुत्री थी। उसने शर्मिष्ठा का अपमान किया कि मैं ब्राह्मण हूँ मेरे वस्त्र पहनने की हिम्मत कैसे की। शर्मिष्ठा ने देवयानी से वस्त्र छीन उसे कुएं में गिरा दिया। राजा ययाति पानी के चक्कर में कुएं के पास आये देवयानी को अपने वस्त्र दिए और बाहर निकाला साथ में उसके साथ कुकर्म भी किया। यद्यपि कथा में देवयानी ने प्रेमपूर्वक मेरा भोग कर लो निवेदन किया लिखा है। लिखा है कि आपने मेरा हाथ पकड़ा मैं आपको पति स्वीकार करती हूँ अगर शादी के बाद कोई हाथ पकड़ ले क्या सबको पति स्वीकार कर लेना चाहिये। अंधे को क्या चाहिये दो नैन। व्यभिचारी को नग्न स्त्री मिले वह उसे कैसे छोड़े चाहे राजा ही क्यों न हो। राजाओं के हरम में तो हजारों को कुकर्म करने को रानियों के टैग लगाकर रख लिया जाता था। देवयानी की बात सुन शुक्राचार्य क्रोधित हुए मगर राजा ने मना लिया। वह बोले मेरी पुत्री को मनाना होगा। राजा ने देवयानी से कहा तुम जो कहो वह तुम्हें प्रदान करूँगा वह बोली तुम्हारी पुत्री को मेरी दासी बनना होगा। देवयानी नुहुष की पत्नी बनी शर्मिष्ठा दासी। कथा में आगे भी यही लिखा कि शर्मिष्ठा भी बोली मेरा भी भोग कर लो उसने कर लिया। यहाँ कहानी गढ़ने वाला स्त्री से कहलवा रहा है। बाद में पोल खुली तो शुक्राचार्य ने नहुष को शाप दिया तुम लंपट व्यभिचारी हो और फिर यह कहने पर कि तुम्हारी पुत्री का और भोग करना हैं इसमें तुम्हारी पुत्री का भला है। शुक्राचार्य बोले जब कोई तुम्हें अपनी जवानी दान करेगा तब तुम शाप से मुक्त हो जाओगे। इसके बाद नुहुष भोग विलास के लिए अपने पुत्रों से जवानी माँगने लगा। बाकी ने मना कर दिया मगर छोटे ने देकर उसका बुढापा धारण किया एवज में उसने उसे राजा बनाया और वह भोग में लिप्त हो गया। ऐसी घटिया, गंदी, बेतुकी कहानियों उनके भीतर के इस व्यभिचार पर लिखे उपन्यास पर सब जजेज लट्टू हुए। चरमसुख को इसके लिए पुरस्कार का चरम सुख दिया। ये वही चरमसुख है जिसने हाल ही में स्त्री को घर के बाहर चरम सुख खोजने का हक है पोस्ट लगाई थी। चरम सुख का विरोध करने वालियों के लेखन को पुरुष क्यों पसंद करेंगे। स्त्रियाँ चरम सुख घर की इज्जत की झंडियाँ लटकवाकर बाहर खोजो अभियान चलाएंगी तभी तो उनके लिए अवेलेबल होंगी। खुशवंत ने कहा था वृद्धावस्था में पुरुषों के दिमाग में सेक्स चढ़ जाता है। उन तीन जजेज को तो इस गंदे लिजलिजे यौन संबंधों से सिक्त विषय- कहानी पर लिखे उपन्यास में इसलिए मजा आया होगा। मगर महिला ने उसे पसंद क्यों किया उसका भी विशेष कारण बताया जा रहा है कि ये एक राजनीति थी चरम सुख के साथ सुलह होने से उसकी चरमसुख समर्थक टीम जो विरोध में नगाड़े बजा रही थी साथ आ सकती थी। यद्यपि उसका कारण दूसरा था चरम सुख से उनका झगड़ा हुआ था। अतः इस राजनीति के तहत चयन हुआ ऐसा अनेक विश्लेषकों का विश्लेषण है। कुछ का कयास है, ये भी हो सकता है महिला की कुछ खास चली न हो उन्होंने चढ़ती छान पर हाथ लगाकर क्रेडिट लेने में ही भलाई समझी हो। चरम सुख को तो पुरस्कार का चरमसुख मिला मगर चरमसुख समर्थकों को क्या मिला? बाबाजी का ठुल्लू। बाकी को क्या मिला यह तो वही जाने। बहरहाल सारी लेखिकाओं को देह ज्ञान, देह दान, देह भोग पर लिखने पर मजबूर किया जा रहा है। देह ज्ञान-बखान वालियों को शीर्ष पर रखकर ये असफल या सफल प्रयास किया जा रहा है। अभी कुछ दिन पहले हंस ने देह पर नया-नया उत्पन्न घटिया ज्ञान कहानी के नाम पर लिखा हुआ छापा था। जिसमें स्त्री बीस हजार देकर पुरुष के साथ सिर्फ सोती है सिर्फ का मतलब सिर्फ ही है। कहानी का अंत फिर से उसे बुलाने पर किया है। ये कौन से ग्रह की औरतें लिख रहे हैं। गढ़ रहे हैं यही जानें। साहित्य के ठेकेदारों द्वारा लेखक औरतों को किस तरफ धकेला जा रहा है। ये समाज के अच्छे स्वस्थ लेखन प्रिय लोगों को संज्ञान लेने की आवश्यकता है मगर वे चुप हैं। कोई भी इन बिल्लो-बिल्लियों के गले में घंटी नहीं बांधना चाहता। हंस तो कहने को हंस रहा था सुना है उसका तो ऑफिस तक उन्होंने शराब खोरी और अय्याशियों का अड्डा बना रखा था। वहाँ जो साहित्य के क्षितिज पर पेटिकोट टेंट की तरह लहरा रहे थे आज पूरे हिंदुस्तान पर लहराने की चेष्टा चल रही है। सवाल सिर्फ लेखन का नहीं ये हर क्षेत्र में हो रहा है। वैदेहियों, उर्मिलाओं, अहल्याओं पर ये रँभाएँ, मेनकाएँ, उर्वशियाँ, गणिकाएँ भारी पड़ रही हैं। ये गणिका युग हो गया है।

शीर्ष पर चढ़ गए लोगों ने सारे उड़ते पेटिकोट, उतरने को आतुर जीन्स-स्कर्ट, शॉर्ट्स कल्पनाओं में निकालकर उस क्षेत्र के टेंट पर ऊपर टँगा दिए हैं। स्वस्थ लेखन को डस्टबीन में ठूसने का सामूहिक प्रयास चल रहा है। साहित्य की रजिया गुंडों में फस गई है। हम सब वैदेहियों की आत्महत्याएँ, स्त्री का त्याग, समर्पण, तपस्या, चरित्र, महानता, अधिकार चेतना जागरूकता, जिजीविषा, आजादी आत्मनिर्भरता लिखते, उसके लिए लड़ते रह गए। अहल्याओं की शिलाएँ, उर्मिलाओं का वनवास यशोधराओं का बुद्धत्व, राजुल का सन्यास, द्रोपदियों की यंत्रणाएँ उकेरते रह गए। वे भोग-संभोग लिखकर, रंभाओं मेनकाओं, उर्वशीयों के गुप्त अंग-दृश्य दिखाकर-देखकर लिख-पढ़कर चरमसुख देते-पाते रहे। इसी में स्त्री की आजादी बताते रहे। इसके लिए वे अतीत से ऐसे कामुक स्त्री पुरुष नायक-नायिकाएँ उठाते रहे हैं। उसके माध्यम से अपनी और उनकी लिजलिजी कामवासना परोसते रहे हैं। जिसे पढ़कर चरम सुख की तलाश में भटकते काम पिपासु पिस्सू साहित्य का लहू पीकर उन्हें चरम सुख देकर चरम सुख पाते रहे हैं। ऐसे लोग साहित्य के जिस्म पर चिपट कर जोकों की तरह उसका लहू पी गए हैं। इन पिस्सुओं-जोकों और इनके वरदहस्त देने वाले मगरमच्छों से इनके मरने के बाद भी पिंड नहीं छूटने वाला क्योंकि इन्होंने साहित्य के समंदर में अनेक अपने जैसे मगरमच्छ और जोकें तैयार कर दी हैं।

लागू होने से अब तक आरटीआई एक्ट के दुरुपयोग की कोई जानकारी नहीं

देश में पारदर्शिता युक्त शासन व्यवस्था एवं भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाने के लिए १२ मई २००५ को सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ (आरटीआई कानून) संसद में पारित किया गया जिसे १५ जून २००५ को राष्ट्रपति की अनुमति मिली और अन्ततः १२ अक्टूबर २००५ को यह कानून जम्मू-कश्मीर को छोड़कर पूरे देश में लागू किया गया। तब से अब तक की साढे सोलह वर्ष से अधिक की अवधि में जन सूचना अधिकारियों, प्रथम अपीलीय अधिकारियों, सूचना आयुक्तों के साथ-साथ मांगी गई सूचना से प्रभावित पक्षों के द्वारा इस सूचना कानून के दुरुपयोग की बातें आये दिन कही जाती रही हैं लेकिन लखनऊ निवासी नामचीन समाजसेविका और तेजतर्रार आरटीआई एक्टिविस्ट द्वारा बीती ११ जुलाई को भारत सरकार में आरटीआई के मामलों के नोडल विभाग, कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) में दायर की गई एक आरटीआई अर्जी पर डीओपीटी के केन्द्रीय जन सूचना अधिकारी (सीपीआइओ) और अनु सचिव (आईआर.२) पवन कुमार द्वारा बीती १५ जुलाई को दिए गए जवाब से अब यह बात सामने आ गई है कि देश में आरटीआई एक्ट लागू होने से अब तक की साढे सोलह वर्ष की अवधि में इस एक्ट के दुरुपयोग की कोई भी सूचना भारत सरकार के रिकार्डों में नहीं है।

बताते चलें कि उर्वशी ने भारत में सूचना कानून लागू होने से अब तक की अवधि में आरटीआई आवेदकों द्वारा सूचना कानून का दुरुपयोग किये जाने के विषय पर ६ बिन्दुओं की सूचना भारत सरकार के डीओपीटी के रिकॉर्ड के आधार पर मांगी थी। उर्वशी ने जानना चाहा था कि अन्य लोगों को ब्लैकमेल करने,अन्य लोगों से धन उगाही करने, अन्य लोगों को मानसिक आदि रूप से परेशान करने के लिए आरटीआई कानून का दुरुपयोग करने के मामलों की संख्या उन्हें बताई जाए। सूचना कानून के दुरुपयोग की यदि कोई विशिष्ट जानकारी हो तो उसको जानने के साथ-साथ सूचना कानून के दुरुपयोग पर भारत सरकार द्वारा की गई दंडात्मक कार्यवाही और भविष्य में दुरुपयोग रोकने के लिए भारत सरकार द्वारा की गई कार्यवाहियों की सूचना भी उर्वशी ने मांगी थी। इनके जवाब में पवन ने उर्वशी को बताया है कि उनकी आरटीआई अर्जी के बिंदु संख्या १ से ६ द्वारा मांगी गई सूचना जवाब देही सीपीआइओ के पास उपलब्ध नहीं है।

लम्बे समय से आरटीआई कानून का प्रचार प्रसार करने के साथ-साथ इस कानून का प्रयोग जनहित में करने वाली और डीओपीटी से आरटीआई के लिए 'ए' ग्रेड सर्टिफाइड आरटीआई विशेषज्ञ उर्वशी शर्मा का कहना है सूचना का अधिकार अधिनियम, २००५ के दुरुपयोग से बचने के लिए आरटीआई कानून में पहले से ही व्यवस्था दी गई है। उर्वशी कहती हैं आरटीआई के तहत जानकारी मांगने का अधिकार निरंकुश नहीं है क्योंकि दुरुपयोग से बचने के लिए आरटीआई एक्ट में धारा ८ है जो कि कुछ सूचनाओं का खुलासा करने से छूट प्रदान करता है, धारा ९ है जो कि कुछ मामलों में सूचना नहीं देने का आधार है, धारा-११ के तहत थर्ड पार्टी से संबंधित जानकारी नहीं दी जा सकती और धारा २४ के मुताबिक ये कानून कुछ संगठनों पर पूरी तरह से लागू नहीं होता है।

उर्वशी कहती हैं कि यह आरटीआई खुलासा देश के करोड़ों आरटीआई प्रयोगकर्ताओं की तरफ से ऐसे सभी लोगों के लिए करारा जवाब है जो मौखिक रूप से कहते हैं कि लोग आरटीआई कानून का दुरुपयोग करते हैं और अन्य लोगों को परेशान करने के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं।

नोट - सम्बंधित आरटीआई अर्जी और आरटीआई का जवाब वेबलिंक https://upcpri.blogspot.com/2022/07/blog&post_26-html से निःशुल्क डाउनलोड करके निःशुल्क प्रयोग किया जा सकता है।

साक्षात्कार और खबरों के चैनल को सबस्क्राइब करें

सर्च करें : ओपन डोर न्यूज

Subscribe

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय आपराधिक समाचार-पत्र

ओपन डोर न्यूज
यूट्यूब चैनल
हेतु
आवश्यकता
है प्रतिनिधियों
की

‘मन की तुरपाई’ का विमोचन और काव्य गोष्ठी

रेखा भाटिया

नॉर्थ कैरोलाइना के कवियों का शिवना प्रकाशन से आए साझा काव्य संग्रह ‘मन की तुरपाई’ का विमोचन किया जाना था। साथ में एक कविता गोष्ठी का भी आयोजन कर लिया गया, काव्य संग्रह के भागीदारी कवि और कुछ अन्य कवियों के साथ। अमेरिका में पिछले तीस वर्षों से मोर्रिस्विल और कैरी शहर, नॉर्थ कैरोलाइना में कविता गोष्ठियों का आयोजन होता आया हैय जिसकी शुरूआत प्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक सुधा ओम ढींगरा ने की थी और पिछले कुछ वर्षों से विधिवत् इस का नाम ‘नॉर्थ कैरोलाइना साहित्यिक मंच’ रखा गया है। १७ जुलाई २०२२ को इस विशेष कविता गोष्ठी का आयोजन मंच के महत्त्वपूर्ण सदस्य अमृत वधवा के निवास स्थान पर हुआ। इस गोष्ठी का संचालन सुधा ओम ढींगरा ने किया।

‘ऊँची नीची सब चट्टानों से जुदा हो जाएगा,
जब तराश कर कोई भी पत्थर खुदा हो जाएगा।’

अतीक इलाहाबादी के इस शेर के साथ सभी उपस्थित कवियों का गर्मजोशी से स्वागत कर सुधा जी ने सबसे पहले बिंदु सिंह को मंच पर आमंत्रित किया। बिंदु सिंह ने ‘कुकिंग शुंकिग जिंदगी’ और ‘प्यार का दूसरा नाम’ दो कविताएँ पढ़ीं। बिंदु सिंह की कविताओं में जीवन के यथार्थ के साथ खट्टे, मीठे, नमकीन स्वाद का जायका, प्यार का मिश्रण और अनुभवों का तीखापन था। दिल को छूती भावुक कविताओं के साथ गोष्ठी की शुरूआत में ही श्रोताओं के हँसी-ठहाके और भीगी मुस्कराहटें घुलमिल गई।

इसी हल्के-फुल्के साहित्यिक माहौल में सुधा जी ने मंच के नए लेखक सुरेंद्र कौशिक ‘निर्मोही’ को उनकी कविता पढ़ने का न्योता दिया। सुरेंद्र कौशिक ने अपनी दो गजलें ‘यह कौन चाहता उसे मौज-ए-बला मिले, राह-ए-सफर में बावफा भी बेवफा मिले’ और ‘खुश्बू मेरे वतन की ले आती हवाएँ भी, पर जगमगाहटें यहाँ की दिल लुभाएँ भी’ प्रस्तुत की। यह एक बहुत सुखद अहसास है बहुत ही अल्प समय में सुरेंद्र कौशिक बेहतरीन गजलें लिखने लगे हैं।

‘लचक- लचक कर अपने समन्द्र के संग वो लौट गई,
जो मैंने मौज से पूछा तू कहाँ से आई।’

दानिश के शेर के साथ सुधा जी ने आमंत्रित किया चरनजीत लाल को। चरनजीत जी ने ‘प्रिय’ शीर्षक से गीत, ‘प्रिय तुम मेरे जीवन सर में सुरभित सरस सरोज खिलाना, पँख पसारे जो कुटिल यामिनी किरण पुंज बन तिमिर मिटाना’ को प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं का मन मोह लिया-

‘सबूत मेरे घर में धुएँ के ये धब्बे हैं,
कभी यहाँ पे उजालों ने खुदकुशी की है।’

महान् कवि गोपालदास नीरज के शेर से सुधा जी ने युवा कवि आराधना अग्रवाल को उनकी कविता पेश करने बुलाया। उनकी कविता ‘क्या कानून अँधा है’ के चंद भाव, ‘पड़ोस के लोग देख-देखकर ले रहे थे मजा, पर मेरे दिमाग में एक ही प्रश्न था वह यह कि कौन से अधिनियम में लिखा है निर्दोषों को सजा।’ जीवंत वृत्तांत को दर्शाती कविता को नए अंदाज में जोश के साथ आराधना ने पेश

कर श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी।
अब कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया अगले कवि अमृत वधवा को। अमृत जी ने 'माँ धरती से क्यों छल करें' कविता प्रस्तुत की। 'माँ से बढ़कर धरती है, इससे न कोई करे इंकार।'
'लेकिन हे मानव, क्यों न करे इसका तू सत्कार, इस धरती की कदर कर, अपने वंश से दुआ पाएगा।' समसामयिक कविता को श्रोताओं का ढेर सारा प्यार मिला। प्रकृति की खूबसूरती और ग्लोबल वार्मिंग की वजह से नष्ट होती उसकी खूबसूरती का दर्द और चिंता कविता के मुख्य संदेश थे।
'किसी के जख्म को मरहम किया है गर तूने,
समझ तूने खुदा की बंदगी की है'
गोपालदास नीरज के शेर को पढ़कर सुधा जी ने मंच पर स्वागत किया उषा देव का।
उषा जी की रचनाएँ चंचल भी होती हैं और उदास भी करती हैं। उषा जी ने दोस्तों को समर्पित कविता 'सहारा' का पाठ किया। उषा जी ने दूसरा गीत 'कसक' पेश किया। 'जो कसक तुम्हारे दिल में है, क्यों जमाने भर का गम लिए जीते हो औरों के लिए।', तीसरी कविता पेश की 'क्यों पीते हो।' उषा जी के सुन्दर गायन ने श्रोताओं को बाँध लिया।
'जंगलों की तरफ निकल चलिए , जिंदगी राह देखती होगी, ये परिंदों का शोर कहता है, कोई बस्ती उजड़ गई होगी' सर्वत नवाज के शेर के साथ सुधा जी ने रेखा भाटिया को बुलाया। रेखा भाटिया ने पहली कविता 'कुछ समझ नहीं आता' पढ़ी।
'क्यों तेरा अहं मेरा अंह आज भी लड़ते हैं, समझ नहीं आता, वादा तो आत्माओं के मिलन का किया था' और बंटवारे पर दूसरी कविता 'बंटवारा तो बहुत पहले हुआ था, पलायन करने से पहले, एक दर्दनाक शाम घिर आई थी, कहीं किसी अँधेरे में छिपी इंसानियत दम तोड़ रही थी' पेश की। यथार्थ कहती कविताओं ने श्रोताओं को गमगीन कर दिया।
कार्यक्रम को आगे बढ़ाते अब बारी आई गीता कौशिक रत्न की। गीता जी ने दो कविताएँ पेश की 'पुलकित मन' और 'मनोव्यथा' 'चलती हो सर-सर पवन लहर। परिवेश में जब मुस्कान भरे और 'आकुल-व्याकुल अनुरागी मन। बूँद-बूँद कर उमड़ रहा हो' उनका मोहक अंदाज हर बार श्रोताओं का मन जीत लेता है।
'कुछ करने कुछ कर दिखलाने की बातों को जाने दो, बातों ही बातों में तोड़ लाते हैं आकाश के तारे लोग।'
'फूलों में ही रस होता है जहर नहीं होता हरगिज,
जहर बुझी बातें करते हैं क्यों फूलों से प्यारे लोग' राणा गावाऊदी के शेर के साथ सुधा जी ने कुसुम नैपसिक को बुलाया। कुसुम जी ने 'मेरा शहर' कविता पढ़ी। 'जब जाती हूँ अपने शहर, यादों का सूटकेस लिए तो कुछ बदली-सी नजर आती है मेरे शहर की रंगत' सभी श्रोता अपने-अपने भारत निवास की यादों में खो गए।
'जिन्दगी ठोकरें खाती है बिछड़ कर तुझसे ,
तेरी पाजेब के टूटे हुए घुँघरू की तरह' नूर लखनवी के मशहूर शेर के साथ सुधा जी ने न्योता दिया अफरोज ताज को। अफरोज जी के लिए शायरी साधु की तपस्या है। 'अपना किरदार आइना कर लो ,साँप शीशे पर चल नहीं सकता' अफरोज जी का एक शेर। उनके शेर और दोहे बहुत पसंद किये जाते हैं। उनमें तंज और हास्य होता है जो हँसाता भी है और सच्चाई से रूबरू करा सोचने पर मजबूर भी करता है। एक गीत 'अगर दुनिया तेरी खुशियों से ही महकी हुई' को अफरोज जी ने गाकर प्रस्तुत किया।
अब आईं मीरा गोयल, जिनकी कविताओं में अध्यात्म, दर्शन, प्रकृति की सुंदरता की झलक होती है, उन्होंने अपनी कविता 'जीवन' प्रस्तुत की, 'अपने मन से जानिए पराये मन का हाल', 'यह जीवन है संतरंगी भावनाओं से ओतप्रोत' वे हमेशा मीठी-सौम्य आवाज में कविता प्रस्तुत करती हैं।
'वादा वफा किया है किसी ने बहार में, दोनों जहाँ हैं आज तेरे इख्तयार में। चहरे से अपने पर्दा उठएगी जिंदगी, सदियाँ गुजर गई इसी इंतजार में' सुदर्शन फाकिर के शेर को पढ़ सुधा जी ने आमंत्रित किया जगदीश गुजराल को। वे चुन-चुनकर खुबसूरत कविताएँ श्रोताओं के लिए लाते हैं। उनकी पहली पेशकश थी जायदाद, 'तनहा बैठा था मैं अपने मकान में, चिड़िया बना रही थी घौंसला रोशनदान में' और दूसरी कविता उन्होंने पंजाबी में पेश की, जिसे सभी ने खूब सराहा।
अगली पारी में जॉन काल्डवेल को आमंत्रित किया गया। इस बार जॉन जी ने उनके लिखे दोहे सुनाकर सबको अचंभित कर दिया। उनका दोहा, 'रोड पर लिखा मिला, समझे स्पष्ट निशान, सृष्टि पुस्तक तो पढ़ो तब पाओगे ज्ञान' और अन्य दोहों को खूब प्रशंसा मिली।
अंत में कार्यक्रम की संचालक सुधा ओम ढींगरा को आमंत्रित किया गया। 'बरामदे की चौखट के कोने में, पाईन स्ट्रा के तिनके-तिनके बीन कर, सुनहरी चिड़ियों के बनाए घोंसले से, भूख, प्यास से व्याकुल बिलखते, उनके बच्चों का शोर तोड़ रहा था, अलसाए मन का मौन और सन्नाटे में डूबी, गर्मियों की दुपहरी।' सुधा जी ने अपनी पहली कविता सुनाई। 'वो सम्मुख रहे, न बुलाया हमनें, दूर हो गए जब, न भुलाया हमने' सुधा जी ने दूसरी एक गीतिका प्रस्तुत की। 'हृदय के उदगार जब डसने लगे, कसक को सीने से लगाया हमने' श्रोताओं ने उनकी रचनाओं का जोरदार स्वागत किया।
'नॉर्थ कैरोलाइना साहित्यिक मंच' भारत के विभिन्न प्रांतों से आए प्रवासी भारतीय कवियों का एक समूह है और सभी कवि सभी हिन्दी के प्रेमी हैं।
सुधा ओम ढींगरा के अथक प्रयास, प्रोत्साहन और समर्पण का परिणाम है कि नॉर्थ कैरोलाइना के कवियों का अलग-अलग विधाओं में छपा अपनी तरह का पहला कविता संग्रह 'मन की तुरपाई' शिवना प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किया गया है । ४ जून २०२२ को सीहोर, भारत में उसका विमोचन किया गया था। इस संग्रह में हिंदी-उर्दू का रस, दोहों-गजल-कविताओं-अनुदित कविताओं-गीतों का रस, सुधा ओम ढींगरा का सुघड़ संपादन है और इस समिश्रण से सजा कवियों की कविताओं का संग्रह है। इस बार की गोष्ठी में कई श्रोता शामिल हुए, कुछ नए कवि जुड़े।
अंत में सभी कवियों, श्रोताओं और संपादक सुधा ओम ढींगरा की उपस्थिति में वेक फारेस्ट यूनिवर्सिटी के हिन्दी-उर्दू के प्रोफेसर पीटर नैपसिक द्वारा 'मन की तुरपाई' कविता संग्रह का विमोचन किया गया। सभी कवि अत्यंत उल्लास, उमंग और उत्तेजना से भरे थे, कइयों के लिए उनकी किसी पुस्तक के प्रकाशन का यह पहला सुअवसर था। विमोचन के बाद फोटो शूट हुआ और खानपान का सभी ने भरपूर लुत्फ उठाया। शिवना प्रकाशन की किताब 'मन की तुरपाई' बहुत आकर्षक बनकर आई है, सभी ने उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा और सभी कवियों ने शिवना प्रकाशन को बहुत बधाइयाँ दी । अंत मीठी -मीठी स्मृतियों और अपनी-अपनी पुस्तक की प्रतियाँ प्राप्त कर सभी ने प्रस्थान किया।

स्रोत- सुधाओम ढींगरा की वाल

RNI UPHIN/2018/77444 ISSN 2582-1288
शोधादर्श
संदर्भित एवं समीक्षित शोध आलेखों की त्रैमासिक पत्रिका

बिजनौर जनपदवासियों
के लिए
होगा यह विशेषांक

बिजनौर
विशेषांक

क्या आप बिजनौर विशेषांक में अपने संस्थान का विज्ञापन देना चाहते हैं अथवा बिजनौर से संबंधित कोई ऐतिहासिक जानकारी आपके पास है? तब आप संपर्क करें

Email-
shodhadarsh2018@gmail.com

Mob- 9897742814

श्रीमती द्रौपदी मुर्मू बनी महामहिम

तरुण विजय

राष्ट्रपति पद पर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के पदासीन होने से देश के उस वर्ग में व्यक्तिगत हर्ष व्याप्त हुआ है जो अभी तक उपेक्षित, असंरक्षित और विदेशी आक्रमणों का शिकार होता आया है। हम सबको जो जीवन में जनजातीय क्षेत्रों में काम करते रहे, उनके मध्य एकरस राष्ट्र के भाव को फैलते हुए उनके आर्थिक सामाजिक उन्नयन में जुटे रहे वे जानते हैं जनजातीय समाज को किन खतरों, घृणा युक्त एकाकीपन और विदेशी धन से धर्मान्तरण के हमले झेलने पड़े। द्रौपद मुर्मू उस दर्द और विषाद पर सत्य और धर्म की विजय का प्रतीक और हर्ष का कारण बनी हैं।

ग्यारह प्रतिशत के लगभग हमारा जनजातीय समाज है- और देश में ६८ प्रतिशत आतंकवाद, विद्रोह और विदेशी धन का खेल इसी क्षेत्र में होता है। देश के स्कूलों में कभी भी जनजातीय वीरों की महँ गाथाओं को पढ़ाया नहीं गया, जाननजातीय वीर विशेषांक १६८१ में सम्पादित किया गया था और देश के विभिन्न भागों में जाकर उनकी कथाएं एकत्र की थीं, चक्र बिश्रोई से लेकर बिरसा मुंडा और केरल के परसी राजा से लेकर अल्लुरी सीताराम राजू, नागा रानी गाईदिन्ल्यू, खासी योद्धा यू तीरथ सिंग, सिद्धो कान्हो चाँद और भैरो, मानगढ़ की पहाड़ी के वीर भील योद्धा जिन्होंने गोविन्द गुरु के नेतृत्व में अपनी जीवनाहुति दी (१७ नवम्बर १६१३) जैसी सहस्त्रों कथाएं हमारे देश में बिखरी पड़ीं हैं। लेकिन सेकुलर वामपंथी इतिहासकारों ने उनको कभी देश के सामने देशभक्त प्रतापी पराक्रमी मेधावी समाज के नाते प्रस्तुत नहीं होने दिया। प्रथम बार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक परम पूज्य गुरुजी (माधव सदाशिव गोलवलकर) ने १६५२ में वनवासी कल्याण आश्रम की कल्पना की और संगठन खड़ा कर जनजातीय समाज के मध्य देश का सबसे बड़ा अर्थी सामाजिक सांस्कृतिक विकास का उद्यम प्रारम्भ किया। उन्होंने देश के अन्य भागों में रह रहे नागरिकों को अपना सर्वस्व जनजातीय समाज के लिए अर्पित करने का आह्वान किया और आज हजारों एम् ए, एम् टेक, एम् बीबीएस, एम् डी, इंजीनियर प्रचारक अंडमान से लेकर तवांग और ओखा से लद्दाख तक जनजातीय समाज में आर्थिक शैक्षिक विकास का कार्य कर रहे हैं।

आज गृह मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार जिन ४२ संगठनों को आतंकवाद और विद्रोही गतिविधियों के लिए प्रतिबंधित किया गया हैं उनमें से ३५ केवल जनजातीय क्षेत्रों में सक्रिय हैं। नागालैंड से अरुणाचल, मणिपुर से असम और छत्तीसगढ़, आंध्र से बिहार और बंगाल, राजस्थान से केरल के नीलगिरि क्षेत्रों में जो माओवादी, नक्सल-अति- कम्युनिस्ट संगठन, मणिपुर की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (नाम से कुछ ध्यान आया ?) जमात और इस्लामिक उग्रवादी संगठन- यह सब जनजातीय क्षेत्रों को अपना शिकार बनाना अधिक सरल और सुविधाजनक मानते हैं। विदेशी धन और चर्च के असीम निवेश से अधिकांश जनजातीय क्षेत्रों में धर्मान्तरण तीव्र गति से हुआ है। अंग्रेजों के समय यह कार्य शुरू हुआ होगा लेकिन सेक्युलर गणतंत्र में जनजातीय संस्कृति और धरम का अधिकतम ह्रास हुआ है। एक उदहारण अरुणाचल प्रदेश का ही है। श्रीमती इंदिरा गाँधी ने कभी मदर टेरेसा को अरुणाचल आने की अनुमति नहीं दी। लेकिन बाद में ईसाइयत का कांग्रेस पर इतना असर हुआ कि पूरा अरुणाचल ईसाई धर्मांतरण का शिकार हो गया। अनेक गाँव ईसाई हो गए, अनेक मंत्री और गाँवों के प्रमुख धर्मान्तरित हो गए, सीमा तक चर्च पहुँच गए। अगला मुख्यमंत्री ईसाई होगा यह स्पष्ट घोषणा की गयी। अरुणाचल प्रदेश में कुछ वर्ष पहले स्थानीय मूल जनजातीय आस्था की रक्षा के लिए श्इंडीजीनियस फेथ विभाग खोला गया, ईसाई प्रचारकों ने इसका इतना तीव्र विरोध किया कि सरकार को इसका नाम बदलना पड़ा और अब इसे सिर्फ जनजातीय विभाग या इंडीजीनियस डिपार्टमेंट कहते हैं- फेथ शब्द से ईसाई धर्मान्तरित लाभ नहीं ले पाते थे लेकिन फेथ हटाने से ईसाई अल्पसंख्यक होने का और जनजातीय होने से एसटी वर्ग के फायदे भी उनको मिल जाते हैं। हिन्दू होना, जनजातीय होना घाटे का विषय है- अहिन्दु होना दुगुना लाभ देता है- यह कुव्यवस्था स्वतंत्र भारत की सामाजिक समरसता नीतियों पर एक प्रश्नचिन्ह हैं।

जनजातीय समाज का विकास भारत के समक्ष सर्वाधिक बड़ी चुनौती है। कई प्रदेश जनजातीय क्षेत्रों में व्याप्त आतंकवाद के कारण वामपंथी आतंकवाद प्रभावित घोषित किये गए हैं। देश के शहरी नागरिकों को इस बात का अहसास भी शायद काम होगा कि द्रौपदी मुर्मू जी और उनके सहजातीय जनजातीय समाज के करोड़ों लोग भारत की सीमाओं के प्रथम रखवाले हैं। वे केवल जनजातीय वीर नागरिक हैं जो लद्दाख, कश्मीर, जम्मू, हिमाचल, उत्तराखंड, जैसलमेर, सिक्किम, बिहार, नागालैंड, अरुणाचल से लेकर लक्षद्वीप और अंडमान तक, भारत की प्रथम सुरक्षा पंक्ति निर्मित करते हैं। कारगिल की घुसपैठ भी वहां के जनजातीय गडरिये ने बतायी थी, उत्तराखंड हिमाचल के गद्दी, भूतिए, टोलिया, मर्तोलिया से लेकर सिक्किम के बौद्ध, अरुणाचल के इदु मिश्मी, यही हमारे प्रथम रक्षक हैं, सेना बाद में आती है।

भगवन जगन्नाथ की भक्त, सामाजिक समरसता की प्रतीक द्रौपदी मुर्मू जी पर देश के इतने बड़ी समाज की आशाओं, अपेक्षाओं और सपनों का बोझ है। बोझ नहीं बल्कि जिम्मेदारी है। उनका विनम्र जीवन, सामान्य गृहस्थी, अति सामान्य पृष्ठभूमि, भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा में रचे पगे होना, इन सबकी परीक्षा का काल अब प्रारम्भ होता है। प्रशंसा तो पद की होती है, बड़े पद पर बैठने वाले में सबको सिर्फ गुण ही दिखते हैं। परन्तु आने वाले समय में कौन अब्दुल कलाम और राजेंद्र प्रसाद बनते हैं यह काल के गर्भ में छिपा होता है और पदासीन व्यक्ति की चौतन्य धारा की शक्ति ही बता पाती है। द्रौपदी मुर्मू ने देश में एक असामान्य हर्ष और आशा का संचार किया है। यह नरेंद्र मोदी की आंतरिक आध्यात्मिक गहराई का सुपरिणाम है। नरेंद्र भाई ने बचपन से जिस गरीबी और उपेक्षा का दर्द सहा है उसे वह भूले नहीं हैं, द्रौपदी मुर्मू जी का चयन और उन पर देश के विश्वास को टिकना यह मोदी युग का एक क्रन्तिकारी कदम है। यह सफल हो यही महादेव से प्रार्थना है।

(लेखक पूर्व सांसद और वरिष्ठ पत्रकार हैं और वर्तमान में एनएमए के चेयरमैन हैं)

परंपरागत ग़ज़ल के लिए हिंदी ग़ज़ल वरदान है!

हिंदी ग़ज़ल आमजन के हृदय को छू लेने की क्षमता रखती है! - डॉ. सविता सिंह नेपाली

प्रस्तुति
ऋचा वर्मा
(उपाध्यक्ष) एवं सिद्धेश्वर
(अध्यक्ष) भारतीय युवा साहित्यकार परिषद
मोबाइल -९२३४७ ६०३६५

पटना। 'ग़ज़ल यानी परंपरागत गजल के लिए समकालीन हिंदी ग़ज़ल एक वरदान है। और यह वरदान दिया है हिंदी ग़ज़ल को लोकप्रिय बनाने वाले कवि दुष्यंत कुमार ने। यह सर्वविदित है कि दुष्यंत कुमार के पहले हिंदी ग़ज़ल कि वह तल्खीपानी और विषयगत नवीनता देखने को शायद ही मिली हो। हालांकि गोपालदास नीरज की गीतिका को ग़ज़ल की लोकप्रियता का एक अलग पैमाना माना जा सकता है। किन्तु विशुद्ध हिंदी ग़ज़ल की जो बानगी दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में देखने को मिलती है, वह प्रायः हिंदी ग़ज़लों के इतिहास में दुर्लभ है।'

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वाधान में, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर, 'हेलो फेसबुक कवि सम्मेलन' के तहत सावन मौसम के अवसर पर एक रंगीन गीत ग़ज़ल का अखिल भारतीय आयोजन का संचालन करते हुए संस्था के अध्यक्ष सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया। मुख्य अतिथि डॉ. सविता सिंह नेपाली ने कहा कि समकालीन कविता की बोझिलता बहुत हद तक हिंदी ग़ज़ल ने दूर कर दिया है। हिंदी ग़ज़ल आम जन की भाषा में अभिव्यक्त होती है, इसलिए वह कविता की सबसे सशक्त विधा बन गई है। वह सहज सरल तो है ही आमजन के हृदय को छू लेने की क्षमता भी रखती है। साहित्य अपने विकास की रास्ता स्वयं ढूंढ लेती है। पत्र-पत्रिका कम पड़ने लगी, तब सोशल मीडिया ने इसे विस्तार दिया है, और वैश्विक फलक पर साहित्य का मूल्यांकन आज भी हो रहा है!

अपनी अध्यक्षीय भूमिका में डॉ. शरद नारायण खरे (मध्यप्रदेश) ने कहा कि उर्दू ग़ज़ल बेहद कठिन होने से आम आदमी की समझ के बाहर होती है। समझ में न आ पाने वाले जटिल उर्दू शब्दों से परिपूर्ण उर्दू ग़ज़ल काफी दुरुह होती है। इसी लिए हिंदी ग़ज़ल का उद्भव हुआ। मुख्य वक्ता ऋचा वर्मा ने कहा कि सपाटबयानी कविताएं कभी-कभी इतनी बोझिल हो जाती हैं कि पाठकों के समझ नहीं आतीं। ना इनमें भाव होते हैं ना गेयता सवहीं ग़ज़ल अपने अंदाज-ए-बयां के चलते लोगों में ख़ासकर युवा पीढ़ी में काफी लोकप्रिय है। इस अखिल भारतीय हेलो फेसबुक कवि सम्मेलन में, देशभर के नए पुराने कवियों की भागीदारी रही! डॉ. शरद नारायण खरे (म. प्र.) ने गीत गा रहा माह सुसावन, आसमान सुशोभित है बहुत दिनों के बाद धरा खुश, तबीयत आनंदित है!' अशोक अंजुम (अलीगढ़) ने मन जिस जगह लगा मैं उधर देर तक रहा, मुझ पर मोहब्बतों का असर देर तक रहा! विजयानंद विजय (बोधगया) ने बदरा बरसे बिजली चमके, उमड़ घुमड़ कर आया सावन! तृण तृण पर नवजीवन छाया कोटि-कोटि हर्षाया सावन। शैलजा सिंह (गाजियाबाद) ने वो जब बोलता है बहुत तौलता है, कसम से मेरा यार कम बोलता है! रशीद गौरी (राज.) ने रह गया है बस वफाओं का नाम आजकल!, एक दिखावा है दुनिया आम आजकल! विज्ञान व्रत ने सावन में सेहरा दिखे, ऐसा तेरा रूप! अपूर्व कुमार (हाजीपुर) ने आषाढ़ तो तरसा गया, है सावन तू मत तरसाना, वसुधा के सूखे कपोलों पे, रस की फुहार बिखरा जाना।

मधुरेश नारायण ने हरी चुनरिया ओढ़ के धरती सावन में इतराए! सिद्धेश्वर ने उजड़ा हुआ गांव है गांव में रोने वाला भी है!, आंसू है या बरसात का पानी यह समझने वाला कोई नहीं! मुरारी मधुकर ने होती थी गुलजार गांव की गलियां। सावन का सनपुरिया लाने वालों से खिल उठते थे, सभी बाग बगीचे। सच्चिदानंद किरण (भागलपुर) ने सावन बरसे रिमझिम बूंदाबांदी, प्रियतम मन हरसाए झम झमा झम!!

प्रियंका श्रीवास्तव शुभ्र ने विरहिनी सा उदास हुआ सावन, जल रहा धरती का तन मन! डॉ. शिप्रा मिश्रा ने क्या-क्या निर्मल करो विमा लोग मुंह के कुछ बंधन में फंसे हैं ऐसे! डॉ. संतोष मालवीय ने कोरोना के भर्ती पर गजब ढाया कहर है, गांव की गलियां चुप चुप सारा शहर है। रेखा भारती मिश्रा ने इन फ़िज़ाओं में है खुशबू, चांद भी आया उतर! संजीव प्रभाकर (गुजरात) ने बड़े दिन बाद आए हो बताओ हाल कैसा है,,?, बदसला साल को छोड़ो बताओ यह साल कैसा है? डॉ. अलका वर्मा ने कजरी गाओ सावन आया, जन-जन का मन हर्षाया! कालजयी घनश्याम (नई दिल्ली) ने सजन अगर साथ हो तो फूल बरसाता है यह सावन फूल बरसाता सध नीलम नारंग ने सावन के महीने में आया तीज का त्यौहार! वंदना सहाय ने कल ही बरसे हैं बादल और अभी चुप है, लगता है मन उनका अभी भी है भरा हुआ, वापस आएंगे फिर! श्रीकांत (झांसी) ने दीवारों के कान सुने थे दरवाजों के कान हो गए, हिस्ट्री खुली थाने में नेताजी महान हो गए! मीना कुमारी परिहार सावन में प्यार करूंगी, जी भरकर दीदार करूंगी। हमीद कानपुरी ने खास का इंतजार करते रहो कुछ जमाने से प्यार करते रहो! रामनारायण यादव (सुपौल) ने सावन की घटा घनघोर रिमझिम बरसा चहु ओर सखी वन में नाचे मोर! डॉ. सुनीता सिंह सुधा (वाराणसी) ने उमड़ घुमड़ घिर सावन का नभसे जल बरसाए!? राज प्रिया रानी ने हरि बोल ले आई देखो सावन की हरियाली, टपके घर की छतिया और आंगन पानी पानी! जैसी उम्दा गीत ग़ज़लों का पाठ किया!

इनके अतिरिक्त मीनाक्षी सिंह, केवल कृष्ण पाठक, अशोक कुमार, कीर्ति काले, पुष्प रंजन, वंदना सहाय, नीलम श्रीवास्तव, विजय कुमार मौर्य, नंद कुमार मिश्रा, हरि नारायण हरि, चाहत शर्मा, अंजना पचौरी, पुष्पा शर्मा, नीरज सिंह, संतोष मालवीय, दुर्गेश मोहन, डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय आदि की भी दमदार उपस्थिति रही।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक जौनपुर,
उ. प्र. -२२२१२६.
सचलभाष - ८३६७७८२६५४.
व्हाट्सअप - ८७६२२५७२६७

लघु-कथा

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
विद्योचित लाइब्रेरियन
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम
ऑफिस कॉम्प्लेक्स, नवा रायपुर (छ.ग.)
सचलभाष-९८२७६१४८८८

पंच से पक्षकार

हरिप्रसाद और रामप्रसाद दोनों सगे भाई थे। उम्र के आखिरी पड़ाव तक दोनों के रिश्ते ठीक-ठाक थे। दोनों ने आपसी सहमति से रामनगर चौराहे वाली अपनी पैतृक जमीन पर दुकान बनाने का सोचा, ताकि उससे जो आय हो उससे उनका जीवन सुचारू रूप से चल सके। दुकान का काम चल ही रहा था तभी हरिप्रसाद और रामप्रसाद के बीच कुछ बातों को लेकर विवाद हो गया और उनमें बातचीत होना बंद हो गया। जिससे उनकी दुकान का काम भी रुक गया। दोनों एक दूसरे पर खूब आरोप-प्रत्यारोप भी लगाने लगे। बढ़ते विवाद को देख उसे सुलझाने के लिए उनके पड़ोसियों ने मोहल्ले के कुछ लोगों को जुटाकर एक पंचायत बुलाई, परन्तु पंचायत के सामने भी दोनों आपसी विवाद को खत्म करने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। बल्कि एक दूसरे पर एक से बढ़कर एक आरोप-प्रत्यारोप लगाए जा रहे थे। पंचायत ने भी मामले को बढ़ते देख उन्हें कुछ दिनों के लिए एक-दूसरे से दूर रहने की कड़ी हिदायत दी जिससे उनका विवाद हिंसा का रूप धारण ना कर सके। इसके साथ ही पंचायत ने दुकान के बचे आधे-अधूरे काम को पूरा करने की जिम्मेदारी गाँव के पढ़े-लिखे एक व्यक्ति विनोद को दे दिया ताकि दोनों भाईयों के विवाद से उनके धन का नुकसान ना हो। हरिप्रसाद और रामप्रसाद ने भी विनोद को पंच परमेश्वर का दर्जा देते हुए दुकान के बचे हुए काम को पूरा करने के लिए विनोद के नाम पर सहमत हो गए।

प्रसिद्ध उपन्यासकार एवं कहानीकार मुंशी प्रेमचंद की कहानी पंच परमेश्वर की तरह यहाँ भी समाज में हरिप्रसाद का सम्मान उनके धन से तो रामप्रसाद का सम्मान उनके व्यक्तिगत अच्छे व्यवहार की वजह से लोगों में था। परंतु, शास्त्रों में कहा गया है कि कलयुग में मूर्ख, चोर और बेईमान आदमी अपने पद और धन के कारण समाज में श्रेष्ठ होगा और उसके प्रति लोगों का झुकाव जल्दी होगा। ठीक वैसे ही विनोद का झुकाव हरिप्रसाद की तरफ जल्दी हो गया। विनोद हरिप्रसाद के हर बातों का अमल दुकान के कार्यों में करता और यदि रामप्रसाद इसका विरोध करना चाहता तो उसकी बातों को अनसुना कर देता या रामप्रसाद को तीन-पांच पढ़ाकर उसकी बात टाल देता। कुछ दिन ऐसे ही चलता रहा और धीरे-धीरे रामप्रसाद को भी इस बात का एहसास होने लगा की वह ठगा जा रहा है और उसके साथ अन्याय हो रहा है। उसने इसके संदर्भ में विनोद से सीधा बात करना ही उचित समझा।

अगली सुबह खेत और घर के जरूरी काम निपटा रामप्रसाद विनोद के घर जा पहुंचा और कहने लगा- 'विनोद भाई, पंचायत की सहमति पर मैंने आपको पंच परमेश्वर माना है और इसलिए एक पंच के नाते आपसे निष्पक्ष न्याय करने की गुहार लगाने आया हूँ।' इतना सुनते ही विनोद गुस्से में रामप्रसाद को भला बुरा कहते हुए हरिप्रसाद के सामने उसकी तुच्छ औकात की बात करने लगा और हरिप्रसाद के तारीफों की पुल बांधने लगा। विनोद के इस स्वभाव और एक पक्षीय नजरिया को देखते हुए रामप्रसाद ने कहा- 'विनोद जी, आज भले ही मेरी आर्थिक औकात हरिप्रसाद से छोटी है, परन्तु हरिप्रसाद के चंद रुपयों के लालच में आपने अपनी औकात पंच परमेश्वर जैसे ऊँचे दर्जे से गिराकर एक पक्षकार के स्तर की बना ली।'

इतना सुनते ही विनोद के चेहरे का रंग उड़ गया और रामप्रसाद गमछे से अपना पसीना पोंछते हुए अपने घर की तरफ चल पड़ा।

खुशियों की डिलीवरी

'गुड इवनिंग सर। सर, मैं आपका फूड आर्डर डिलीवर करने आया हूँ।' डिलीवरी ब्वॉय बोला।

'व्हेरी गुड। लाओ, दे दो मुझे।' फूड पैकेट लेते हुए बुजुर्ग शर्मा जी ने कहा।

'सर, प्लीज रेटिंग कर दीजिएगा।' डिलीवरी ब्वॉय ने आग्रहपूर्वक कहा।

'जरूर। सुनो जरा...' शर्मा जी ने कहा।

'जी सर कहिए, क्या बात है?' डिलीवरी ब्वॉय ने पूछा।

'तुम ऐसे ही प्रतिदिन लोगों को स्वादिष्ट भोजन की डिलीवरी ही करते हो, या फिर कभी-कभार अपने घर भी लेकर जाते हो ?' शर्मा जी ने यूँ ही पूछ लिया।

'सर, फूड डिलीवरी करना मेरी ड्यूटी है। इसी से मेरा परिवार चलता है।' कहते-कहते वह रुक गया।

'देखो बेटा, अभी रात के दस बजे चुके हैं। अब सीधे घर ही जाओगे या कहीं और भी फुड डिलीवर करना है?' शर्मा जी ने पूछा।

'ये लास्ट था सर। अब सीधे सिटी हॉस्पिटल जाऊँगा। वहाँ मेरी माँ एडमिट है।' वह जाते हुए बोला।

'रुको, इस पैकेट से मुझे स्वीट्स निकालने दो। बाकी के फूड आइटम, जो प्योर वेज ही हैं, तुम ही ले जाओ। हॉस्पिटल में खा लेना।' शर्मा जी ने कहा।

'लेकिन सर...' वह सकुचाते हुए बोला।

'देखो बेटा, तुम संकोच मत करो। मेरे ऑर्डर करने के बाद ही मेरी वाइफ और बच्चों को अचानक पड़ोस में एक पार्टी में जाना पड़ा है। वे लोग वहीं से खाकर ही आएँगे। मैं हड़बड़ी में ये ऑर्डर केंसिल नहीं कर पाया था। अब इतना सारा खाना यूँ ही खराब तो नहीं कर सकते न? इसलिए इसे तुम ले जाओ।' शर्मा जी ने इतने प्यार से कहा, कि वह मना नहीं कर सका।

घर के अंदर आकर शर्मा जी ने अपनी पत्नी से कहा, 'अजी सुनती हो, मैं क्या कहता हूँ कि आज हम एक बार फिर पुरानी यादें ताजा कर लें क्या, जैसे शादी के बाद शुरुआती दिनों में अक्सर किया करते थे। इस स्वीट्स के साथ मैगी खा लें क्या?'

'हाँ हाँ, क्यों नहीं? आप बस दो मिनट रुकिए। मैं फटाफट मैगी बनाकर ले आती हूँ।' मिसेज शर्मा, शर्मा जी की डिलीवरी ब्वॉय से हुई पूरी बात सुन चुकी थीं।

दरअसल शर्मा जी की इसी अदा पर तो वह फिदा थी।

आपकी किताब आपके द्वार...
प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद
पुस्तक प्रकाशित कराएं

रश्मि अग्रवाल : प्रेरक व्यक्तित्व

सतेन्द्र शर्मा 'तरंग'
११५, राजपुर मार्ग, देहरादून (उत्तराखंड) मो. ९२५८५१३९३९ Email- Satendratarang@gmail.com

मेरा मत है कि विनम्रता मनुष्य के व्यक्तित्व को महान बनाती है। आदरणीय रश्मि अग्रवाल जी के व्यक्तित्व के विषय में अपनी बात कहते हुए मैं, आपके विनम्र स्वभाव को ही मुख्य बिन्दु के रूप में रेखांकित कर रहा हूँ। कहा तो यह जाता है कि किसी व्यक्ति के विषय में गहराई तक जानने के लिए उस व्यक्ति के साथ लम्बा समय व्यतीत करना पड़ता है। परन्तु पाठकगण आश्चर्यचकित होंगे कि रश्मि अग्रवाल जी के सहृदय व्यक्तित्व का आभास मुझे उनसे बिना मिले ही हो गया था।

तत्पश्चात धामपुर के वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय डॉ. अनिल शर्मा जी 'अनिल' के संग नजीबाबाद में आपके निवास स्थान पर जब आपसे मेरी पहली मुलाकात हुई, तो मैं स्वयं को सराहा रहा था कि मेरे मन ने आपके उच्च व्यक्तित्व का सही आकलन किया है। सोशल मीडिया ने हमें बहुत से अनजाने मित्रों से परिचय कराया है। फेसबुक के माध्यम से रश्मि जी से परिचय हुआ। यह परिचय एक-दूसरे की पोस्ट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने तक ही सीमित था। मैं अचंभित हुआ...उस दिन, जब फेसबुक पर मेरी पोस्ट पर एक महाशय ने नकारात्मक टिप्पणी की। उसको पढ़कर मेरी हताश मनोदशा को, देहरादून-नजीबाबाद की दूरी के बावजूद, कभी हम दोनों की मुलाकात न होने के बावजूद, रश्मि अग्रवाल जी ने कैसे पढ़ लिया, इसका उत्तर तो मुझे उनसे प्रत्यक्ष रूप से मिलने के बाद ही मिल पाया। परन्तु महत्वपूर्ण तो यह है कि आपने मुझे फोन किया और पहला वाक्य यह कहा...

'मैं जानती हूँ, इस समय आप नकारात्मक हो रहे होंगे, उस नकारात्मकता को दूर करने के लिए ही मैंने आपसे बात करना अति आवश्यक समझा।' इस वृतांत को साझा करने का मेरा उद्देश्य यही है कि, श्लोगों के दिलों में बसने का यह गुण आपके समग्र व्यक्तित्व का उत्कृष्ट बिन्दु है।

आदरणीय रश्मि अग्रवाल जी के व्यक्तित्व ने मुझे यह कहने के लिए विवश किया...

'सराहेंगे तुझको अनजान पथिक भी जरूर।
बस स्वभाव फलदार वृक्ष सा होना चाहिए।।
कायल होगा ये संसार तेरे व्यक्तित्व का।
अंतस में बस इन्सान छिपा होना चाहिए।।'

आदरणीय रश्मि जी से पहली मुलाकात २० फरवरी, २०२२ को तब हुई, जब आपने 'शोधादर्श - वृद्धावस्था विशेषाँक' अपने कर-कमलों के द्वारा ही देने के लिए स्नेहिल आमन्त्रण दिया। हाँ उससे पूर्व इस विषय पर एक लेख लिखने के लिए भी आपने ही उत्प्रेरक का कार्य किया था। अभी तक केवल फोन पर जिनकी आवाज सुनकर मैं अत्यन्त प्रभावित था। उनसे मिलकर तो मैं उनका मुरीद हो गया। और आपसे 'दीदी' का रिश्ता बन गया।

आदरणीय डॉ. अनिल शर्मा 'अनिल' जी के साथ, जैसे ही दीदी के घर में प्रवेश किया तो आपके उत्साह ने हम दोनों को भी तरोताजा कर दिया।

चूँकि बात आपके व्यक्तित्व की करनी है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि रश्मि अग्रवाल जी बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी हैं। आपकी उर्जा, आपका उत्कृष्ट वैचारिक स्तर, समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन, आपका उच्च बौद्धिक स्तर, विभिन्न विषयों को एकसमान रूप से व्यक्त करने का कौशल, सरल और मधुर स्वभाव से दूसरों को प्रभावित करने की कला तथा आपके व्यक्तित्व का अत्यन्त महत्वपूर्ण बिन्दु...नवोदित कवि-कवयित्री/ साहित्यानुरागी महिला/पुरुष को सदैव सकारात्मक ऊर्जा से परिपूर्ण करते हुए प्रेरणा देना आदि... मैंने या कहूँ 'मेरे मन' ने देखा है। सार यही है कि रश्मि अग्रवाल एक 'प्रेरक व्यक्तित्व' हैं।

प्रत्येक मानव की भाँति रश्मि अग्रवाल जी के व्यक्तित्व में भी कुछ-न-कुछ मानवीय कमियां अवश्य होंगी परन्तु आपके विराट व्यक्तित्व के समक्ष कौन उनको देख पायेगा।

'आभा अद्भुत रश्मि की, प्रेरक है व्यक्तित्व।
सहज-सरल मन भाव हैं, पावन नेह कृतित्व।।
पावन नेह कृतित्व, काज हैं सुरभित चन्दन।
मुख पर मधु मुस्कान, इसी छवि को है वन्दन।।
कह 'तरंग' कविराय, लेखनी छू ले नाभा।
प्रभु दें ये वरदान, रश्मि पायें नित आभा।।'

आत्मीयता की परिचायक हैं श्रीमती रश्मि अग्रवाल

इस्हाक़ अली 'सुंदर' (कवि एवं साहित्यकार) मंसूर कॉलोनी, गली न० ७, उमर मस्ज़िद के पास
सहारनपुर (उ० प्र०) २४७००१, मो० ९८७०६८०००६, ८४४५५४२८०६

श्रीमती रश्मि अग्रवाल आज किसी परिचय की मोहताज नहीं है। नजीबाबाद शहर का नाम राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में आपका अग्रणी स्थान है। आपकी आत्मीयता, शालीनता, सद्व्यवहार और मेहमान नवाज़ी आपके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देता है। श्रीमती रश्मि अग्रवाल से मेरा परिचय मात्र २-३ वर्ष पुराना है, मुरादाबाद के साहित्यिक समारोह में मेरा उनसे प्रथम परिचय हुआ। तब से लेकर आज तक सिलसिला निरंतर जारी है। पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, साहित्यिक सृजन एवं अन्य सामाजिक मुद्दों पर अपना सकारात्मक सहयोग देने वाली रश्मि अग्रवाल के आवास नजीबाबाद में उनके हाथों से बना स्वादिष्ट व्यंजन भी ग्रहण करने का अवसर मिला। यह दिन मेरे लिए अविस्मरणीय बन गया।

उ. प्र. के जिला बिजनौर के कस्बा नहटौर में श्री संतोष कुमार जैन के घर माँ श्रीमती विद्या रानी जैन की कोख से ५ जनवरी १९५२ को जन्मी रश्मि अग्रवाल ने अपने जीवन का ध्येय सामाजिक कार्यों के प्रति समर्पित करते हुए महिलाओं के दिलों की रक्षा तथा पर्यावरण जैसे गंभीर विषयों के प्रति आपकी समर्पण शीलता को दर्शाता है। आपने कविता, कहानी, आलेख, वार्ता, गीत, स्तम्भ आदि विधाओं के जरिये समाज को एक नई दिशा देने का शुभ कार्य किया है। कहावतों की रोचक कहानियाँ, पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम, योग साधना और स्वास्थ्य, इन्द्रधनुषी कहानियाँ, पर्यावरण प्रश्न और भी हैं, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, रश्मि की बाल कहानियाँ आपकी प्रकाशित साहित्यिक कृतियाँ हैं। इसके अलावा वाणी एक, वाणी दो, समकालीन महिला साहित्यकार आदि का संपादन भी कर चुकी हैं। आपकी रचनाओं का राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में भी निरंतर प्रकाशन होता रहा है। वाणी अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान नजीबाबाद के माध्यम से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर शिक्षा के माध्यम व स्वरोजगार देना शामिल है, इसके साथ-साथ पर्यावरण पर विशेष लेखन, कार्यशालाएँ एवं वृक्षारोपण जैसे- सराहनीय कार्य कर रही हैं।

श्रीमती रश्मि अग्रवाल वाणी अखिल भारतीय हिन्दी संस्थान नजीबाबाद की संस्थापक अध्यक्षा, अग्रवाल महिला सभा नजीबाबाद संस्थापक, अविचल दृष्टिकोण पत्रिका बिजनौर, प्रकृति मंथन पत्रिका मेरठ की साहित्य संपादक एवं संरक्षिका, शोधादर्श त्रैमासिक पत्रिका नजीबाबाद की भी संरक्षिका, सेवा भारती मातृ मंडल नजीबाबाद नगर अध्यक्षा, साहित्यिक महिला मंच की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा, भारतीय साहित्यिक, कला, संस्कृति संस्थान नजीबाबाद की मानद सदस्य, धरती बचे प्रदूषण से पत्रिका की सह संपादिका भी हैं। इसके अलावा भी बहुत सी संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। आपको विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं द्वारा विभिन्न पुरस्कार, सम्मान उपलब्धियों से विभूषित किया जा चुका है, जिनमें शिक्षा मित्र अवार्ड (मुरादाबाद) प्रकृति प्रहरी सम्मान, भारती श्री सम्मान, साहित्य गंगा सम्मान, हिन्दुस्तान एवं उ.प्र. सरकार द्वारा 'नारी सम्मान', संस्कार सारथी सम्मान, गोपाल रत्न सम्मान, पुस्तक 'पर्यावरण कितने जागरूक हैं हम' को राजभाषा गौरव पुरस्कार, संतोष सांची सम्मान, हिन्दी भाषा भूषण सम्मान, राधा बल्लभ उपाध्याय स्मृति सम्मान, ज्ञान रत्न सम्मान, लेखन प्रतिभा सम्मान, पर्यावरण चिंतक सम्मान, वरिष्ठ नागरिक सम्मान, प्रकृति प्रहरी सम्मान विद्यावाचस्पति, सेवा भारती गौरव सम्मान, पर्यावरण भूषण सम्मान, नेशनल बुमेन अचीवर्स अवार्ड आदि प्रमुख हैं।

डॉ. विरेन्द्र कुमार अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती रश्मि अग्रवाल जी को साहित्य एवं सामाजिक कार्यों के लिए किये जा रहे श्रम को साधुवाद व हार्दिक शुभकामनायें।

डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित'

सुभाष-शतक

डॉ. सुशील कुमार त्यागी 'अमित' ने यह सुभाष शतक सन १९९५ में रचा था जो बाद में पुस्तकाकार प्रकाश में आया। जिसे अब हमें अपने पाठकों को उपलबध कराते हुए गौरव का अनुभव हो रहा है। आप पढिए और अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराइए।
संपादक

मंगलाचरण

पूर्ण हों प्रयास सभी, प्यास न किसी की रहे,
सुधा-वृष्टि कर हर! क्षुधा हर दीजिए।
ज्ञान का प्रकाश मम, मानस में होवे सदा,
उर में पुनीत भावनाएँ भर दीजिए।
बच्चा-बच्चा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस होवे,
ऐसी नव-सृष्टि प्रभो! अब कर दीजिए।
वाणी में मिठास लेखनी का हो विकास सदा,
काव्य हो 'अमित' प्रभो! ऐसा वर दीजिए।।

(१)

भुखमरी, हाहाकार, शोषण, कुयातनाएँ
भारत-माता से और, सही नहीं जाती थी।
अबला-सी दिन-रात, फूट-फूट रोती थी ये,
वेदना 'अमित' तन-मन झुलसाती थी।।
अँगरेजी शासन था, कंस के कुशासन-सा
मुख से विरूद्ध बात, निकल न पाती थी।
हो गई थी हावी परतन्त्रता स्वतन्त्रता पै,
भारत की दीन-दशा, दिल को दुखाती थी।।

(२)

गुलामी की जंजीरों में, जकड़े पड़े थे हम,
अँगरेज हम पर, जुलम ढहाते थे।
नौकर-सा हमसे वे, करते थे व्यवहार,
और हमें 'अमित' वे, 'डॉग' बतलाते थे।।
साथ-साथ सड़कों पै, चलने न देते हमें,
चलतों को जालिम वे, कोड़े लगवाते थे।
मनमाना हमको सताते थे वे दिन-रात,
और हम मुख से न, उफ कर पाते थे।।

(३)

जखमों पै नमक हमारे मलता था दुष्ट,
दर्द की पुकार कोई नहीं सुन पाता था।
मीन से 'अमित' हम, तड़प रहे थे दीन,
प्रेम से न कोई हमें, पास बिठलाता था।।
पग-पग डाँट-फटकार के शिकार मान,
अंगरेज हम पर हुकुमत चलाता था।
घूँट विष का ही हमें, उसने पिलाया सदा,
भूरी बिल्ली जैसी निज, आँख दिखलाता था।।

(४)

एक-एक टुकड़े के, करके 'अमित' भाग,
आपस में खुशी-खुशी, प्रेम से थे बाँटते।
कभी-कभी आध मुट्ठी भर सत्तु खाकर ही,
जीवन के गमगीन, दिवस थे काटते।।
रत्ती भर जो न कभी, फाँकने को कुछ मिला,
तब टकटकी लगा, गगन थे ताकते।
फुटपाथों पर श्वान-सम जूँठी पत्तलों को,
वह भारतीय भूखे, बालक थे चाटते।।

(५)

हिंसा, छल, दम्भ, झूठ, लूट तथा फूट से ही,
राज चाहते थे वे 'अमित' विश्व-भर में।
सभ्यता हमारी मेटने को वे तुले थे और,
पश्चिमी चलन चाहते थे नारी-नर में।।
सड़कों पै घूमें लाजहीन हो अंगनाएँ,
चाहते विलास थे वे, डगर-डगर में।
भारत गरीब रहे, शासन हमारा रहे,
दुखी रहें भारतीय, अपने ही घर में।।

(६)

जिसने सिखायी सारे, विश्व को सदा ही सीख,
ऐसे गुरु भारत को, सीख सिखलाते थे।
जिन वेदों को बताते, ऋषि-मुनि ईश-वाणी,
उन्हें वे गडरियों के, गीत बतलाते थे।।
'इंकलाब जिंदाबाद,' कहते जो भारतीय,
पकड़-पकड़ उन्हें, जेल भिजवाते थे।
'वंदे मातरम्' गाने वाले व तिरंगे वाले-
को तो वे 'अमित' सीधा फाँसी चढ़वाते थे।।

(७)

अट्ठारा सौ सत्तावन, में जो जली चिनगारी,
नया जोश उसने जवानों में जगाया था।
'अमित' जनों ने पुनः इसको जगाने हेतु,
निज तन-मन-धन, सब ही लुटाया था।
ऋषि दयानन्द व विवेकानन्द जैसों ने भी,
मार कर फूँक इसे, और भड़काया था।
बन गयी यही चिनगारी ज्वालामुखी जब,
भारत में नेता जी सुभाष चन्द्र आया था।।

(८)

देख कर नर-नारी, 'अमित' मुदित हुये,
अंग-अंग उनके उमंग उमगायी थी।
पीपल के पत्ते जैसे, काँपते थे अंगरेज,
नेता जी ने आजादी की, आँधी जो चलायी थी।।
'दूँगा मैं आजादी तुम्हें, मुझे अपना दो खून',
बात सुन वृद्धों में भी, नौजवानी आयी थी।
ईंट का जवाब दिया, पत्थर से नेता जी ने,
ब्रिटिश-साम्राज्य की तो, नींव ही हिलायी थी।।

(९)

सदियों से सोये हुये, भारतीयों को जगाया,
कहा- 'देश को बचाओ, खोते कहाँ होश को।
अरे राम-कृष्ण की हो, सन्तति 'अमित' तुम,
करो तो प्रकट जरा आज निज रोष को'।।
नवयुवकों में भर, दिये भाव वीरता के,
क्रान्तिकारी युवक दिखाने लगे जोश को।
हुऐ भयभीत अंगरेज कुछ अधिक ही,
लखकर 'नेता जी सुभाष चन्द्र बोस' को।।

(१०)

जनवरी तेईस अट्ठारा सौ सत्तानवें को,
उड़ीसा के 'कटक' में, जनमा सुभाष था।
माता प्रभावती से मिली थी दिव्य-प्रभा उसे,
भारत-माता का वह, उज्ज्वल प्रकाश था।।
जनक जानकीनाथ बसु थे वकील एक,
उन-सा 'अमित' नहीं, कोई आस-पास था।
उनका था लाल यह, वाकई में एक लाल,
लगता था वह मानो, विधिना का हास था।।

(११)

कौन जानता था इन, बंद हुई मुट्ठियों में,
भाग्य नेता श्री सुभाषचन्द्र जी का रहता?
कौन जानता था इन, प्यारे-प्यारे नयनों में,
विकराल ज्वाल काल रिपुओं को दहता?
कौन जानता था यह, तुतलाती वाणी में भी,
'वंदे मातरम्' तथा 'जय हिन्द' कहता।?
कौन जानता था पालने में पड़ा बालक ये,
भारत की दासता का अनुभव लहता।।?

(१२)

कौन जानता था यह, 'अमित' कमल-कर,
काट सकते हैं इस, अंगरेजी जाल को।?
कौन जानता था इन, पगों की ही ठोकर से,
गिरा देगा यह इस, ब्रिटिश-जंजाल को।।?
कौन जानता था इसके प्रश्वास-श्वासों से भी,
उठेगा तूफान कोई, बदलने हाल को।?
कौन जानता था यह नवजात अग्नि-शिशु,
भासित करेगा भव्य-भारत के भाल को।।?

(१३)

कौन जानता था यह, हनुमान के समान,
अंगरेज-रावण की, लंका को जलायेगा।
कौन जानता था यह, कृष्ण के समान बन,
आजादी का कोई महाभारत रचायेगा।।?
कौन जानता था सुर इन्द्र के समान बन,
असुरों को लौहे के ये, चने चबायेगा।?
कौन जानता था यह, भारत का भानु बन,
अंगरेज-रूपी अंधकार को मिटायेगा।।?

(१४)

कौन जानता था यह, पवन समान बन,
आजादी की भारत में लहर उठायेगा।?
कौन जानता था यह बालक 'आजाद हिन्द-
फौज' से फिरंगियों पै कहर ढहायेगा।।?
कौन जानता था यह, सर पै कफन बाँध,
प्यारी भारत-माता की, लाज को बचायेगा।?
कौन जानता था यह, 'अमित' सघन-घन-
बन, वसुधा पै सुधारस बरसायेगा।।?

(१५)

वदन-कुसुम-सम, रदन-रतन-सम,
अधर अरुण नेत्र, सुख के सदन से।
घुँघराले काले-काले, बालक के बाल प्यारे,
लखने में लगते थे, श्याम अलि-गण से।।
भृकुटी-धनुष-सम, शुक-चंचु-सम नाक,
थे कपोल लाल-लाल, शोभित सुमन से।
उसके समक्ष फीके, पकड़े लगे थे सब,
राग-रंग हो गये थे, धूमिल कदन से ।।१५।।

(१६)

बालक सुभाषचन्द्र चन्द्र के समान बन,
धीरे-धीरे धरती पै, चाँदनी फैला रहा।
भारत-चमन में ये सुमन-समान बन,
मंद-मंद-गंध चहुँ ओर सरसा रहा।।
सिंह-शावक के जैसा, करता उछल-कूद,
नटखट चतुर ये, मन हरषा रहा।
देखकर लगता है, मानो कोई कान्हा फिर,
ब्रज-आँगन में बाल-लीला है रचा रहा।।

(१७)

शीतल-मलय-वायु, झलती है पँखा उसे,
और वह हौले-हौले, मानो मुस्काता है।
इठलाता खिलखिलाता किलकारी मारता है,
बालक सुलभ वह, खेल दिखलाता है।।
कोयल का गाना और, चहचाना चिड़ियों का,
हृदय में 'अमित' उमंग भर जाता है।,
तेज-पुंज सूर्य मानो, उसे देता तेज निज,
पूर्णिमा का सुधाकर, सुधा बरसाता है।।

(१८)

गगन में भानु-सम, धरन पै गिरि-सम,
मानो यह तो 'अमित', कोई ध्रुव-तारा है।
लक्षण-विलक्षण है, करता निराले काम,
भारत-माता की शान, नेता ये हमारा है।।
इसे देख-देख खुशी, उपजती सब मन,
मानो यह ब्रह्मा के कमंडल की धारा है।
माता-पिता का दुलारा, प्यारा नयनों का तारा,
कुल का सहारा यह, जग से नियारा है।।

(१९)

शिक्षा का प्रबन्ध बड़ा, ही उचित पिता जी ने,
अपने ललन के लिये था करवा दिया।
पाँच वर्ष के बालक, सुभाष को शिक्षा हेतु,
'कटक' के 'मिशनरी स्कूल' में बिठा दिया।।
किंतु उसे अंगरेजी, सहपाठी बालकों ने,
गुलामी के जीवन का, दृश्य था दिखा दिया।
उनके कुव्यवहारों, ने सुभाष के सु-मन,
क्रान्तिकारी भावों का प्रभाव था जमा दिया।।

(२०)

उन्नीस सौ तेरह में, हाईस्कूल पास कर,
इस पटु बालक ने, छात्रवृत्ति पायी थी।
पुनः स्कूली शिक्षा-दीक्षा, के ही साथ-साथ उन्हें,
अन्य विषयों की जानकारी मन भायी थी।।
तदुपरान्त 'कलकत्ता प्रेसीडेंसी कोलिज'-
में, पाने की प्रवेश चाह उर उमगाई थी।
अपने प्रभावपूर्ण, चरित्र के द्वारा पूज्य-
नेता जी, ने निज यश-ध्वजा फहराई थी।।

(२१)

रामकृष्ण योगिराज, व स्वामी विवेकानंद,
की अमर-वाणी ने था, सत् पथ दरसाया।
अत्यधिक प्रभावित इनसे किशोर हुआ,
दीन-दुखियों का सेवा-धरम था अपनाया।।
ईश्वर की भक्ति में था, 'अमित' विश्वास उन्हें,
अतः कुछ जीवन था, हिमालय में बिताया।
किंतु दीन-हीन दशा, देख निज भारत की,
देश भक्ति भाव उन्हें पुनः भू पै खींच लाया।।

(२२)

'प्रेसीडेंसी कोलिज' से, एफ्. ए. करने के बाद,
उन्नीस सौ उन्नीस में बी. ए. क्लास पास की।
इसके बाद इंगलैंड, जाकर के आई. सी. एस.-
पास कर, दुन्दुभि बजादी स्व प्रयास की।।
और फिर लौट कर, निज देश भारत में,
आजादी-आन्दोलन की, बात की विकास की।
हताश थी, उदास थी, भारत की दीन-प्रजा,
छत्रछाया पाके खुश, हो गयी सुभाष की।।

(२३)

एक बार पढ़ाते-पढ़ाते 'सर ओटन' ने,
भारत के लिये घृणा, भाव थे जता दिये।
भय-वश रहे सब, शान्त पर नेता जी ने,
किया कड़ा प्रतिवाद, होश थे उड़ा दिये।।
इसके ही फलस्वरूप प्रेसीडेंसी कोलिज से,
नेता जी थे ओटन ने बाहर करा दिये।
नहीं कुछ किया गम, बोल 'जय हिन्द' घोष,
स्वाभिमानी बोस और, थोड़ा मुस्कुरा दिये।।

(२४)

उपरान्त 'सर आशुतोष मुखर्जी' के द्वारा,
'स्काटिश चर्च कोलिज' में प्रवेश पा गये।
लिया दर्शन-शास्त्र ऑनर्स सहित किया बी० ए०,
और उच्च श्रेणी एम० ए० में वे आ गये।।
'अमित' प्रतिभा तथा, देशभक्ति देख-देख,
दुष्ट अँगरेज निज, मन घबरा गये।
कर निज शिक्षा पूर्ण, चूर्ण कर अंधकार,
सूर्य के समान वह, भारत में छा गये।।

(२५)

आई० सी० एस० करने के, बाद नौकरियों के थे,
आने लगे प्रलोभन, नेता जी के पास में।
ठुकरा दिये परन्तु, सब निज-देशहित,
कूद पड़े आग में वे, आजादी की आश में।।
'स्वयंसेवक-दल' के वे बन गये कप्तान,
'देशबंधु' सहयोगी, उनके प्रयास में,
आजादी को पाने हेतु, कूद पड़े समर में,
क्रान्ति की मशाल के प्रज्वलित प्रकाश में।।

(२६)

उस वक्त थी 'अमित', पुरजोर आजादी की,
आँधी, गाँधी जी के द्वारा, चल रही देश में।
सर पै कफ़न बाँध, हथेली पै रख शीश,
क्रान्तिकारी टोली थी निकल रही देश में।।
अँगरेजी सरकार, भारतीय आन्दोलन,
अत्याचारों द्वारा थी कुचल रही देश में।
काले कानूनों का थे विरोध कर रहे सब,
आजादी की चंड ज्वाला, जल रही देश में।।

(२७)

इस दावानल का प्रखर तेज लख-लख,
भयभीत अँगरेज, चाहते बुझाना थे।
क्रान्तिकारी परवाने, आजादी के थे दीवाने,
जल खुद भी जो इसे, चाहते जलाना थे।।
उनको मिटाने पै तुले थे दुष्ट 'अमित' वे,
क्रान्ति का बिगुल जो कि चाहते बजाना थे।
आ गये सुभाषचन्द्र बोस ले के नया जोश,
अवरोधियों का होश, चाहते उड़ाना थे।।

(२८)

'प्रिस ऑफ वेल्स' इंगलैंड का था युवराज,
भारत को आकर के, चाहता था लखना।
भारतीय-जन किंतु, हुए नहीं रजामंद,
छली का वे मुख नहीं, चाहते निरखना।।
उसके विरोध में थे, नेता जी के संग सब,
'स्वागत-सभा' को नहीं, चाहते थे देखना।
यातनाएँ सहीं बहु, किन्तु घबराये नहीं,
आगमन उसका वे, चाहते थे पेखना।।

(२९)

हुआ ज्यों ही आगमन, आग-मन जल उठी,
सब क्रान्ति-वीरों ने किया विरोध उनसे।
जल उठे अंगरेज, देख के बगावत ये,
इसको दबाना चाहते थे वे दमन से।।
आजादी के मतवाले, अपने में थे निराले,
नहीं डरते थे गोलियों की दन-दन से।
तब गिरफतार कर, नेता जी को छह मास,
कारावास दिया गया प्रबल जतन से।।

(३०)

कारा मुक्त होके वह, नूतन साहस लिये,
कस के कमर आ गये मैदान-जंग में।
रंग लिये साथियों ने अपने बसन्ती चोले,
नेता जी के संग इस, आजादी के रंग में।।
राष्ट्र-भावना को वह, धारे हुए निज उर,
'जय हिन्द' बोलते थे, सब ही उमंग में।
सब ने लुटा दी अपनी जवानी देशहित,
बह गये 'अमित' ये अमित तरंग में।।

(३१)

पड़ने बंगाल में अकाल जब लगा तब,
सभी हुए बदहाल, पीड़ित प्रदेश था।
त्राहि-त्राहि करने लगे थे लोग त्रस्त होके,
रोग था कठिन बस, चहुँओर क्लेश था।।
नेता जी से दयनीय-दशा देखी नहीं गयी,
सेवा-भाव तब मन, उमड़ा विशेष था।
साथियों सहित करने लगे सहायता वे,
उनका 'अमित' घर-घर में प्रवेश था।।

(३२)

अध्यापन-कार्य द्वारा, तथा पत्रकारिता से,
भारत के दुःख-द्वन्द्व, चाहते थे हरना।
इन दो ही रास्तों से चल कर युवकों में,
नेता जी तो चाहते थे, क्रान्ति-भाव भरना।।
अतः रहे कुछ काल, विद्यपीठ के आचार्य,
विद्या से ही सम्भव था, देश का उभरना।
'स्वराज्य-पार्टी' के पत्र 'फारवर्ड' द्वारा सदा,
शंखनाद विश्व में वे, चाहते थे करना।।

(३३)

कलकत्ता कारपोरेशन के थे देशबन्धु-
चितरंजनदास जी 'मेयर' के पद पै।
उन्नीस सौ चौबीस में, नेता जी सुभाष चन्द्र,
अधिष्ठित हो गये 'प्रधान' के वे पद पै।
साहस से करते थे, सब कार्य पूर्ण वह,
अग्रसर हुये वे कुशलता से पद पै।
सराहनीय नेक नित करते 'अमित' काम,
सुशोभित हुये मान्य, नेता जी थे पद पै।

(३४)

कलकत्ता नगर में, किन्हीं क्रांन्तिकारियों ने,
अँगरेज अफसर, गोली से उड़ा दिया।
इस ही सन्देह में बंगाल एक्ट के तहत,
सरकार ने सुभाष, जेल भिजवा दिया।।
वहाँ पै थी तीन साल, घोर यातनाएँ सहीं,
उन पै बीमारियों ने, डेरा था जमा दिया।
फिर भी न छोड़ा जोश, बोस के पराक्रम ने,
'अमित' अभय अंगरेज को डरा दिया।।

(३५)

'हम छोड़ देंगे तुम्हें, किन्तु एक शर्त यह,
देश छोड़ जाना फिर, यहाँ नहीं आना है।
माननी हमारी होगी, हर इक बात तुम्हें,
जिह्व पै विरूद्ध शब्द, एक भी न लाना है।।'
नेता जी ने कहा-'एक शर्त भी न मानूँगा मैं',
बिना शर्त मुझे जा के, तुम्हें दिखलाना है।
मरूँ चाहे जेल में ही जीऊँ-सडूँ चाहें यहाँ,
किंतु शर्त पै तो मुझे, स्वर्ग भी न जाना है"।।

(३६)

जिनके साम्राज्य में न, कभी छिपता था सूर्य,
मिट गया भेद सारा, रात और दिन का।
अपने को मानते थे, सर्वाधिक चालबाज,
बिगड़ा हुआ मिजाज, बहुत था जिनका।।
'उनके ही राज्य में मिहिर छिपा करेगा ये,
भारत के पगों में झुकेगा सिर इनका।'
नेता जी ने करके दिखा दी यह सिद्ध बात,
माना न बहाना कोई धोखे-भरा उनका।।

(३७)

थे आजाद, हैं आजाद रहेंगे आजाद सदा,
हमको दिखाते क्यों हो, तुम तलवार को।
अधिक दिवस नहीं, रहे पिंजरे में शेर,
छोड़ दो त्वरित तुम, करना प्रहार को।।
होके वे बेखौफ करने लगे मुकाबला थे,
किस भाँति सहते वे, भला दुराचार को।
आखिर में परेशान, होकर के बिना शर्त,
छोड़ना पड़ा था अंगरेजी सरकार को।।

(३८)

कारागार-वास में ही, 'धारा-सभा' के सदस्य,
स्वतः क्रान्तिकारियों के, द्वारा थे बनाये गये।
छूटते ही इसीलिए, नेता जी सुभाष बाबू,
राष्ट्रीय-संघर्ष के प्रणेता कहलाये गये।।
होकर निडर नेता जी के द्वारा पुरजोर-
'अमित' अनेक आन्दोलन थे चलाये गये।
'जान चाहे जाये पर अब न रहेंगे दास',
ये विचार नेता जी के द्वारा थे जगाये गये।।

(३९)

उन्नीस सौ उनतीस, लाहौर में क्रांग्रेस ने,
पूर्णतः स्वतन्त्रता का, बिगुल बजा दिया।
उपरान्त गाँधी जी ने, 'नमक-आन्दोलन' को,
डाँडी पद-यात्रा से था, आरम्भ करा दिया।।
नेता जी के संग-संग, बंग सारा कूद पड़ा,
उन्होंने था इसे और, दुगुना बढ़ा दिया।
भयभीत होके अंगरेज-सरकार ने था,
दोबारा श्री नेता जी को जेल भिजवा दिया।।

(४०)

किंतु 'गाँधी-इरविन-समझौते' के तहत,
शीघ्रमेव जेल से ये, मुक्त कर दिये गये।
जनवरी छब्बीस को, कलकत्ता जुलूस में,
नेतृत्त्व के कार्य में नियुक्त कर दिये गये।।
धूमधाम से निकला, जुलूस था आजादी का,
रिपुओं के यत्न अप्रयुक्त कर दिये गये।
झल्लाकर सरकार, द्वारा एक वर्ष हेतु,
नेता जी तिबारा जेल-युक्त कर दिये गये।!

(४१)

रक्खा इस बार इन्हें, 'अलीपुर-जेल' में था,
नारकीय जुल्म वहाँ, इन पर किये गये।
उनका पुराना रोग, उभरने लगा और,
दूने दुःख दुष्ट जन, द्वारा उन्हें दिये गये।।
देह बल घटता गया परन्तु आत्मबल-
बढ़ा, वह अपमान-गरल भी पिये गये।
उनकी रिहाई की दिशा में अनुगामियों से,
क्रान्तिकारी कदम 'अमित' उठा लिये गये।।

(४२)

छुड़वाना चाहती थी, सारी भारतीय-प्रजा,
किंतु सरकार उन्हें, चाहती न छोड़ना।
आन्दोलन उठा तभी बन के तूफान कोई,
चाहता था रिपुओं का वह मुख मोड़ना।।
सरकार इसकी भयंकरता देख दंग-
रह गयी, इसको जो चाहती थी रोकना।
मानी नहीं माँग सरकार ने तो, जनता ने-
शुरू कर दिया तब, तोड़ना औ फोड़ना।।

(४३)

प्रलयंकारी होता देख सरकार ने विरोध,
एक शर्त पर माना, नेता जी को छोड़ना।
'जेल से तो छोड़ देंगे, हम किंन्तु त्वरित ही,
छोड़ना पड़ेगा उन्हें, देश यह अपना।।'
जनता ने कर ली, ये शर्त अंगीकार पर,
नेताजी ने माना नहीं, भारत को तजना।
किंतु हितचिन्तकों की, बात मान नेता जी ने,
उपचार हेतु मान, लिया देश त्यागना।।

(४४)

स्विटजरलैंड वे पहुँच गये छूटते ही,
अपनी चिकित्सा वह, वहाँ करवाने लगे।
इस ही दौरान विश्व, के प्रसिद्ध नेताओं से,
भेंट कर मित्रता का, हाथ वे मिलाने लगे।।
'मुसोलिनी', 'बेलरा' समान उच्च नेतागण,
प्रभावित होके बोस, को थे अपनाने लगे।
'अमित' जमी थी धाक, उनकी विदेशों में भी,
फ्राँस, लन्दनादि की भी, यात्राओं पै जाने लगे।।

(४५)

यात्राओं के बाद जैसे, ही वे भारत में आये,
वैसे ही तुरन्त भेज दिया जेल उनको।
हो पाया नहीं था रोग, शान्त अभी पूर्णतया,
कर दिया और क्षुब्ध, रिपुओं ने मन को।।
'देश के लिए ही हम, मरेंगे जियेंगे और,
जलाकर राख कर, देगें दुश्मन को।'
भाव था ये एक ही सुभाष चन्द्र जी के मन,
रोग भी न रोक सके, उनके वचन को।।

(४६)

रह-रह जेल में ही, हो गयी थी कृशकाया,
कष्ट पर कष्ट और, दुष्ट पहुँचाते थे।
इस बार हो गया था, और भी प्रबल रोग,
किंतु वह हँस-हँस, पीड़ा सहे जाते थे।।
रुग्ण देख नेता जी को, हो जाये न क्रुद्ध-प्रजा,
सोच यह, छोड़कर गोरे घबराते थे।
जेलमुक्त हो के फिर, स्विटजरलैंड गये,

क्योंकि वहीं वह उपचार सही पाते थे।।

(४७)

स्विटजरलैंड में ही, करा रहे थे इलाज,
नियत हुई काँग्रेस, की सभा 'हरिपुरा' में।
इस अधिवेशन के, लिये चुना सभाध्यक्ष,
विदेश से बुलवा लिया था 'हरिपुरा' में।।
काँग्रेस की सभा सभापतित्व में नेता जी के-
हुई, फैली सुयश की प्रभा 'हरिपुरा' में।
धन्य हुई काँग्रेस, देश हुआ सारा खुश,
पा कर सुभाष जैसा, नेता 'हरिपुरा' में।।

(४८)

इस अधिवेशन में, नेता जी के आदर में,
निकला जूलुस जो कि, भव्य औ विशाल था।
थे असँख्य जन निज, मन में प्रमोद लिये,
नेता जी सुभाष मानो, भारत का भाल था।।
धरणि-गगन-वन, हो गये मगन मन,
नाचने लगा सभी का, मानस-मराल था।
ओत-प्रोत उसमें था, 'अमित' स्वदेश-प्रेम,
रिपुओं के लिए तो वो, काल महाकाल था।।

(४९)

तोड़ने था गुलामी की, जंजीरों को आया वह,
दिव्य महापुरुष था, कोई अवतार था।
उसके ही स्वागत में, निकल रहा जुलूस,
सारी ही प्रजा ने उसको तो दिया प्यार था।।
कहाँ तक बतलायें, उसके 'अमित' गुण,
अँगरेजों के लिये तो वह तलवार था।
इक्यावन वृषभ थे, स्यन्दन का खींच रहे,
जिस पर दुनिया का, नेता असवार था।।

(५०)

एक वर्ष बाद भी थे, चयनित किये गये,
काँग्रेस के अध्यक्ष 'त्रिपुरा' चुनाव में।
किंतु गाँधी जी की विपरीत धारणा के वश,
नेता जी ने निज त्याग-पत्र दिया ताव में।।
लेकर प्रगतिशील, नव युवकों को संग,
'अग्रगामी-दल' किया गठित जवाब में।
नेता श्री सुभाष चन्द्र जी की लख देश भक्ति,
बह गये युवा निज, नेता के प्रभाव में।।

(५१)

सन उनतालीस द्वितीय विश्व-युद्ध में वे,
अंगरेज उलझे हुये थे बुरी भाँति से।
नेता जी ने 'हालवेल मेमोरियल' मेटने-
हेतु, आन्दोलन छेड़ दिये बुरी भाँति से।।
अतः सन् चालीस में कर लिया गिरफ्तार,
भयाक्रान्त नेता जी से थे वे बुरी भाँति से।
भूख-हड़ताल कर जेल में सुभाषचन्द्र,
नाक में थे दम कर रहे बुरी भाँति से।।

(५२)

अंगरेज घबराये, देख भूख-हड़ताल,
नेता जी को कारा मुक्त, औ स्वच्छन्द कर दिया।
चैन भी न लेगे देगा, छूटने के बाद भी ये,
अतः उन्हें घर में नजर बंद कर दिया।
घरवालों से भी नहीं, कर सकते थे बात,
ऐसा उन पर कड़ा, प्रतिबन्ध कर दिया।
चारों ओर लगा दिया, पुलिस का पहरा था,
जो था आवागमन सो, सब बंद कर दिया।।

(५३)

कुछ दिवसों के बाद, स्वयमेव नेता जी ने,
किसी से भी मिलना व त्याग दी थी बातचीत।
वेश-भूषा भी विचित्र, पहिनने लगे थे वे,
दाढ़ी बढ़ा ली थी, रिपु लखकर भयभीत।।
करने लगे थे अब, वे विशेष ईश-ध्यान,
कार्य की सफलता में, गाते थे वे नवगीत।
सदियों से पड़ा था जो, भारतीयों के गले में,
उद्यत थे काटने को, पराधीनता का स्फीत।।

(५४)

एक दिन अखबारों, में ये आया अचानक,
धूल झोंक आँखों में सुभाष लुप्त हो गये।
खिसक गयी थी धरा, अँगरेजों के नीचे की,
सुनी जब बात नेता जी प्रगुप्त हो गये।।
सरकार रह गयी, निज हाथ मल-मल,
सोचने लगी कि बोस, कैसे गुप्त हो गये।
चकित समस्त देश, हुआ यह सुनकर,
ज्ञात नहीं, कहाँ नेता जी प्रलुप्त हो गये।।

(५५)

जनवरी सतरह, सन् इकतालीस में,
कर चुके थे वे गृह-त्याग छद्मवेश में।
किंतु कानों कान भी भनक नहीं पड़ सकी,
जनवरी छब्बीस को, ज्ञात हुआ देश में।।
कभी काबुली पठान, बने जहाँ-तहाँ घूमें,
कभी किसी गूंगे तीर्थ, यात्री के वो भेष में।
कभी बने बहरे वे, कभी बने लँगड़े थे,
झेलते असह्य कष्ट पँहुचे विदेश में।।

(५६)

अंगरेजों ने बहुत, खोजा नेता जी को किंतु,
'काबुल' में वह थे पँहुच गये चुपचाप।
निज साहस से कष्ट-कंटक हटाते हुये,
'काबुल' से 'बरलिन' सहकर परिताप।।
बर्लिन में नहीं ज्यादा, दिन तक रुके वह,
चले गये आगे वह, छोड़ कर निज छाप।
हिटलर से वहीं पै, हुई मुलाकात और,
आजादी के विषय में हुआ वहीं वार्तालाप।।

(५७)

जर्मनी में ही हिटलर ने प्रभावित होके,
रेडियो व वायुयान, दिये उन्हें बिना दाम।
इसी रेडियो पर सुभाषचन्द्र बोस जी ने,
भारत से भागने का दिया निज पइगाम।।
वे जो चाहते थे वह, मिला नहीं उन्हें वहाँ,
जर्मनी त्याग चले अतः निज मन थाम।
उन्नीस सौ बयालीस सन् में जापान आ के,
शुरू किया क्रान्तिकारी-दल-संगठन-काम।।

(५८)

गठित 'आजाद हिन्द लीग' संस्था कर चुके,
श्री रासबिहारी बोस, पूर्व ही जापान में।
बागडोर थी संभाली, नेताजी ने जा के वहाँ,
चार चाँद लग गये 'लीग' की तो शान में।।
'अंगरेज देश से भगायेंगें अवश्य हम,
लहरायेंगे तिरंगा शीघ्र हिन्दुस्तान में।'
चेतना जगाई उक्त, अनुपम नेता जी ने,
आजादी की चाह भरी हरेक जवान में।।

(५९)

जापान के द्वारा बंदी, बने थे जो भारतीय,
'आजाद हिन्द फौज' का, गठन किया उनसे।
जापानी प्रवासी भारतीयों ने स्वयोग दिया,
क्रान्तिकारियों का संगठन किया उनसे।।
उपरान्त नेता जी ने 'सरकार और बैंक',
खोलकर, संग्रहीत धन किया उनसे।
जापानियों ने भी इस कार्य हेतु पूर्ण निज,
योगदान देने का वचन किया उनसे।

(६०)

लेकर 'आजाद हिन्द फौज' सन् तैंतालीस में,
गोरों के विरूद्ध युद्ध, घोषणा थी कर दी।
'रहेंगे न हम अब, कभी भी गुलाम हो के',
जनता में यह शुद्ध, घोषणा थी कर दी।।
सत्य औ अहिंसा की तो, भाषा ये समझते ना,
'शठे शाठ्यम्' हो के क्रुद्ध घोषणा थी कर दी।
जागों नौजवानों जागो देश के सिपाही तुम,
तुम हो 'अमित', हो प्रबुद्ध, घोषणा थी कर दी।।

(६१)

'आजादी के लिये बलिदान है जरूरी अरे!,
बलिदान का न देना, प्रतिपल खलेगा।
देश के लिए दो बहा, अपना ये खून तुम,
सारी उम्र बेईमान, गोरा हाथ मलेगा,
कर लो प्रतिज्ञा यह, भारत हमारा भव्य,
होवेगा आजाद ये 'अमित' कष्ट टलेगा।
कस लो कमर इन्तजार करता समर,
चुपचाप बैठने से काम नहीं चलेगा।।'

(६२)

'तुम मुझे खून दो औ आजादी मैं दूगाँ तुम्हें',
अंगरेज चीज है क्या, डरते क्यों इनसे।
आज बने बैठे हैं सियार मृगराज अरे!
करो तो प्रहार जरा, डरते क्यों इनसे।।
रौद्र रूप अपना दिखाओं शीघ्र साथियों रे,
परेशान हमें किया, डरते क्यों इनसे।
अग्नि-पुत्र सभी तुम, कर दो जला कर राख,
दुष्ट पापी हैं ये भला, डरते क्यों इनसे।।

(६३)

'दूर नहीं दिल्ली अब, चलो दिल्ली शीघ्रमेव,
दिल दहला दो तुम, दुष्ट दुशमन का।
ईंट से बजा दो ईंट, ब्रिटिश-सत्ता की तुम,
इनको करा दो भान, तुम निज पन का।।'
दनादन खनाखन, तोप तलवारें चलें,
बलिदान कर दो स्व, तन-मन-धन का।
'जय हिन्द' सिंहनाद, से गगन गूँज उठे,
आजादी ही लक्ष्य है ये, तुम्हारे जीवन का।।'

(६४)

सुन उदबोधन सुभाषचन्द्र बोस जी का,
भारत-माता के लालों, ने कमर कस ली।
बर्मा, सिंगापुर, मलेशिया तथा थाइलैंड,
के प्रवासी भारतीयों, ने कमर कस ली।।
करते-करते देश-सेवा चाहे मिट जायें हम,
प्रतिज्ञा ले सिपाहियों, ने कमर कस ली।
सब कुछ न्यौछावर, किया निज देशहित,

आजादी के मतवालों, ने कमर कस ली।।

(६५)

जापानियों द्वारा जो कि, भारतीय बने बंदी,
उन सैनिकों में जाग उठा प्रेम देश का।
आकर के मिल गये, नेताजी के साथ सब,
उनके दिलों में जाग उठा प्रेम देश का।।
चाहे निकले ये प्राण, भारत की रखे शान,
वीरों की रगों में जाग उठा प्रेम देश का।
परदेश जा के एकत्रित किया युवकों को,
देश प्रेमियों में जाग उठा प्रेम देश का।।

(६६)

आँधी में तूफान में भी, जो न रुक सका कभी,
'अमित' प्रभाव पड़ा, उस देश भक्त का।
कष्ट पर कष्ट सहे, किंतु झुका कभी न जो,
हौंसला बुलन्द हुआ, उस देश भक्त का।।
लोहे के समान देह, अति बलशाली दृढ़,
वक्ष हिमगिरि-सा था, उस देश भक्त का।
तेजोद्दीपित ललाट, सूर्य के समान मुख,
चँहु ओर यश फैला, उस देश भक्त का।।

(६७)

'नेता जी' उपाधि से विभूषित लोगों ने किया,
सम्मान में सब ने ही, पर्व भी मनाया था।
सबने ही उनको स्वकीय सहयोग दिया,
संग-संग चलकर, साहस बढ़ाया था।।
आजादी के हो उठे थे, 'अमित' दीवाने सब,
परवाने बन-बन, खुद को जलाया था।
त्याग की अभूतपूर्व, होड़ ऐसी मची थी कि-
कई बार नयनों में, नीर भर आया था।।

(६८)

एक बार सिंगापुर की सभा में नेता जी के-
भाषणोपरांत घटी, घटना अजीब थी।
नेता जी ने फंड के लिए जो की अपील, देखा-
दानियों की खड़ी लम्बी अवलि करीब थी।।
श्रद्धा सामर्थ्यानुसार, दे रहे थे सब दान,
आजादी के लिये ही की, गयी तरकीब थी।
सहसा निकल कर मंच पर चढ़ी एक,
नेता जी को देने दान, महिला गरीब थी।।

(६९)

उसकी आँखों से आँसू, बह रहे लगातार,
सिर ढकने को भी न, उस पै वसन था।
सब लोग श्वास रोक, लगे देखने उसे ही,
'तीन ही रुपैये' सारे, जीवन का धन था।।
'मेरी यह तुच्छ भेंट, अंगीकार करो प्रभो,'
देश भक्ति भावपूर्ण, कहा ये वचन था।
निज सब कुछ कर दिया नेता जी को भेंट,
किंतु संकुचित हुआ, नेता जी का मन था।।

(७०)

धर्म-संकट विकट, नेता जी के था निकट,
झटपट न्याय कर, सकना कठिन था।
एक ओर दीन-दशा, दूजी ओर देश-प्रेम,
हालत में ऐसी कुछ, करना कठिन था।।
भेंट यदि की न अंगीकार तो लगेगी चोट,
अबला-हृदय को संभालना कठिन था।
इस पावन पूँजी के, सम्मुख कुबेर के भी,
अतुलित कोष का ठहरना कठिन था।।

(७१)

देख वह महादान, गालों पै ढुलक पड़े,
बड़े-बड़े आँसू तब, नैनों में सुभाष के।
देखकर देश प्रेम, की ये घटना अनूप,
मन में विभिन्न भाव, उपजे सुभाष के।।
भावना को चोट न पँहुच जाये इसलिए,
सहसा ही हाथ बढ़ गये थे सुभाष के।
करी अंगीकार भेंट, आजादी के हेतु वह,
सैनिक 'अमित' सब, सहमे सुभाष के।।

(७२)

चल पड़े आजादी के, दीवाने ये रणवीर,
अत्याचारी गोरों को स्वदेश से मिटाने को।
मणिपुर इम्फाल मार्चों पै जाकर के,
आक्रमण कर रहे, देश को बचाने को।।
संग-संग सहायता, हेतु थीं जापानी सेना,
ललसा थी आजादी का मुख-चन्द्र पाने को।
मन थे मचल उठे सैनिकों के शीघ्र तब,
लालायित देश में तिरंगा फहराने को।।

(७३)

प्राणों की न कर परवाह वे 'अमित' कवि,
भारत के बाँकेलाल, लड़ रहे रण में।
आजादी के सपने को, पूरा करने के लिए,
सैनिकों के कदम थे, बढ़ रहे रण में।।
अँगरेज-द्रुम देख, भारत के वीर भट,
मदमस्त हाथी से बिगड़ रहे रण में।
इनका साहस-शौर्य और बल-बुद्धि देख,
पाँव अंगरेजों के उखड़ रहे रण में।।

(७४)

प्राणों की लगा के बाजी, उन रणबाँकुरों ने,
अंगरेज-सेना को समर से भगाया था।
दिखला के पीठ लगे भागने थे अंगरेज,
नेता जी के सामने न, कोई टिक पाया था।।
जीत लिये 'आसाम' व 'मणिपुर' आदि क्षेत्र,
फौजियों ने 'शुभ सुख चैन' गीत गाया था।
अट्ठारह मार्च सन् उन्नीस सौ पैंतालीस-
को विजित भूमि में तिरंगा लहराया था।।

(७५)

अब लगी बढ़ने तूफान के समान फौज,
और अंगरेज रूपी, तरू लगे गिरने।
ब्रिटिश-सत्ता का पत्ता-पत्ता लगा डोलने औ,
भारत से रिपुओं की, लगी जड़ हिलने।।
नेता जी सुभाष बोस के सैनिकों में था जोश,
अंगरेजों की हवाइयाँ लगी थीं उड़ने।
यह देख भारतीय क्रान्तिकारी युवकों की,
'अमित' हृदय कलिकाएँ लगी खिलने।।

(७६)

नेता जी के नारे 'जय हिन्द' और 'दिल्ली चलो,'
जोश को बढ़ाने लगे, युद्ध के दीवानों में।
धूर्त, छली अंगरेज, घबराने लगे देख-
साहस 'आजाद हिन्द फौज' के जवानों में।
क्षण-क्षण-रण-कण-खून से नहाने लगा,
देशभक्ति भाव बहा, 'हिंद' मरदानों में।
लगी होड़ मिटने की, परवानों के समान,
फौज के जवानों में, दिवानों-मस्तानों में।।

(७७)

होकर सन्नद्ध वीर, बढ़े देहली की ओर,
किंतु उनको न मिल, सके अस्त्र-शस्त्र थे।
जापानी सेना की ओर, से जो मिलते थे शस्त्र,
वह सब घटिया नितान्त अस्त-व्यस्त थे।।
आजादी के मतवालों, के समक्ष ऐसे कोटि-
कोटि थे विकट कष्ट, जिससे वे त्रस्त थे।
'कोहिमा' की पहाड़ियों, में भी वीर पँहुच के,
लड़े तब तक, जब तक वे सशक्त थे।।

(७८)

भूखे-प्यासे जंगलों में आखिर लों लड़े वीर,
तकदीर को बचाने, भारत महान की।
उठ गये जो कदम, बढ़े आगे हरदम,
पायी वीर गति राखी, लाज हिन्दुस्तानी की।।
आन-बान-शान-स्वाभिमान देश का ईमान,
राखने की लग गयी बाजी बलिदान की।
खुशी-खुशी सब कष्ट सहे, असि-धार पर-
चले प्रणधारी, किंतु फिक्र न की जान की।।

(७९)

सुख-दुःख, जीत-हार, दिन-रात, साथ-साथ,
पहियों में लगे अरों, के समान घूमते।
वह भी हैं कभी जो कि हार जाते, रिपुओं का-
करते दमन औ विजय को हैं चूमते।।
हथियारों के भी बिना, वह अभिमन्यु-सम,
अन्त तक लड़े वीर, आजादी को ढूँढते।
हार कर भी आजाद हिन्द फौज के सिपाही-
हारे नहीं, रण-मद में ही रहे झूमते।।

(८०)

विश्व-युद्ध की थी गड़गड़ाहट चँहुओर,
कोटि-कोटि सैनिक थे, रोज पस्त हो रहे।
जर्मनी, जापानी क्रूर, सैनिक के द्वारा मित्र-
देशों के थे सैनिकों विपद ग्रस्त हो रहे।।
किंतु पासा पलटा तुरन्त रूस ने हराया-
जर्मनी के शूरवीर अस्त-व्यस्त हो रहे।
अमेरिका ने जापान, पै चली कुटिल चाल,
देखा 'नागासाकी', 'हिरोशिमा' ध्वस्त हो रहे।।

(८१)

अमेरिका ने अगस्त में जो डाला अणुबम,
नागासाकी और हिरोशिमा आदि स्थानों में।
'त्राहि माम् त्राहि माम्' की पुकार चँहुओर,
गूँज उठी असहाय, पीड़ित इंसानों में।।
दानवता ने किया था, नंगा नाच खुलकर,
नाम मात्र को न रहा, साहस जवानों में।
कर दिया जापान ने अपने को समर्पित,
बात यह पहुँची सुभाष के भी कानों में।।

(८२)

देख बुरी दशा यह, पीड़ित प्रजा की वह,
समझ गये कि हवा, चल रही उलटी।
विजय का काल है हमारी कुछ दूर अभी,
इसलिए यह फिज़ा, चल रही उलटी।।
आत्म-समर्पण का था, निर्णय आखिर लिया,
कहा-'यह युग-धारा, चल रही उलटी।'
एक दिन जीत होगी, अरि-दल पै अवश्य-

बदलेगी, भाग्य-रेखा चल रही उलटी।।

(८३)

समझो न मेरे प्यारे साथियों! ये बलिदान,
किये हमने जो सब, व्यर्थ चले जायेंगे।
हमने असह्य कष्ट सहे, जो समर बीच,
एक दिन विश्व में वे, निज रंग लायेंगे।।
रूकी नहीं है लड़ाई, चलेगी निरन्तर ही,
त्याग, तप कभी यह, चँहुदिशि छायेंगे।
'हम हैं समर्थ, अर्थ आजादी ही हमारा है'
अपनी ये तान, हम सबको सुनायेंगे।।

(८४)

अन्तिम संदेश यह, देकर के टोकियो को-
नेता जी सुभाष वीर, हो गये रवाना थे।
हबीबुर रहमान नेता जी के साथी बन,
'अमित' वे शूर वीर, हो गये रवाना थे।।
नया कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए,
देशभक्त बलवीर, हो गये रवाना थे।
सोलह अगस्त वायुयान द्वारा सिंगापुर,
से वे भट महावीर, हो गये रवाना थे।।

(८५)

अट्ठारह अगस्त सन् पैंतालिस का अशुभ-
दिन ऐसा आया, हुये लीन सब शोक में।
जिस यान से प्रयाण, नेता जी थे कर रहे,
हुआ वही दुर्घटना, ग्रस्त 'ताइहोक' में।।
हृदय-विदारक ये, वाणी सुन रेडियो से,
मच गया हाहाकार, तुरन्त त्रिलोक में।
था महान नेता वह मरा नहीं, अमर है-
यश द्वारा जीवित रहेगा वह लोक में।।

(८६)

उनके वियोग में बहाये बादलों ने आँसू,
सभी भारतीय शोक-सागर में डूब गये।
दर्दभरी आहें नहीं, सही गयीं धरती से,
एक साथ मानो सभी, सपने थे टूट गये।।
निशा-दिशा थी उदास, नेता जी नहीं क्यों पास,
प्यारे साथी हमारे थे, हमसे क्यों रूठ गये।
कैसा अकस्मात् वज्राघात हुआ दिलों पर,
हाय-हाय भाग्य भारतीयों के हैं फूट गये।।

(८७)

'स्वर्गवासी हुए नेता जी सुभाष चन्द्र बोस,'
हुआ नहीं ये विश्वास, सब भारतीयों को।
गये हैं अज्ञात दिशा, आयेंगे तुरन्त लौट,
लगी ऐसी पूर्ण आश, सब भारतीयों को।।
नजरों से ओझल हमेशा के लिए न हुए,
याद आते हैं सुभाष, सब भारतीयों को।
'अमित' वो क्रान्ति-दीप, बुझ नहीं सकता है,
दिया जिसने प्रकाश, सब भारतीयों को।।

(८८)

खोज रहीं आँखें आज, नेजा श्री सुभाष जी को,
हुए कहाँ लीन आप, हमें बतलाइए।
दे दो दर्श शीघ्र माता भारत पुकारे तुम्हें,
लुक-छिप कर दिल अब न दुखाइए।।
सूना-सूना आप बिन, भुवन ये लगता है,
आकर के देश-प्रेम-भावना जगाइए।
आपका अभाव सदा, रहेगा खटकता ही,
झटपट आके आप हमें समझाइए।।

(८९)

धन्य है महान बलिदान उस दीवाने का,
आजादी की ज्योति अनबूझ जिससे जली।
धन्य है महानमाली नेताजी सुभाष चन्द्र,
जन-जन के मन की, खिली जिससे कली।।
धन्य है महान नेता, दयालु उदार चेता,
भारत-माता का बेटा, काँपे जिससे छली।
धन्य है महान काम जिसने किये सदैव,
ब्रिटिश-सत्ता की शाम शीघ्र जिससे ढली।।

(९०)

धर्मवीर, दानवीर, कर्मवीर, रणवीर,
अद्वितीय नेता श्री सुभाष जी महान हैं।
जितने हैं तारागण, गुण-गण उतने हैं,
अनुपम वीर वह, सुगुणों की खान हैं।।
उनकी निराली छवि व्याप्त त्रिभुवन में है,
वीर हैं सपूत वह, भारत की शान हैं।
धरती का कण-कण करता नमन उन्हें
जन-जन के वो प्रिय, सैनिकों की जान हैं।।

(९१)

कोकिला के गायन में, भ्रमरों के गुंजन में,
भारतीय वंदन में, उनका ही नाम है।
सुभाषचन्द्र-चन्द्र की छटा है दशदिशि व्याप्त,
आजादी के हेतु दिया, 'अमित' ही दाम है।।
हम कभी नहीं भूल, सकते हैं नेता जी को,
उन्होंने ही आजादी का, दिया ये ईनाम है।
'रहेंगे स्वाधीन सदा, पराधीन देश में न-
रहेंगे कदापि नहीं' उनका पैगाम है।।

(९२)

लेते रहें प्रेरणाएँ, नेता जी से हम सदा,
सत्य-मार्ग पर चल, सबको दिखायेंगे।
बलिदान देने का भी, आयेगा सवाल यदि,
खुशी-खुशी देशहित, खुद को मिटायेंगे।।
सपने साकार हम उनके करेंगे और,
पग-चिह्नों पर चल, जग को जगायेंगे।
देश-सेवा, जन-सेवा, करते रहेंगे सदा,
राखेंगे 'अमित' शान् देश को बचायेंगे।।

(९३)

नेता जी से महाप्राण, आते कभी-कभी यहाँ
भूमि-भार हरने को, सुपथ दिखाने को।
'दुःख-द्वन्द्व से न डरो, शुभ कार्य सदा करो,'
आप्त-उपदेश यह, जग को सुनाने को।।
राग-रंग दुनिया के जायेंगे न संग-संग,
ईश का भजन करो, जीवन बनाने को।
अच्छे-अच्छे वचनों को, मन में उतारो तुम,
करो पीड़ितो की सेवा, मुक्ति-द्वार पाने को।।

(९४)

धन्य अहोभाग्य भव्य भारत भुवन में जो,
उदित सुभाष हुआ, सुधाकर बनकर।
पराधीनता की निशा, उसने तुरन्त मिटा,
उज्ज्वल प्रभात किया, दिवाकर बनकर।।
आजीवन गुलामी का, अंधकार मेटने को,
फैलायी सुयश-गंध, प्रभाकर बनकर।
गुणगान करें हम, कहाँ तक नेता जी का,
आया था धरा पै वह, विभाकर बनकर।।

(९५)

यह क्षुद्र लेखनी औ यह बाल-बुद्धि मेरी,
रखती सामर्थ्य कहाँ, नेतृ-गुण-गान का।
दोनों ही हैं मूक कर सकती बखान नहीं,
नेता वो महान था वो प्रेमी बलिदान का।।
अंगरेजों के लिए था काल के समान वह,
अथवा था दूत वह, दैविक तूफान का।
शौर्य-वीर्य 'अमित' था, उसमें अमित बसा,
वह दिव्य-देवता था, भारत महान का।।

(९६)

अत्यधिक जरूरत, आज पुनः देश को है,
पापाचार, दुराचार, आदि के विनाश की।
तभी होगा पूर्णतः ये भारत महान देश,
रोशनी जगेगी शुचि, सत्य के प्रकाश की।।
यत्र-तत्र-सर्वत्रैव, विद्या का प्रचार होवे,
वासना मिटेगी तब, भोग की विलास की।
आह्वान 'अमित' है, वक्त की जरूरत है,
ऐसे क्रान्तिकारी नेता श्रीयुत सुभाष की।।

(९७)

जय-जय नेता श्री सुभाष चन्द्र बोस जी की,
क्षण-क्षण का नमन तुम्हें बार-बार है।
जय भारत के लाल, पुरोध स्वतन्त्रता के,
कण-कण का नमन तुम्हें बार-बार है।।
'अमित' आजादी के पुजारी बलिदानी वीर,
तृण-तृण का नमन तुम्हें बार-बार है।
प्रेरणा के महास्रोत, नेता जी सुभाष बोस,
जन-मन का नमन तुम्हें बार-बार है।।

(९८)

हम पै नहीं है कुछ, भेंट करने के लिए,
श्रद्धा के सुमन अंगीकर कर लीजिए।
गुणवत्ता की महत्ता, आपकी है चँहुओर,
कृपा-दृष्टि निज जन, पर कर दीजिए।।
महिमा तुम्हारी है 'अमित' गुण गाथा युत,
कृपा-सिन्धु! कृपा कर, हम पर रीझिए।
जिससे कि जीवन हमारा भी सफल होवे,
नेता जी सा नेता आप पुनः पैदा कीजिए।।

(९९)

यही कामना है मेरी, भारत की धरती पै,
नेता जी सुभाष चन्द्र बोस जैसे लाल हों।
मेट डाले अंधकार 'अमित' प्रकाश कर,
जगत के प्राणी सब, सदा खुशहाल हों।।
विपदा की घड़ी में हो हिमवान से अडिग,
बलशाली नवयुवा, देश की ये ढाल हों।
वीरों के स्तवन में नवीन भव्य भाव बहें,
पूजा के पुनीत धूप-दीप-सजे थाल हों।।

(१००)

श्रद्धा से विनत हो के, चित्रित किया है मैंने,
नेता जी के कृत्य और मनोगत भाव को।
'जय हिन्द' जय नेता, सेना के जवान जय,
जानता जगत यह, आपके प्रभाव को।।
आप जैसा नेता और, विश्व में हुआ ही नहीं,
आपने दी गति देशभक्ति के बहाव को।
आप हैं अनन्य क्योंकि निज भुजबल द्वारा,

लेखिका 'निधि मिथिल' का उपन्यास 'अम्मा' बेहद मार्मिक और सामाजिक ताने-बाने से भरपूर है। जिसे हम आम पाठक के लिए धारावाहिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। लीजिए उपस्थित है अम्मा का चौथा भाग

पहले भाग से आगे.....

पाठ-११

तभी शोभा दरवाजे पर आकर बोली- 'गाँव लौटकर क्या करते सासू जी, कम से कम शहर में रहकर कुछ बन तो गए, आपका बस चलता तो वहीं रखती, देखा ना गोपाल आज गाँव में रहकर क्या कर रहा है।'

'बहू, गोपाल तुम्हारा देवर है।'- अम्मा बोली।

'देवर।'-शोभा हँसते हुए बोली- एक ड्राईवर का बेटा मेरा देवर कभी नहीं हो सकता।'

'और विक्की, तुम जाकर पढ़ाई करो, जिंदगी में कुछ बनने की सोचो।' यह कहकर शोभा बाहर चली गयी।

अम्मा की आँखों में आँसू थे।

'जा बेटा जाकर पढ़ाई कर।'- अम्मा बोली।

'पर दादी, मम्मा को इस तरह आपसे बातें नहीं करनी चाहिए।'- विक्की बोला।

'दादी, ये गोपाल अंकल कौन हैं?' -विक्की ने पूछा।

'बेटा तेरे चाचा है, वही तो हैं इस बूढ़ी का सहाय।'- अम्मा बोली।

'पर दादी, मुझे मम्मा की बात करने का लहाजा बिल्कुल पंसद नहीं।'-विक्की बोला।

'नहीं बेटा, माँ से बढ़कर इस दुनिया में कोई नहीं होता है, माँ जन्म देती है उसके बारे में कभी बुरा नहीं बोलते।'- अम्मा ने विक्की को समझाया।

शाम को समीर सात बजे आ गया। आते ही पूछा- 'शोभा, अम्मा कहाँ हैं?'

अपने कमरे में ही होंगी।'- शोभा बोली।

'क्या हुआ मैडम का मूड खराब लगता है?' - समीर ने प्यार से पूछा।

अरे, विक्की की उम्र ही ऐसी है नासमझी की, पर उसकी अम्मा तो समझदार हैं, बस उसे बातों में लगाई रहती हैं, अभी उन्हें नहीं लाते तोकृ।' विक्की को देखकर शोभा चुप हो गई।

विक्की ने एक बार दोनो को देखा और वहाँ से निकल गया।

इतने में अम्मा कमरे से बाहर आई।

'समीर बेटा, आ गया, थक गया होगा?' - अम्मा ने बड़े प्यार से पूछा।

अम्मा, शोभा कह रही है, आप विक्की को बातों में लगाई रहती हो?' - अम्मा की बात का जवाब नहीं देते हुए समीर ने पूछा।

'नहीं बेटा, वह बस १५-२० मिनट ही मेरे पास बैठा था।'- अम्मा बोली।

ओफो अम्मा, तुम्हारी तो पूरी जिन्दगी गाँव में गुजरी है तुम क्या समझो पढ़ाई की कीमत, विक्की की पूरी जिन्दगी इस परीक्षा पर निर्भर है।'- समीर बोलकर अंदर चला गया।

अम्मा का चेहरा उतर गया। रह-रहकर उसके कानों में समीर के वही शब्द गूँजने लगे- तुम क्या समझो पढ़ाई की कीमत?' '

अगर मैं नहीं समझती पढ़ाई की कीमत तो समीर को क्यों भेजती शहर?सब कुछ तो बेच दिया उसकी पढ़ाई के लिए।'

अम्मा को घुटन होने लगी। वह अपने कमरे में जाकर अपने पति को याद करने लगी। अभी तो तीसरा दिन है और यह बर्ताव, कैसे दिन कटेंगे?अम्मा सोचने लगी।

'समीर सुनिए, आज रात को बिंदु व उसके पति खाने पर आ रहे हैं।'-शोभा बोली।

अच्छा क्या बना रही हो?' - समीर ने पूछा।

'पालक-पनीर, दम आलू, कोफ्ते, रायता और आप आईसक्रीम ले आना।'- शोभा बोली।

अच्छा मेरे लिए कॉफी बनाकर ले आओ।'-कहकर समीर चला गया।

तभी विक्की किचन में आया।

अच्छा मम्मा, अब नहीं डिस्टर्ब होगा मुझे?' -विक्की शोभा से बोला।

'बहुत जबान चलने लगी है, तुम्हारी जब से वह घर में आई है।'- शोभा ने गुस्से में कहा।

अरे मम्मा, अभी तो तीन ही दिन हुए हैं दादी को।'-विक्की बोला

खैर छोड़ो, जरा दादी के लिए एक कप चाय बना दो।'-विक्की कहकर चला गया।
थोड़ी देर में शोभा चाय बनाकर अम्मा को दे दी। अम्मा ने चाय पी।
समीर आइसक्रीम लेने चला गया। अम्मा मन-ही-मन गोपाल को याद कर रही थी।
सोचा-'मेरा गोपाल महीने में २००० रूपये कमाता है तो क्या, अपनी मैय्या को समय तो देता है और यहाँ समीर के पास तो मेरे लिए समय ही नहीं है।'
तभी शोभा कमरे में आई और बोली- सासूजी शाम को मेरी सहेली आ रही है खाने पर, आप अपने कमरे में ही रहना, आपको आदत जो नहीं है शहर की पार्टियों की।'
अम्मा कुछ नहीं बोली। शोभा कहकर चली गई। न जाने कब अम्मा को नींद आ गई। तभी किसी आवाज से अम्मा की नींद खुली। घड़ी पर नजर गई तो रात के आठ बज रहे थे। बाहर से आवाजें आ रही थीं। अम्मा समझ गई कि मेहमान आ गए हैं। अम्मा को भूख लग रही थी। सोचा बाहर जाकर देखती हूँ तो याद आया कि शोभा ने बाहर निकलने से मना किया था। अम्मा ने वहीं कमरे में रखा ग्लास का पानी ली लिया।
बाहर टेबल पर खाना लग चुका था। तभी शोभा ने विक्की को आवाज लगाई।
'विक्की बेटा, चलो आंटी खाने के लिए इंतजार कर रही हैं।'-शोभा ने विक्की को आवाज लगाई।
'क्या कर रहा है विक्की आजकल?' -बिंदु ने पूछा।
'कॉलेज का आखिरी साल है, पढ़ाई में लगा है।'- शोभा ने जवाब दिया।
'लगता है, अच्छी मेहनत कर रहा है।'- बिंदु ने कहा।
समीर और बिंदु के पति शेखर उधर अपनी बातों में लगे थे। तभी विक्की बाहर आया।
'नमस्ते आंटी।'- विक्की ने बोला।
'नमस्ते, पढ़ाई कैसी चल रही है?' - बिंदु ने पूछा।
'बस आंटी चल ही रही है।'-विक्की ने जवाब दिया।
'चलो बेटा खाना खा लो।'-शोभा बोली।
'मम्मा, दादी ने खाना खा लिया ना।'- विक्की ने पूछा।
ओ माई गॉड, मुझे याद ही नहीं रहा।- शोभा बोली।
'हद कर दी शोभा, तुमने अम्मा को अभी तक खाना नहीं दिया?' -समीर ने कहा।
ऐसे मत बोलो, जैसे मैंने बहुतजुर्म कर दिया हैं।'-शोभा बोली।
रुको मैं दादी को खाना देकर आता हूँ।'- विक्की कहकर चला गया।
अरे शोभा, तुम्हारी मदर-इन-लॉ आई हैं तुमने बताया नहीं?' - बिंदु ने पूछा।
'वह ४-५ दिन पहले ही आई है।'-शोभा बोली।
'पर वो दिखी नहीं।'- फिर बिंदु ने पूछा।
क्योंकि गाँव में ही रही है ना हमेशा, पहली बार शहर आई है और अभी एडजस्ट नहीं हो पाई हैं, इसलिए कमरे में ही रहती हैं।'-शोभा बोली।
उधर विक्की जैसे ही कमरे में गया, अम्मा गहरी नींद में सोई थी।
'दादी, ओ दादी।'- विक्की ने धीरे से आवाज लगाई।
'कौन?- अचानक अम्मा की नींद खुल गई।
'मैं हूँ दादी।'-विक्की बोला।
'इतनी रात हो गई, क्या हो गया।'- अम्मा बोली।
चलो दादी, खाना खा लो चलकर, - विक्की बोला।
'भूख नहीं लगी बेटा।'- अम्मा बोली।
'थोड़ा सा खाना खा लो दादी।'-विक्की ने बड़े प्यार से कहा।
'बेटा, अब इच्छा नहीं है।'- अम्मा बोली।
'दादी जो इच्छा है, बता दो वही ले आता हूँ पर भूखे पेट मत सोइए।'- विक्की बड़े प्यार से बोला।
'ठीक है, बेटा,दूध रोटी ले आ।'- अम्मा बोली।
विक्की तुरन्त किंचन में दूध रोटी लेने चला गया।
पीछे-पीछे शोभा आ गई और बोली- क्या कर रहा है विक्की?' '
'दादी को दूध रोटी दे रहा हूँ।'-विक्की बोला।
अरे यह क्या नाटक है इतना सब बनाया और उन्हें दूध रोटी खानी है।'
'मम्मी प्लीज उन्हें जो खाना है खाने दो।'-विक्की गुस्से में बोला।
शोभा मुँह बनाकर किचन से बाहर आ गई। विक्की ने अम्मा को दूध रोटी लाकर दी। अम्मा ने आराम से दूध रोटी खाई।
'बेटा तुमने खाना खा लिया क्या?' -अम्मा ने विक्की से पूछा।
'नहीं दादी, बस अब खा लूगाँ।'- विक्की बोला।
'मेरा प्यारा बेटा, भगवान तुझे बहुत खुश रखे।'- अम्मा बड़े प्यार से बोली।
'दादी अब आप सो जाओ, मैं भी खाना खा लेता हूँ।'-विक्की बोला।
बाहर आकर देखा तो सभी खाना खा रहे थे। विक्की ने चुपचाप प्लेट में खाना लिया और एक तरफ बैठ गया।
काफी देर तक खाना चलता रहा, सभी इधर-उधर की बातें कर रहे थे। खाना खत्म होते ही सभी ने आइसक्रीम खाई। थोड़ी ही देर में बिंदु और शेखर चले गए।
मेहमानों के जाते ही समीर ने शोभा से कहा- तुम्हे अम्मा के खाने का भी याद नहीं रहा?' '
'देखो समीर, बात मत बढ़ाओं, बोला ना भूल गई और वैसे आपको ही कौनसा याद रहा?' - शोभा तेज स्वर में बोली।
'इसमें बात बढ़ाने की कोई बात नहीं है, अम्मा क्या सोचेगी?' -समीर ने कहा।
एक तो पहली बार अम्मा यहाँ आई है और तुमनेकृ' समीर आगे बोला।
'उनके सोचने की तुम्हे चिंता है और एक मैं जो हर कदम तुम्हारे साथ चली उसका क्या।'-शोभा बुझे स्वर में बोली।
'पता है मुझे, बताने की जरूरत नहीं।'-समीर बोला।
'तुम्हारे माता-पिता तो छह साल हमारे पास आकर रहे तब तो तुमने उनकी छोटी से छोटी बात का ख्याल रखा।'- समीर बोला।
'समीर, मेरे माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं है, क्यों नाम निकाल रहे हो उनका?' - शोभा बोली।
'मैं नहीं तुम निकलवा रही हो।'-समीर बोला।
'ठीक है तो कल ही मैं इस घर से चली जाती हूँ, करो अपनी माँ की सेवा।'-शोभा गुस्से से बोलकर अंदर चली गई।
समीर वहीं बैठा रहा। बड़ी देर तक सोचता रहा कि कहीं सच में शोभा चली न जाए। थोड़ी ही देर में वह उठा और धीरे से कमरे में झाँका देखा तो शोभा पलंग पर लेटी हुई थी।
'शोभा, नाराज हो गई हो क्या?' - समीर ने धीरे से पूछा। शोभा कुछ न बोली।
'देखो शोभा हमारा आजतक झगड़ा नहीं हुआ पर न जाने आज यह क्या हो गया?' - समीर आगे बोला।
आज पहली बार आपने मुझसे इतनी बुरी तरह से बात की और ऊपर से मेरे माता-पिता को भी बीच में ले आए।'- रोते-रोते शोभा बोली।
तभी समीर ने शोभा को अपनी बांहों में ले लिया और बोला- 'शोभा तुम तो मेरे जीवन की डोर हो और यह डोर इतनी कमजोर थोड़े ना है, चलो अब मुस्कुरा दो।'- समीर बोला।
शोभा झट से समीर के गले लग गई।
अगले दिन अम्मा सुबह जल्दी उठ गई चाय पी और नहा धोकर बाहर बैठ गई। समीर उठकर आया और अम्मा के पास आकर बैठ गया- 'अम्मा, कितनी जल्दी उठ गई, रात को जल्दी सो गई थी क्या, शोभा आई थी खाना लेकर, उसने आवाज भी दी थी तुम्हें पर तुम गहरी नींद में सोई थी।'- समीर बोला।
अम्मा को समझते देर न लगी कि समीर शोभा की बात कर रहा है।
'बेटा, मैं सोच रही हूँ कि गाँव चली जाऊँ वहा का घर भी ऐसे ही पड़ा है और फिर गोपाल भी अकेला होगा। उसे मेरे बगैर रहने की आदत भी नहीं है।'-अम्मा बोली।
'अम्मा अभी तो आई हो, कुछ दिन और रुक जाओ।'- समीर बोला।
'अरे, सासूजी का जाने का मन है तो आप जबरदस्ती रोक क्यों रहे हो, उन्हें शहर की आदत नहीं है, उनका मन कैसे लगेगा?' -बीच में ही शोभा बोल पड़ी। अम्मा कुछ नहीं बोली।
अच्छा बेटा, मैं जरा मंदिर जाकर आती हूँ।'- अम्मा बोली।
'पर अम्मा, नाश्ता कर लो, फिर चले जाना।'- समीर बोला।
'ठीक है बेटा।'-अम्मा बोली।

पाठ- १२

थोड़ी ही देर में नाश्ता कर के अम्मा मंदिर चली गयी। देखा तो सामने गुड्डू खड़ा था।
'कैसे हो गुड्डू बेटा?' - अम्मा ने पूछा।
'बस माँ जी, दुकान की सफाई कर रहा हूँ।'- गुड्डूने जवाब दिया।
तभी अम्मा ने साड़ी के पल्लू में बंधे ५ रुपए निकाल कर गुड्डू को दिए।
'ले बेटा, तेरे पैसे।'-अम्मा बोली।
'नहीं माँ जी, मैं आपको मना किया था मैं नहीं लूगाँ।'- गुड्डू बोला।
'बेटा, माँ जी बोलता है तो मना मत कर।'-अम्मा बोली।
गुड्डू ने पैसे ले लिए।
'अच्छा बेटा मैं कान्हा के दर्शन करके आती हूँ फिर बातें करेंगें।'-अम्मा बोली।
फिर उठकर मंदिर के अंदर चली गयी। फिर कृष्ण भगवान की मूर्ति देखकर गोपाल की याद आ गई। अम्मा को अभी भी याद है जब गोपाल को पास ही गाँव में शुगर फैक्ट्री में नौकरी मिली थी।
'मैय्या, ओ मैय्या, तुम्हारे आशीर्वाद से आज मुझे नौकरी मिल ही गई।'- गोपाल अम्मा के पैर छूकर बोला।
'गोपाल, भगवान तेरे को खूब तरक्की दें।'- अम्मा बोली।
'मैय्या भगवान नहीं हमारे साहब तरक्की देगें।'- गोपाल हँसते हुए बोला।
'बुढ़ियसा से मजाक करता है।'- अम्मा ने गोपाल का प्यार से कान पकड़कर बोला।
तभी अम्मा की आँखों में आँसू आ गए।
हे भगवान सदा मेरे गोपाल की रक्षा करना। - अम्मा बोली।
अम्मा मन-ही-मन सोचने लगी जब भी वह मंदिर में आती है वह केवल गोपाल के बारे में ही सोचती है, समीर के बारे में क्यों नहीं?यह सवाल उसके मन में आता-जाता

रहा। अम्मा बहुत देर तक वहीं खड़ी रही।
'माँ जी, प्रसाद लीजिए।'–तभी पंडितजी बोले।
अम्मा ने प्रसाद लिया और बाहर आकर बैठ गई। गुड्डू अपने काम में लगा था।
'आ गई माँ जी।'– गुड्डू ने पूछा।
'माँ जी, बाबूजी कहाँ हैं?' – गुड्डू ने पूछा।
'बाबू जी मतलब?' – अम्मा ने पूछा।
'मतलब विक्की भैय्या के दादाजी।'– गुड्डू बोला।
'वह तो इस अभागिन को कब के छोड़कर चले गए।'– अम्मा बोली।
गुड्डू को अम्मा से यह सवाल करना बहुत खल गया।
'अच्छा, माँ जी, आज आप बड़े सवेरे मंदिर आ गई?' – गुड्डू ने पूछा।
'बस बेटा, गाँव की याद आती है सो मंदिर चली आती हूँ, यहाँ आकर बड़ी शान्ति मिलती है।'– अम्मा बोली।
कुछ देर बातें करने के बाद अम्मा घर वापस आ गई। घर आई तो देखा शोभा तैयार होकर कहीं जा रही थी।'– बेटी कहाँ जा रही हो?– अम्मा ने पूछा।
'बस, आपने टोक दिया न, अब क्या होगा काम?अब पूछा है तो सुनिए, आज मेरी ताश की स्पर्धा है, सो क्लब जा रही हूँ।'– शोभा बोली।
'मैं तो बस यूँ ही पूछ रही थीं।'–अम्मा बोली।
'और हाँ, समीर टिफिन लेकर गए हैं, विक्की अपने दोस्त के घर पढ़ाई करने गया है सो वह वहीं खा लेगा, आपका खाना किचन में रखा है आप खा लेना।'–शोभा ने बताया।
अम्मा ने बस सिर हिला दिया।
'दरवाजा बंद कर लीजिए।'–शोभा कहकर बाहर चली गई।
अम्मा ने दरवाजा बंद कर मुँह हाथ धोए और माला जपने बैठ गई। अकेलापन अम्मा को खाए जा रहा था।
गाँव के घर से कितनी यादें जुड़ी हैं, वहाँ हरपल महसूस होता है, गाँव की मिट्टी से एक अलग ही खुशबू आती है और यहाँ तो सूनी-सूनी दीवारें–अम्मा के मन में विचार आ जा रहे थे।
तभी अम्मा को अपने स्वर्गवासी पति की याद आ गई, आज ही तो गुड्डू ने पूछा था उनके बारे में – उन्हें आज भी याद है वे दिन– 'शारदा, ओ शारदा।' उन्होंने आवाज लगाई।
'मैं रसोई में हूँ जी, तवे पर रोटी डाली रखी है, जल जाएगी।'– अम्मा बोली।
'अच्छा रुको मैं ही आता हूँ।'– कहते हुए समीर के पिता अंदर आ गए।
'देखो मैं समीर के लिए क्या लाया हूँ?' – वे अम्मा से बोले।
'क्या है?' –अम्मा ने पूछा।
घड़ी।'– समीर के बाबूजी बोले।
'अभी तो वह छठी क्लास में ही है और घड़ी?' – अम्मा ने पूछा।
'अरे गाँव के मुखिया का लड़का है नरेन्द्र जो समीर के साथ पढ़ता है, उसके पास भी तो घड़ी है, समीर बता रहा था सो मुझे लगा उसे भी घड़ी चाहिए।'–वे बोले।
'और गोपाल के लिए।'– अम्मा ने पूछा।
'उसके लिए भी लाया हूँ।'– उन्होंने कहा।
'आपका प्यार तो बसकृ– अम्मा बोली।
'जरा पैसे जमा करो, सारे पैसे बस इन्हीं खर्चों में न लुटा दो।'–अम्मा बोली।
'अरे जमा किसके लिए करना है?देखना अपना समीर एक दिन बहुत बड़ा अफसर बनेगा, हमें बंगले में रखेगा, गाड़ी में घुमाएगा।'– समीर के पिताजी बड़े गर्व से बोले।
गोपाल पीछे खड़ा सब सुन रहा था।
'बाबूजी, मैय्या की साड़ी फट गई है, एक नई साड़ी ला दो ना।'– वह बोला।
'अरे बेटा, तुम दोनों बड़े होकर अपनी मैय्या के लिए ढेर सारी बनारसी साड़ियाँ खरीद देना।'– कहकर वे बाहर चले गए।
'मैय्या, देखना मैं सच में तेरे लिए ढेर सारी बनारसी साड़िया खरीदूँगा।'– गोपाल बोला।
'देख तो गोपाल, तेरे बाबूजी तुझे घड़ी ही देना भूल गए।'– अम्मा बोली।
'समीर के बाबूजी, सुनते हो।'– अम्मा ने आवाज लगाई।
'अच्छा जी, जैसे मैंनें आवाज लगाई, वैसे ही तुम भी आवाज लगा रही हो?' – हँसते हुए समीर के बाबूजी बोले।
'अरे नहीं जी, आपने गोपाल को घड़ी नहीं दी।'– अम्मा बोली।
बाबूजी ने तुरंत गोपाल को घड़ी दी। गोपाल ने घड़ी ली और अम्मा के हाथ में बाँध दी।
यह क्या बेटा, मुझे घड़ी नहीं देखने आती।'– अम्मा बोली।
'मैं बता दूगाँ जब भी देखना हो, देखिए बाबूजी मैय्या के हाथों में कितनी सुंदर दिख रही है घड़ी।'– गोपाल बोला।
तभी दरवाजे की घंटी से अम्मा चौंककर उठी। कितना प्यार करता है गोपाल मुझे बचपन से। अम्मा को बैचेनी सी होने लगी।
न जाने क्यों शरीर टूट रहा था। फिर भी अम्मा हिम्मत करके धीरे-धीरे दरवाजा खोलने गई। दरवाजा खोला तो देखा सामने विक्की खड़ा था।
'क्या हुआ दादी?' – विक्की ने पूछा।
'चेहरा ऐसा क्यों दिख रहा है?' – फिर विक्की ने पूछा।
'कुछ नहीं बेटा, बस जरा बेचैनी सी हो रही है।'– अम्मा धीरे से बोली।
खाना खाया?' -विक्की ने पूछा।
'नहीं बेटा, इच्छा नहीं हुई।'– अम्मा बोली।
'मम्मी कहाँ गई है।'– विक्की ने पूछा।
'कह रही थी क्लब जा रही हूँ।'– अम्मा ने बताया।
अचानक अम्मा को जोर से चक्कर आया। विक्की ने दौड़कर पकड़ लिया।
'कितना बुखार है आपको तो दादी।'– विक्की घबराकर बोला।
विक्की ने धीरे से अम्मा को सोफे पर लिटा दिया। फिर समीर को फोन लगाया।
'पापा, घर जल्दी आओ, दादी की तबियत ठीक नहीं है।'– विक्की बोला।
'शोभा कहाँ है?' – समीर ने पूछा।
'ओफ्फो पापा, मम्मी की नहीं दादी की तबियत खराब है, उन्हें चक्कर आ गया है।'– विक्की ने बोलकर फोन रख दिया।
'कैसे हैं मेरे माता-पिता?' – विक्की ने सोचा।
फिर विक्की ने अपने फैमिली डॉक्टर शर्मा को फोन किया। थोड़ी ही देर में डॉ. शर्मा आ गए। उन्होंने अम्मा का चेकअप किया।
'इन्होंने शायद कोई टेंशन लिया है। ब्लड-प्रेशर भी हाई है।'– उन्होंने विक्की को बताया।
'समीर कहाँ है?' – डॉ. शर्मा ने पूछा।
'पापा आते ही होंगे।'– विक्की ने बताया।
'मैं इन्हें इंजेक्शन दे देता हूँ, थोड़ी ही देर में आराम मिल जाएगा।'– वे बोले।
'जी।'– विक्की बोला।
इंजेक्शन देने के बाद डॉक्टर चले गए। विक्की वहीं अम्मा के पास बैठ गया। एक घण्टे बाद घंटी बजी। अम्मा की नींद लगी थी। विक्की ने दरवाजा खोला तो देखा सामने समीर खड़ा था।
'अच्छा, बड़ी जल्दी आ गए आप?' – विक्की बोला।
'शोभा सच कह रही थी बहुत जुबान चलने लगी है तुम्हारी।'– समीर ने कहा।
'अम्मा कैसी है अब?' – समीर ने आगे पूछा।
'शर्मा अंकल आए थे, इंजेक्शन देकर गए हैं।'– विक्की बोला।
समीर कमरे में आया तो देखा अम्मा सोई थी। वहीं आकर बैठ गया। जैसे ही बैठा अम्मा ने धीरे से आँखे खोली।
'समीर तू कब आया?' – अम्मा ने पूछा।
'बस, अभी-अभी।'– समीर ने जवाब दिया।
'अब कैसा लग रहा है अम्मा।?' – समीर ने पूछा।
'पता नहीं कैसी बेचैनी हो रही थी सुबह से?' – अम्मा बोली।
'सुबह ही बताना चाहिए था अम्मा।'– समीर बोला।
'चलो इस बहाने तू मेरे पास बैठा तो।'– अम्मा समीर से बोली।
ये कैसी बच्चों जैसी बात कर रही हो।'– समीर बोला।
तभी दरवाजे पर शोभा की आवाज आई। शोभा अंदर आते ही फोन की घंटी बजी।
शोभा ने फोन उठाया।
'डॉ. शर्मा, मुझे तो पता ही नहीं है, मैं तो अभी-अभी आई हूँ।'– शोभा बोली।
'अच्छा, सुबह आए थे आप?हाँ, मैं बाहर गई थी।'– शोभा फिर बोली।
'टेंशन, नहीं मालूम किस बात की, ऐसा कीजिए मैं थोड़ी ही देर में आपको फोन करती हूँ।'– शोभा ने कहते हुए फोन रख दिया।
तभी सामने से समीर आया।
'अरे आज आप बड़ी जल्दी आ गई।'–समीर ने शोभा से पूछा।
'हाँ, विक्की ने फोन किया था कि अम्मा की तबियत खराब है।'– समीर बोला।
'हद कर दी आपकी माँ ने अभी डॉ. शर्मा का फोन आया था पूछ रहे थे क्या टेंशन है उनको?न जाने क्या सोच रहे होंगे हमारे बारे में?'
'वह तो यही सोचेंगें कि हम उनका ख्याल नहीं रखते।'– शोभा बोले जा रही थी।
'धीरे बोलो, शोभा।'– समीर बोला।
'यह क्या हमेशा धीरे-धीरे बोलो, धीरे-धीरे बोलो, जो सच है वो बोल रही हूँ। दो वक्त का खाना देते हैं पहनने को कपड़े, अच्छा खासा कमरा है और अब क्या चाहिए?' – शोभा बोली।
'मम्मा, एक तो दादी की तबियत पूछी नहीं ऊपर से वहाँ खड़े-खड़े लेक्चर दे रही हो।'– विक्की अंदर से आते हुए बोला।
'देखा आपने कैसी जुबान चलती है इसकी?वहीं संस्कार दे रही है आपकी माँ।'– शोभा बोली।
'मम्मा, और आपके संस्कार किसके हैं?– विक्की ने पूछा।
तभी समीर ने जोर का थप्पड़ विक्की के मुँह पर मारा।
विक्की कुछ बोला नहीं, गुस्से से अपने कमरे में चला गया।

पाठ–१३

'समीर, समीर।' –अम्मा की आवाज आई।
'जाओ, आपकी माँ आवाज दे रही है।'– शोभा बोली।

समीर कमरे की तरफ गया। पीछे से शोभा भी आ गई। समीर अम्मा के पास जाकर बैठ गया।
'बेटा, मुझे गाँव छोड आ। मुझे गोपाल की बहुत याद आ रही है।'- अम्मा बोली।
'हाँ सासू जी, हमारे बेटे के मन में नफरत के बीज तो बो ही दिए हैं, अब आपका क्या काम?- शोभा बोली।
'शोभा बेटी।'- अम्मा बोली।
'मुझे बेटी ना बोलिए, अपने बेटे से ज्यादा अनाथ के पास मन लगता है आपका।'- शोभा बोली, फिर समीर की तरफ देखकर बोली- 'देख लिया ना अपनी अम्मा का प्यार, कल ही छोड़ आओ इनको इनके गोपाल के पास।'- शोभा बोलकर कमरे से बाहर निकल गई।
रात तक अम्मा की तबियत सुधर गई। समीर बोला- अम्मा, मैं शनिवार को छोड़कर आऊगाँ तुम्हें, क्योंकि छुट्टी नहीं मिलेग, बस परसों ही तो शनिवार है।'
'बेटा मुझे माफ कर दें, मेरी वजह से सबको तकलीफ हुई।'- अम्मा समीर से बोली।
'अम्मा तुम भी बेवजह कुछ भी सोचती हो। अभी तो आई हो और अभी जाने की बात कर रही हो।'- समीर बोला।
'बस बेटा कोई और बात नहीं मुझे गोपाल की फिकर है।'- अम्मा बोली।
'सच कहती है शोभा, तुम्हे मेरी नहीं गोपाल की ज्यादा फिकर है।'- समीर बोला।
'बेटा क्या, तू भी शोभा की तरह।'- अम्मा बोली।
'अच्छा अम्मा छोड़ों और अपनी तबियत का ख्याल रखो।'- समीर प्यार से बोला।
'समीर शायद शोभा बेटी मुझसे नाराज हो गई है।'- अम्मा बोली।
'नहीं अम्मा, शोभा को आप गलत समझ रही हो, इतने सालों से अकेली रही है इसलिए जरा जिद्दी हो गई है, खैर छोड़ों अब आराम करो।'- कहकर समीर बाहर आ गया।
थोड़ी ही देर में विक्की अम्मा के पास आया।
'दादी, ओ दादी।'-विक्की बोला।
अम्मा शायद रो रही थी, विक्की समझ गया।
'दादी, आप सच में गाँव चली जाओ यहाँ आपको अम्मा चैन से नहीं रहने देगी। देखना दादी, मैं एक-दो साल में कुछ कर लूंगा तो आपको अपने साथ ले आऊगाँ।'- विक्की बोला।
विक्की की बात सुन अम्मा भावुक हो गई और उसे गले से लगा लिया।
'क्यों इस बुढ़िया को इतना प्यार करते हो बेटा?- अम्मा बोली।
अम्मा को अचानक समीर के बाबूजी की याद आ गई।
'तू जल्दी से अच्छे से पढ़-लिख ले और अपने पिताजी जैसा बन जा।'- अम्मा बोली।
'नहीं दादी, पढूँगा तो मगर पापा की तरह नहीं बनूंगा।'-विक्की बोला।
'नहीं बेटा, ऐसा नहीं कहते वे तेरे पापा हैं उनसे बड़ा कोई नहीं है।'- अम्मा विक्की को समझाते हुए बोली।
काफी देर दोनों बातें करते रहें।
'अच्छा दादी, अब आराम करो।'- कहकर विक्की चला गया।
'देखा आपने समीर के बाबूजी, हमारा पोता बिल्कुल आप पर गया है।'- अम्मा मन-ही-मन बोली।'- अब आप मेरी चिंता नहीं करना, गोपाल के साथ-साथ अपना पोता भी है। मेरा ख्याल रखने वाला।'- अम्मा मन-ही-मन अपने पति से बातें किए जा रही थी।
'फिर विक्की ने भी कहा है मुझसे कि वह मुझे लेने आएगा।'- अचानक अम्मा चुप हो गई।
'नहीं, समीर भी तो ऐसे ही बोला था- पर मेरा गोपाल है, मेरा कन्हैयाकृ।'- बड़ी देर अपने पति से बातें करते-करते, न जाने कब अम्मा की नींद लग गई।
अगले दिन अम्मा अपने रोज के समय पर उठ गई। किचन से आवाज आ रही थी सोचा शायद शोभा उठ गई हो। हाथ-मुँह धोकर जब अम्मा ने किचन से झाँका तो देखा विक्की गैस के पास खड़ा था।
अरे बेटा, इतनी सुबह उठकर क्या कर रहे हो?- अम्मा ने पूछा।
अपनी दादी के लिए चाय बना रहा हूँ।'- विक्की बोला।
'बेटा लगता है तेरे से मेरा कई जन्मों का नाता रहा है।'- अम्मा बोली।
विक्की चाय बना रहा था और अम्मा विक्की को प्यार भरी नजरों से देख रही थी, बिल्कुल अपने दादा की तरह था, वही रंग-ढंग, वही कद-काठी - अम्मा मन-ही-मन सोच रही थी।
'चलो दादी, अब बैठकर, मेरे हाथ की चाय पियो।'- विक्की बोला। अम्मा और विक्की बाहर आकर बैठ गए।
'दादी, कैसी बनी है चाय?'- विक्की ने पूछा।
'बहुत अच्छी।'- अम्मा ने कहा।
'अच्छा बेटा, मैं कल गाँव चली जाऊँगीं। तू आएगा न अपनी दादी से मिलने।'- अम्मा ने पूछा।
'हाँ दादी क्यों नहीं, अब कोई दूध पीता बच्चा थोड़े ही हूँ, अब तो बड़ा हो गया हूँ फिर मैने बताया न कि १-२ साल में कुछ बनकर आपको अपने साथ ही ले आऊँगा।'- विक्की बोला।
अम्मा अपने पोते का चेहरा ममता भरी निगाहों से निहारती रही।
'अच्छा दादी गाँव में और कौन-कौन है?' - विक्की ने पूछा।
'तुम्हारे गोपाल काका और मैं।'- अम्मा ने बताया।
'उस दिन मम्मा जिनका नाम ले रही थीं वहीं ना?' - विक्की बोला।
'क्या तुम्हें मालूम नहीं?' - अम्मा ने पूछा।
'मैनें मम्मा से पूछा तो वह बोली कि ऐसे ही गाँव का एक आदमी है जिसे आपका ख्याल रखने के लिए रखा है।'- विक्की बोला।
अम्मा को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। फिर अम्मा ने विक्की को गोपाल के बारे में सब बताया।
'मेरा कन्हैया है वह।'- अम्मा बोली।
'सच में दादी, गोपाल अंकल कितने अच्छे हैं और मेरी दादी तो पूछो ही मत, पापा कितने लकी हैं, जो आप उनकी माँ हैं।'- विक्की बोला।
'अच्छा दादी मैं चलता हूँ अब, आज मुझे जल्दी जाना है, क्लास है।'- कहकर विक्की चला गया।
'अम्मा भी नहा-धोकर पाठ करने बैठ गई। इतने में समीर आया। अम्मा कल सुबह चलेंगे गाँव, तुम तैयारी कर लेना, चलो अब नाश्ता कर लो।'- समीर बोला।
अम्मा उठकर बाहर आ गई। टेबल पर विक्की और समीर बैठे थे। विक्की के पास की कुर्सी पर अम्मा बैठ गई। शोभा पराठे सामने रखकर चली गई पर कुछ बोली नहीं। बाद में बाहर आई और समीर से बोली।
'सुनो, आज मैं दिन-भर के लिए बाहर जा रही हूँ हमारा गेट-टूगेदर है। इसलिए आप जल्दी आ जाना।'- कहकर शोभा कमरे में चली गई।
समीर नाश्ता करके ऑफिस चला गया। तभी विक्की आया और अम्मा को एक चाबी देकर बोली, दादी, एक चाबी आप रखो और एक मैं रखता हूँ।'
'हाँ, बेटा मुझे भी मंदिर जाना था।'- अम्मा बोली।
'दादी, आज बहुत खुश दिख रही हो?' - विक्की ने पूछा।
'हाँ कल अपने गोपाल को कितने दिनों के बाद देखूगीं।'- अम्मा बोली।
तभी शोभा पीछे से बाहर आई और बोली- और हाँ, वहाँ जाकर कहना कि बहू बेटे ने निकाल दिया।'
'मम्मा, ये आप किस तरह से बात करती हो दादी से?' - विक्की बोला।
'तुम जरा नीची आवाज में बात करो, न जाने चार दिन में क्या जादू कर दिया है इन्होंने तुम पर?' - शोभा बोली।
'शोभा बेटी, विक्की पर क्यों गुस्सा होती है?मैं तो अपने गाँव में ही खुश थी, मुझे तो समीर लेने गया था सो आ गई, सोचा कुछ दिन बहू-बेटे व पोते के पास रहूँ।'- अम्मा बुझे स्वर में बोली।
'हाँ यही तो गलती हो गई इनसे।'- शोभा गुस्से में बोलकर पैर पटकते हुए बाहर चली गई।
अम्मा की आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी थी।
'दादी देखना, एक दिन में बताऊँगा मम्मी पापा को कि बेटे का दर्द क्या होता है?' - विक्की बोला।
'नहीं बेटा, कभी नहीं, ऐसे मत बोल, कभी भी अपने माता-पिता को दुख मत देना, औलाद का दर्द कलेजा फाड़ कर रख देता है।' अम्मा आँसू पोंछते हुए बोली।
विक्की विषय बदलते हुए बोला- अच्छा दादी, आपको मंदिर चलना था, चलिए मैं ले चलता हूँ।'
'पर बेटा, तुझे तो क्लास जाना था।'- अम्मा बोली।
'दादी कल तो चली ही जाओगी- आज सभी काम को छुट्टी।'- विक्की बोला।
अम्मा का चेहरा खिल उठा।
'सच में चल, मैं चलती हूँ।'- अम्मा बोली।
'पहले मम्मा की दी हुई साड़ी बदलकर आप अपनी साड़ी पहनिए।'- विक्की बोला।
अम्मा ने तुरंत साड़ी बदली और बाहर आ गई।
विक्की आज निश्चित था कि शोभा रात के ग्यारह बजे से पहले नहीं आएगी।
थोड़ी ही देर में अम्मा विक्की के साथ मंदिर में पहुँच गई।
'नमस्ते, माँ जी।'- गुड्डू बोला।
'खुश रहो बेटा।'- अम्मा बोली।
'अच्छा दादी तो आपकी गुड्डू से पहचान हो गई है।'- विक्की मुस्कुराते हुए बोला।
'विक्की भैय्या, माँ जी मंदिर के चबूतरे पर अकेली बैठी रहती थी तो मैंने पहचान कर ली।'- गुड्डू बोला।
विक्की मुस्कुरा दिया।
'चल बेटा जरा दर्शन करके आते हैं।'- अम्मा बोली।
'जी माँ जी।'- गुड्डू बोला।
अम्मा विक्की के साथ मंदिर के अंदर आ गई।
'बेटे देख तेरे गोपाल काका बिल्कुल इनकी तरह है।'- अम्मा बोली।
विक्की एकटक अम्मा का चेहरा देख रहा था। कितनी ममता थी अम्मा के दिल में, जो सभी से इतना प्यार करती है वे अपनी ही औलाद को कितना प्यार करती होंगी?कितने बदकिस्मत हैं पापा, जो ऐसी माँ से दूर रहते हैं। - विक्की मन ही मन सोच रहा था।

पाठ-१४

काफी देर अम्मा भगवान को खड़ी देखती रही, जब पंडितजी ने हमेशा की तरह आवाज दी, तब अम्मा का ध्यान हटा।
'माँ जी, प्रसाद लीजए।'- वो बोले।
अच्छा पंडितजी मैं कल जा रही हूँ।'- अम्मा बोली।
'माँजी, फिर कब आना होगा?' - उन्होंने पूछा।

'जब इनका बुलावा होगा।'- अम्मा बोली।
बड़ा मन लगाये रखा आपके कान्हें ने, अब मैं मेरे कान्हा के पास चली।'- अम्मा बोली। पंडित जी अम्मा की बात समझ न पाए।
अच्छा माँ जी प्रणाम।' पंडित जी बोले।
'प्रणाम पंडितजी।' - अम्मा बोली।
'बेटा चल अब बाहर बैठते हैं।'- अम्मा विक्की से बोली।
हमेशा की तरह अम्मा बाहर चबूतरे पर आकर बैठ गई। अम्मा विक्की को गाँव की पुरानी बातें बतानी लगी।
अम्मा ने बताया समीर के बाबूजी की बस एक इच्छा थी कि समीर गाँव में सबसे ज्यादा पढ़े और बड़ा अफसर बने, अम्मा ने बताया कि किन परिस्थितियों में उन्होंने समीर को पढ़ाया।
रात-रात भर जागते थे तेरे दादाजी-अम्मा बोली- 'यही सोचकर कि अगली फीस व खर्च कहाँ से आएगा। शहर की तो जरूरतें भी ज्यादा होती हैं।'- अम्मा बोले जा रही थी और विक्की सुनते जा रहा था।
तभी गुड्डू नारियल पानी लेकर आ गया।
'माँ जी लीजिए नारियल पानी।'- गुड्डू बोला।
अम्मा ने नारियल पानी लिया और बोली- गुड्डू बेटा, मैं कल गाँव वापस जा रही हूँ।'
'क्यों माँ जी इतनी जल्दी?' - गुड्डू ने पूछा।
'वह क्या है मेरा एक और बेटा है जो गाँव में अकेला है।'- अम्मा बोली।
'और अब उसकी फिकर सताने लगी है।'- अम्मा आगे बोली।
'हाँ माँ जी, माँ का प्यार कैसा होता है वो आपको मिलकर ही समझा है।'- गुड्डू बोला।
तभी विक्की ने दस रूपये निकालकर गुड्डू को दिए।
'नहीं विक्की भैय्या, मैं नहीं लूगाँ पैसे।'- गुड्डू बोला।
'रख लो गुड्डू।'- विक्की ने कहा।
भरी आँखों से गुड्डू बोला- 'विक्की भैय्या मैं तो एक अनाथ हूँ, आज तक माँ के प्यार को तरसता रहा, माँ जी से मिलकर पता चला कि माँ का प्यार क्या होता है?अब आप ही बोलिए माँ से पैसे कैसे ले लूँ?
विक्की कुछ नहीं बोला, बस मन में सोचा, - 'कितना गरीब है और उम्र में भी कितना छोटा और वहाँ मेरे माता-पिता।
तभी गुड्डू अम्मा से बोला- 'माँ जी, एक विनती है कभी भी कोई जरूरत पड़े तो इस गरीब को जरूर याद कीजिएगा।'
गुड्डू की बात सुनकर अम्मा और विक्की दोनो की आँखें भर आई।
अम्मा ने गुड्डू के सिर पर हाथ फेरा और कहा- 'अच्छा बेटा चलती हूँ, भगवान तुमको बहुत सारी खुशियाँ दे।'
अम्मा बोल कर उठ गई। गुड्डू ने अम्मा के पैर पड़े और भरी आँखों से विदाई ली।
'चलो दादी आज मैं आपको पूरा शहर दिखाता हूँ।'- विक्की बोला।
एक ऑटो वाले को विक्की ने रोका और दोनो उसमें बैठ गए।
विक्की ने अम्मा को शहर में बहुत कुछ दिखाया, फिर एक आइसक्रीम की दुकान में रुक गए।
'अब ये क्या।'- अम्मा ने पूछा।
'दादी चलो आज आपको मैं आइसक्रीम खिलाता हूँ।'- विक्की बोला।
विक्की ने दो आइसक्रीम ली, एक अम्मा को दी और एक खुद खाने लगा।
'बड़ी ठंडी है, मैं नहीं खाऊँगी।'- अम्मा बोली।
'नहीं दादी, धीरे-धीरे खाओ।'- विक्की ने जिद की।
दोनों ने आइसक्रीम खाई, फिर विक्की अम्मा को लेकर एक बड़ी सी दुकान पर आ गया।
यह कहाँ ले आया बेटा?' - अम्मा ने पूछा।
'दादी मैं आपको कुछ देना चाहता हूँ।'- विक्की बोला।
'पूरी दुकान सुंदर साड़ियों से सजी थी।
'दादी बैठिए।'- विक्की बोला।
'हाँ जी बोलिए, क्या दिखाऊँ माँजी?' - दुकानदार बोला।
'कोई भी हल्के रंग की साड़ी दिखाइए, इनकी उम्र के हिसाब से।'- विक्की बोला।
'अरे बेटा, मैं क्या करूँगी साड़ी का, '- अम्मा बोली।
'बस दादी, अब आगे कुछ मत बोलिए, मेरी इच्छा है कि मैं अपनी प्यारी सी दादी के लिए साड़ी लूँ। क्या आप मेरी यह छोटी-सी इच्छा पूरी नहीं करोगी?वैसे भी मुझे उस दिन की बात खाए जा रही है जब माँ ने आपको पुरानी साड़ी दी थी।' - विक्की धीरे से बोला।
तभी दुकानदार ने एक क्रीम-रंग की साड़ी दिखाई। विक्की को एक ही नजर में साड़ी पसंद आ गई। अम्मा की आँखे भर आई। इतनी उम्र हो गई उनकी समीर ने उनके लिए कुछ नहीं खरीदा और मेरा पोताकृ अम्मा ने विक्की को मन ही मन आशीर्वाद दिया।
शाम तक दोनो घूमकर घर वापस आ गए। घर में कोई नहीं था, विक्की ने राहत की साँस ली। अम्मा ने आते ही बैग में साड़ी रख दी, सोचा शोभा ने देखा तो फिर झगड़ा होगा। हाथ मुँह धोकर दोनों बाहर के कमरे में आकर बैठ गए। काफी देर दोनों बातें करते रहे।

पाठ-१५

'अब तो चाय पीने का मन हो रहा है बेटा।'- अम्मा बोली।
'अच्छा दादी, मैं आपके लिए चाय बनाता हूँ।'- कहकर विक्की किचन में गया।
चाय बनाकर लाया तो देखा अम्मा लेटी हुई थी।
'दादी थक गई क्या?' - विक्की ने पूछा।
'नहीं बेटा, आज तो माँ बहुत खुश हूँ। मेरा पोता मुझे शहर जो दिखा कर लाया है।'- अम्मा बोली।
'दादी, आपसे एक बात करनी है, अभी मम्मी और पापा भी नहीं है।'- विक्की बोला।
'बोल, बेटा, क्या बात है?' - अम्मा ने पूछा।
'दादी मेरे साथ एक लड़की पढ़ती है पूजा।'- विक्की शर्माते हुए बोला।
'हूँ।'- अम्मा बोली।
'तो क्या है दादी, हम एक-दूसरे को पसंद करते हैं।'- विक्की बोला।
अच्छा तो ये बात है, तुमने समीर और शोभा को बताया?' - अम्मा ने पूछा।
'नहीं, जब मेरी नौकरी लगेगी तब बताऊगाँ।'- विक्की बोला।
अच्छा दादी, आपको मिलाऊँ क्या उससे?' - विक्की ने झट से पूछा।
'कहाँ रहती है?' - अम्मा ने पूछा।
'बस दादी, यहीं अपने घर के पास, मैं देखता हूँ घर पर है क्या?' - विक्की बोला।
विक्की ने फोन लगाकर बात की।
'दादी, पूजा ५ मिनट में आ रही है।'- विक्की बोला।
विक्की के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। थोड़ी ही देर में घंटी बजी।
विक्की दरवाजा खोलने गया, देखा तो सामने पूजा खड़ी थी।
'पूजा आओ, मैं तुम्हें अपनी दादी से मिलाता हूँ।'- विक्की बोला।
तभी विक्की एक सुंदर सी लड़की को लेकर अम्मा के पास आया।
'दादी यह पूजा है।'- विक्की बोला।
पूजा ने अम्मा के पैर पड़े।
खुश रहो बिटिया, कितनी प्यारी बिटिया है।'- अम्मा बोली।
'भगवान करे तुम दोनों की मन की इच्छा पूरी हो।'- अम्मा की बात सुनकर पूजा शरमा गई। तीनों ने काफी देर तक बातें की। फिर पूजा चली गई। अम्मा अपने पोते के लिए बहुत खुश थी। पूजा के जाने के बाद विक्की और अम्मा बैठकर पूजा के बारे में बातें करने लगे।
'बताओं न दादी, आपको पूजा अच्छी लगी।'- विक्की ने अम्मा से पूछा।
'हाँ बेटा, सच में बहुत अच्छी है।'- अम्मा बोली।
कुछ देर दोनों बातें करते रहे। तभी समीर आ गया।
और अम्मा आज क्या किया दिन भर?' - समीर ने पूछा।
'बातें की बस हमनेकृ।' विक्की बीच में ही बोल पड़ा। समीर मुस्कुरा दिया।
'जा बेटा, समीर के लिए चाय बना लो।'- अम्मा विक्की से बोली।
विक्की किचन में चला गया।
'समीर, शायद मैंने शोभा को कुछ तकलीफ दी है।'- अम्मा बोली।
ऐसा क्यों लगा तुम्हें?' - समीर ने पूछा।
'वह हमेशा ही मुझसे नाराज रहती है, मेरा क्या है बेटा, कुछ दिन की जिंदगी बची है, तुम सभी को तो बहुत जीवन देखना है, मुझसे अगर कोई गलती हुई तो माफ करना।'- अम्मा बोली।
अम्मा तुम भी न, बात को कहीं-का-कहीं ले जा रही हो।'- समीर बोला।
तभी विक्की चाय लेकर आ गया।
'विक्की आज शोभा लेट हो जाएगी, खाने का क्या करें।'- समीर बोला।
'पापा मैं पैक करवा कर ले आता हूँ।'- विक्की ने जवाब दिया।
'समीर बेटा, याद है तुझे मेरे हाथों की खिचड़ी बहुत पंसद थी, बनाऊँ क्या आज?' - अम्मा ने पूछा।
अम्मा बचपन में थी, अब मैं बच्चा नहीं रहा।'- समीर बोला।
'दादी मैं खाऊगाँ आपके हाथों की खिचड़ी, मैं तो अभी आपके सामने बहुत छोटा हूँ।'- विक्की बोला।
'चलिए, मैं आपकी मदद करता हूँ।'- विक्की अम्मा से बोला।
अम्मा और विक्की किचन में चले गए। उधर समीर टीवी देखने लगा।
'अच्छा बेटा, पहले मूंग की दाल और चावल निकाल कर दें।'- अम्मा ने विक्की से कहा।
विक्की ने लेवल पढ़कर दोनों डिब्बे निकाले। सभी मसाले जो-जो अम्मा बोल रही थी विक्की निकाल कर देता जा रहा था। आधे घंटे में ही पूरे घर में खिचडी की संदुर महक भर गई।
'वाह दादी! मेरे मुँह में पानी आ रहा है।'- विक्की बोला।
'बेटा जब तेरा पापा छोटा था, आंगन में खेलता था गोपाल के साथ, जैसे ही खिचड़ी पकती तो उसे पता चल जाता और वह नाक में दम कर देता था जब तक मैं उसके सामने खिचड़ी नहीं परोसती। जब इसकी तबियत खराब होती तो चार-चार दिन खिचड़ी पर रहता था।'- अम्मा ने विक्की को बताया।

'पापा चलिए, खिचड़ी तैयार है।'- विक्की बोला।
थोड़ी ही देर में सभी टेबल पर आ गए।
'विक्की बेटा, नींबू का आचार भी ले आ, और वहाँ, पापड़ होगें तो निकाल दे, मैं तल देती हूँ।'- अम्मा बोली।
'नहीं अम्मा, मैं तला नहीं खाता, शोभा ने मना किया है।'- समीर बोला।
अरे बेटा, सब कुछ खाना चाहिए, बस जरा संभलकर।'- अम्मा बोली।
'नहीं अम्मा।'- समीर बोला।
'दादी मैं तो खाऊगाँ, देखो मैं तो तल कर भी ले आया।'- कहकर विक्की अम्मा के पास बैठ गया।
अम्मा ने समीर की थाली में खिचड़ी परोसी, थोड़ा-सा आचार और एक चम्मच घी।
'अरे, अम्मा, पूछ तो लिया करो, घी क्यों डाला खिचड़ी में?'- समीर जोर से बोला।
'पर बेटा, एक ही चम्मच तो डाला है, घी के बगैर खिचड़ी में क्या स्वाद?याद है बचपन में ६-७ चम्मच घी डलवाता था।'- अम्मा बोली।
अम्मा, बार-बार बचपन-बचपन क्या कहती रहती हो, अब में कोई दूध पीता बच्चा नहीं रहा।'- समीर बोला।
'दादी, आप मुझे परोसो जो कुछ परोसना है, वो क्या है मम्मा की परमिशन के बगैर पापा को कुछ करने की आदत नहीं है।'- विक्की बोला।
'विक्की, कम बोलो, बड़े हो गए हो तो मुँह चलाना मत सीखो।'- समीर ने गुस्से से कहा।
'पापा यह सब आपसे ही सीख रहा है।'- विक्की बोला।
समीर गुस्से से उठकर खड़ा हो गया है।
'समीर, यूँ खाना छोड़के नहीं जाते।'- अम्मा बोली।
'समीर जवान बेटे पर गुस्सा नहीं होते।'- अम्मा आगे बोली।
और जवान बेटा चाहे जो कुछ भी बोले।'- समीर बोला।
'समीर बैठ जा बेटा, शान्ति से बैठकर खिचड़ी खा ले, कल तो मैं चली जाऊगीं और फिर कितने सालों बाद मैंने तेरे लिए खिचड़ी बनाई है।'- अम्मा समीर को समझाते हुए बोली। समीर चुपचाप बैठ गया।
'और विक्की बेटा ऐसे अपने पिताजी से बात नहीं करते।'- अम्मा विक्की से बोली।
'दादी, सॉरी।'- विक्की बोला।
'सभी खाना खाने बैठ गए।
'दादी, ऐसी खिचड़ी मैने आज तक नहीं खाई।'- विक्की बोला।
'बस, बेटा, तुझे पंसद आई और क्या चाहिए।'- अम्मा बोली।
'पर दादी आप तो कुछ खा नहीं रहीं।' - विक्की ने अम्मा को खिचड़ी परोसी।
समीर चुपचाप बैठा खिचड़ी खा रहा था।
समीर बेटा, तू थोड़ी खिचड़ी और ले ना।- अम्मा बोली।
'नहीं, बस अम्मा पेट भर गया।'- समीर बोला।
विक्की और अम्मा काफी देर बातें करते रहे। खाना खत्म होते ही विक्की ने अम्मा के साथ टेबल साफ की।
अम्मा और विक्की कमरे में जाकर बैठ गए। समीर वहीं टीवी देखने बैठ गया।
'विक्की बेटा दस बज गया, शोभा नहीं आई।'- अम्मा ने पूछा।
'दादी वे ग्यारह बजे तक आएंगी।'- विक्की बोला।
'इतनी रात को अकेली कैसी आएगी?' - अम्मा ने पूछा।
'नहीं दादी, अकेली नहीं, या तो कोई सहेली छोड़ जाएगी या फोन आएगा तब पापा जाकर ले आएंगे।'- विक्की बोला।
'देख बेटा, अपने पिता से जुबान नहीं लड़ाते।'- अम्मा ने विक्की से कहा।
'पर दादी।'- विक्की बोला।
'नहीं बेटा, तू वैसे भी कितना समझदार है, १-२ साल में नौकरी लगेगी, फिर तो तुझे ही संभालना है अपने माता-पिता को।'- अम्मा बोली।
'वैसे ही न जैसे उन्होंने आपको संभाला है।'- विक्की बोला।
'मेरा क्या बेटा, मेरी तो जिन्दगी कट गई, अब कुछ ही दिन बाकी हैं।'- अम्मा बोली।
'नहीं दादी, अभी तो आपको बहुत जीना है, अपने पोते की शादी देखनी है।'- विक्की मुस्कुराते हुए बोला।
'दादी मैं परीक्षा खत्म होते ही गाँव आऊँगा, मुझे गोपाल अंकल से भी मिलना है।'- विक्की बोला।
अम्मा का चेहरा खुशी से खिल उठा- 'सच बेटा, तू आयेगा ना। तू देखना तेरा गोपाल चाचा तुम्हें कैसे सिर आँखों पर बिठाकर रखेगा।'- दादी बोली।
बहुत देर तक दोनों बातें करते रहे।
'अच्छा दादी, अब आप आराम कीजिए, मैं भी जाकर पढ़ाई करता हूँ।'- विक्की कहकर चला गया।

शेष अगले अंक में.....

आवश्यक घोषणा

'ओपन डोर' प्रकाशन की प्रस्तुति शोध आलेखों की पुस्तक

'महिला कथाकारों का रचना संसार'

(आईएसबीएन सहित)

के प्रकाशन की योजना है। जिसमें शोधार्थी/प्रोफेसर आदि से लेख आमंत्रित किए जा रहे हैं।
चयनितों को प्रमाणपत्र तथा प्रकाशित शोध पत्र (ISBN- पुस्तक की 2 प्रतियां) प्रदान की जाएंगी।

पंजीयन शुल्क – 1000 रुपए अंतिम तिथि – 30 अगस्त, 2022

आवेदन के लिये निम्नांकित प्रारूप में अपनी जानकारी भरकर तथा 'महिला कथाकारों द्वारा रचित उनके कथा साहित्य' सम्बन्धी विषय पर शोधपत्र यूजीसी मानक के अनुरूप संदर्भ के साथ 2000–2500 शब्दों में तथा सारांश सहित कृतिदेव 10 फॉन्ट में वर्ड फाइल में टाईप कराकर ईमेल opendoornbd@gmail पर प्रेषित करें।

पूरा नाम हिंदी में – पूरा नाम अंग्रेजी में – पद– संस्था का पूरा नाम– ईमेल– मोबाईल नंबर–
डाक का पूरा पता पिनकोड सहित – शुल्क जमा का विवरण व दिनांक–

घोषणा–पत्र

मैं नाम..... पता..... 'ओपन डोर प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''महिला कथाकारों का रचना संसार'' (संपादक– डॉ. ओ. पी. सिंह एवं अमन कुमार) को प्रेषित मेरे द्वारा लिखित आलेख मेरे निजी ज्ञान के अनुसार सही एवं मौलिक है। मैंने प्रस्तुत आलेख में यूजीसी नियमों का पालन किया है।
अतः मेरे द्वारा लिखित लेख में प्रकाशित सभी विचारों के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी हूँ। संपादक को मेरे द्वारा प्रेषित लेख के संपादन का पूर्ण अधिकार है।

नाम एवं हस्ताक्षर

सम्पर्क– ईमेल– opendoornbd@gmail.com मोबाइल–9897742814 (W)

पंजीयन शुल्क जमा हेतु बैंक विवरण

Open Door Account NO- 368602000000245, IFSC- IOBA0003686, Indian overseas Bank, Najibabad
गूगल पे, भीम यूपीआई से भुगतान के लिए मोबा. नं. 9897742814 (अमन कुमार) का उपयोग पर्ची व्हाट्सएप पर प्रेषित करें।

नोट – सभी चयनित विद्वतजनों को यूजीसी के मानक अनुरूप शोध आलेख भेजना आवश्यक है। प्रमाण–पत्र व प्रकाशित पुस्तक रजिस्टर्ड डाक द्वारा आपके पते पर प्रेषित कर दिए जायेंगे।

ओपन डोर राष्ट्रभक्ति गीत पढ़ें और निर्णय करें

कविगण अपनी रचनाओं को शामिल न करें, जबकि पाठक को जो भी रचनाएं अच्छी लगें उनके बारे में तीन रचनाएं एवं उनके लेखक का नाम प्राथमिकता के क्रम में नीचे लिखें-

७ जुलाई, २०२२ अंक में प्रकाशित

१. प्रतियोगिता में शामिल राष्ट्रभक्ति गीत में से कौन-सा गीत आपको अच्छा लगा? किन्हीं तीन राष्ट्रभक्ति गीत के शीर्षक एवं कवि का नाम लिखें-

	राष्ट्रभक्ति गीत का शीर्षक	कवि का नाम
१.	.....	.....
२.	.....	.....
३.	.....	.....

हस्ताक्षर निर्णयकर्ता

नोट- सभी कवियों को यह क्रम बनाकर भेजना अनिवार्य है। यदि कोई कवि अपना निर्णय नहीं देता है तो उसे 'ओपन डोर' साप्ताहिक की 'राष्ट्रभक्ति गीत प्रतियोगिता' से बाहर मान लिया जाएगा। बराबरी की स्थिति में संपादक मंडल का निर्णय सभी को मानना होगा। आप अपने निर्णय प्रारूप का फोटो खींचकर मोबा. 9897742814 पर वाट्स एप करें।

निर्णयकर्ता का नाम व पता

प्रथम विजेता को ११००/-, प्रमाण-पत्र द्वितीय विजेता को ५०१/-, प्रमाण-पत्र तृतीय विजेता को २५१/-, प्रमाण-पत्र

सभी प्रतिभागियों को प्रतिभाग प्रमाण-पत्र

'ओपन डोर' साप्ताहिक के नियमित ग्राहक बनें

Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703

खुले दिमाग के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

समयावधि	रुपए डाक खर्च सहित	पीडीएफ/प्रिंट अंक	सभी विशेषांक
वार्षिक	- १०००	४८/३८	४
द्विवार्षिक	- १६००	६६/७६	८
पंचवार्षिक	- ४८००	२४०/१६०	२०

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814

प्रकाशनाधीन

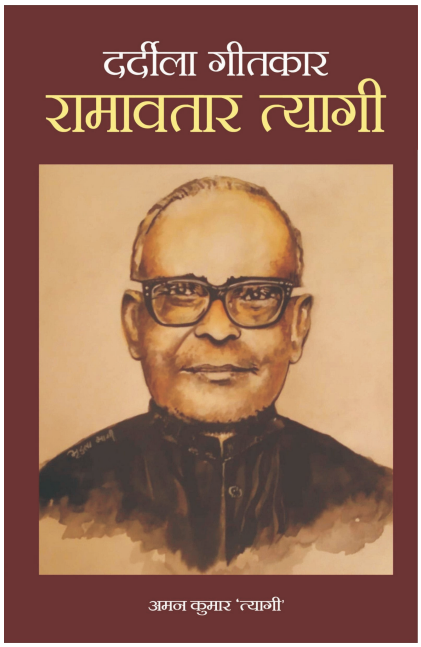

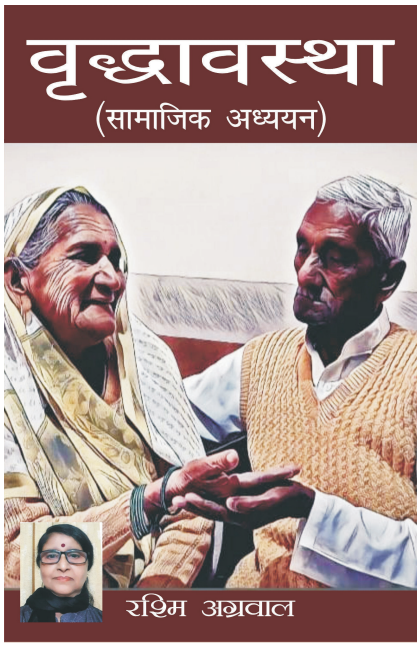

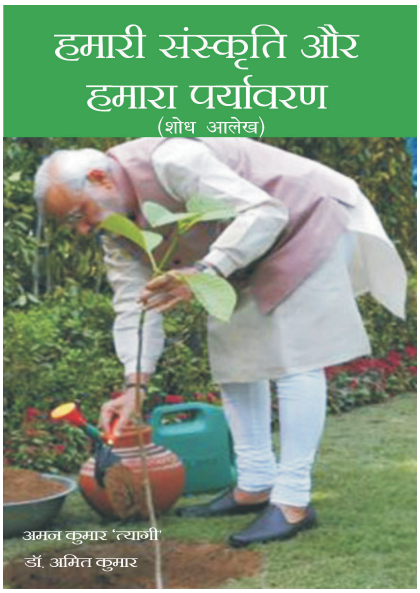

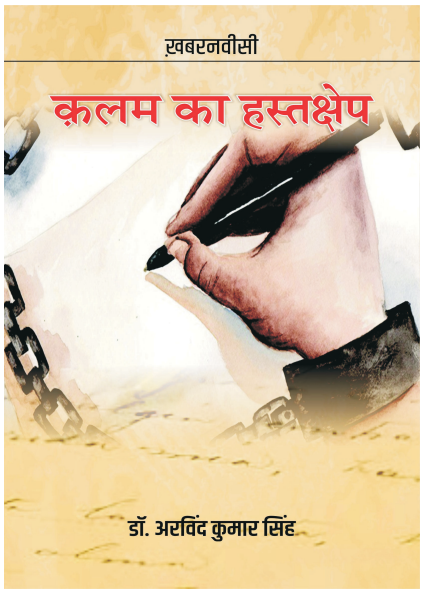

स्थापना 14 फरवरी, 2021 Title-Code-UPHIN49431/RNI-UPHIN/2021/79954/MSME-UDYAM-UP-17-0002703
रजिस्टर्ड 08 जुलाई, 2021

YouTube OPEN DOOR NEWS ओपन डोर Blog-opendoorweekly.blogspot.com

आपकी किताब आपके द्वार...

प्रकाशन
ओपन डोर
नजीबाबाद

समाचारपत्र भी
पुस्तकें भी

खुले दिमाग़ के खुले विचार
ओपन डोर
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार-पत्र

रजि. पता- ए/7, आदर्श नगर, तातारपुर लालू, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र संपादकीय कार्यालय- साईं एंक्लेव, निकट धनौरा देवता, नजीबाबाद-246763 बिजनौर, उप्र
Bank- INDIAN OVERSEAS BANK, Branch- NAJIBABAD AC- 368602000000245/ IFSC- IOBA0003686 PAN- AABAO7251R
Email- opendoornbd@gmail.com / Mob.- 9897742814